कृति	:	विशद भक्ति आराधना
कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	तृतीय-2017 प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी	:	आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी ऐलक श्री विदक्ष सागर जी महाराज क्षुल्लक श्री विसोमसागरजी महाराज क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी 9829076085 ब्र. आस्था दीदी 9660996425, ब्र. सपना दीदी 9829127533
संयोजन	:	ब्र. सोनू दीदी, ब्र. आरती दीदी,
प्राप्ति स्थल	:	1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, 9413336017 2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी, 9810570747 3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879 4. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन, दिल्ली मो. 09818115971, 09136248971
मूल्य	:	35/- रु. मात्र

कृताञ्जलि

भौतिकता की चकाचौध में मानव इस तरह उलझनों में उलझ गया है कि उसे धर्म और पूजन इत्यादि का समय ही नहीं है किंतु 24 मिनिट भी आत्मकल्याण हेतु निकाल लिया तो यह परम्परा से स्वर्ग और निर्वाण का सेतु है। निर्माण और निर्वाण दो शब्द हैं। मानव निर्माण करने के लिए दिन-रात मेहनत करके ही किसी चीज का निर्माण कर सकता है निर्माण की गई वस्तु कालांतर में नष्ट हो जायेगी किंतु निर्वाण कैसे प्राप्त हो इसी बात को लक्ष्य करके **ज्ञान वारिधि गुरुदेव विशद सागर जी महाराज** ने निर्वाण का सेतू पूजन पाठ को लक्ष्य करके सरल भाषा में नई-नई पूजन की रचना की है। नई सरल भाषा में की गई पूजन में भक्त का मन लगता है और समय ना हो तो छोटी पूजन करके आवश्यक कर्त्तव्य का पालन करके पुण्य प्राप्त कर सकता है और परम्परा से निर्वाण की ओर कदम बढ़ाकर संसार की संतति को नष्ट कर सकता है। जिसने एक बार निर्वाण को प्राप्त कर लिया उसे आवश्यक नहीं किन्तु निर्माणकारी जनों के लिए पूजन अवश्य करना चाहिए। जो पूजन नहीं करते हैं उनका जीवन व्यर्थ है।

ये जिनेन्द्रं ना पश्यन्ति पूजयन्ति स्तुवन्ति न।
निष्फलं जीवतं तेषां, धिकश्च गृहाश्रमम्।

जो प.पू. वीतरागी जिनेन्द्र प्रभु के दर्शन नहीं करते, ना ही पूजन करते है, ना स्तवन करते हैं उनका गृहस्थाश्रम व्यर्थ है उनका जीवन धिक्कार है। पूज्य गुरुदेव ने विशद **भक्ति आराधना** पुस्तक हमारे लिए दी है जो निर्वाण का कारण है अत: रत्नत्र की प्राप्ति एवं निर्वाण सुख भी हम सभी को प्राप्त हो ऐसी भावना से त्रय बार नमोस्तु।

ब्र. आस्था दीदी

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

महिमा प्रभु की

भारतीय वसुन्धरा पर जैन धर्म अनादी काल से माना गया है जिसमें अनेक महापुरूषों ने जन्म लिया और अपने जन्म को सार्थक किया उन्होनें भी गृहस्थ जीवन में रहकर भी आपत्ति विपत्ती का सामना किया उपसर्गों को सहन कर राग द्वेष कषायों से जूझकर अपने कर्मों का फल भोगते हुए इस संसार को असार समझकर संसार से मुक्त होकर पूज्यता को प्राप्त किया आज का प्राणी भौतिक सुखों की चाह में थोड़े से दुख में ही घबरा जाते हैं धर्म से दूर रहते हैं जीवन में आने वाली बाधाओं को समता भाव से सहन कर जिनेन्द्र देव की आराधना कर एवं अपनी शक्तिनुसार चारों प्रकार दान का देकर असीम पुण्य का संचय कर अपनी आत्मा का कल्याण करें संसारिक जीवन व्यतीत कर अभ्युदय सुख की भावना रखें

बिन मांगे मोति मिले, मांगे मिले ना भीख

याचना करने पर कुछ भी प्राप्त नही होता प्रभु सेवा और गुरु सेवा हमेशा निश्चल भावों से करना चाहिए परम पूज्य आचार्य गुरुदेव श्री विशद सागर जी महाराज ने लोंगो की व्यस्त देखते हुए अपने द्वारा लिखी लघु पुस्तक **'विशद भक्ति आराधना''** अपना समय निकालकर हम सभी को अच्छा सुअवसर प्राप्त हुआ प्रभु भक्ति करने का ऐसे गुरुदेव श्री हमेशा निरोगी रहे अपन कल्याण के साथ-साथ हमारा भी कल्ययाण करते रहें। नमोस्तु गुरुदेव!

ब्र. सपना दीदी 9829127533

अनुक्रमाणिका

मंगलाष्टक (भाषा)	9
प्रतिष्ठा विधि	11
लघु जलाभिषेक पाठ-1	17
अभिषेक समय की स्तुति	21
भजन-अभिषेक समय का	22
अभिषेक पाठ-2	22
पंचामृत अभिषेक पाठ	29
अभिषेक समय की वन्दना	41
शांतिधारा	42
अभिषेक समय की आरती	47
लघु विनय पाठ-1	48
अथ पूजा पीठिका	49
विनय पाठ-2	52
मंगल पाठ	55
पूजा पीठिका - (संस्कृत)	55
स्वस्ति मंगल	57
परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ	59
श्री देव शास्त्र गुरु पूजन	61
मूलनायक सहित समुच्चय पूजन	65

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

श्री सिद्ध परमेष्ठी की पूजा	72
नवदेवता पूजन	93
श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजन	98
श्री आदिनाथ पूजन	102
श्री पद्मप्रभु पूजन	107
श्री चन्द्रप्रभु जिन पूजन	112
श्री पुष्पदन्त पूजा-	117
श्री शीतलनाथ पूजन	121
श्रीवासुपूज्य जिन पूजन	126
श्री शांतिनाथ जिन पूजा	130
श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन	134
श्री नेमिनाथ पूजन	138
श्री पार्श्वनाथ जिन पूजन	143
श्री महावीर पूजन	147
णमोकार पूजा	151
श्री बाहुबली पूजन	155
सोलह कारण पूजा	160
16 कारण भावना	162
श्री नन्दीश्वर द्वीप पूजा	166
पंचमेरु पूजा	172
वीरशासन जयन्ती पूजन	177

दशलक्षण पूजा	182
10 धर्म के अर्घ्य	184
तीस चौबीसी पूजा	187
रत्नत्रय पूजा	190
जिनवाणी पूजन	195
तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र पूजन	199
सम्मेदशिखर कूट पूजन	203
नवग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिन पूजन	214
समोशरण पूजन	221
मानस्तंभ की पूजन	225
श्री अष्टाह्निका पर्व पूजन	228
आचार्य श्री विशद सागरजी महाराज की पूजन	236
निर्वाण काण्ड	241
श्री णमोकार चालीसा	245
श्री आदिनाथ चालीसा	248
श्री शांतिनाथ चालीसा	251
श्री पार्श्वनाथ चालीसा	253
महामृत्युञ्जय चालीसा	256
श्री नवग्रह शांति चालीसा	258
पंचपरमेष्ठी की आरती	261
श्री आदिनाथ की आरती	262

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

श्री पद्मप्रभु की आरती	263
श्री चन्द्रप्रभु की आरती	264
श्री शांतिनाथ की आरती	265
मुनिसुव्रत जिनराज की आरती	266
श्री नेमिनाथ की आरती	267
श्री पार्श्वनाथ की आरती	268
श्री महावीर स्वामी की आरती	269
श्री नवदेवता की आरती	270
मानस्तम्भ की आरती...	271
आचार्य गुरुवर श्री विशदसागर जी की आरती	272
क्षेत्रपाल जी की आरती	273
पद्मावती माता की आरती	274
श्रावक प्रतिक्रमण	275
क्षमा वंदना	288
सोलह कारण भावना	290
चौंसठ ऋद्धि भावना	298

मंगलाष्टक (भाषा)

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी।।
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधू रत्नत्रय धारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।1।।
नमित सुरासर के मुकुटों की, मणिमय कांति शुभ्र महान्।
प्रवचन सागर की वृद्धि को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान।।
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।2।।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रयधारी।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी।।
जिन आगम जिनचैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।3।।
तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादिक चौबीस जिनदेव।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव।।
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।4।।
जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
श्रीयुत तीर्थंकर की माता-पिता, यक्ष-यक्षी भी एव।।
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी।।5।।

सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार।
वसु विधि महा निमित् के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार॥
पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, बुद्धि सप्त ऋद्धीधारी।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥6॥
आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी।
नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी॥
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी।
सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥7॥
व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार॥
रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनगृह अतिशयकारी।
वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥8॥
तीर्थंकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में॥
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी।
कल्याणक पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥9॥
धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा॥
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी॥10॥

इति मंगलाष्टकं

प्रतिष्ठा विधि

हस्त शुद्धि

ॐ ह्रीं असुजर-सुजर हस्त प्रच्छालनं करोमि स्वाहा।

"जल शुद्धि मंत्र"

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिंछ केसरि पुण्डरीक महापुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रूप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि शुद्ध जलं सुवर्ण घटं प्रक्षालितपरिपूरितं नवरत्न गंधाक्षत पुष्पार्चित ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं क्षं क्षं लं लं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

अमृत शुद्धि मंत्र-ॐ ह्रीं: अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय-2 सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

(पीली सरसों अथवा लवंग से जल शुद्ध करना।)

पात्र शुद्धि

शोधये सर्व पात्राणि, पूजार्थानपि वारिभिः।
समाहितो यथाम्नायं, करोमि सकलीक्रियाम्॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन पात्र शुद्धिं करोमि स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

दिग्बंधन

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्व दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिण दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं ह्रूं पश्चिम दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तर दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व दिशा समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

ॐ ह्रां ह्रीं: ह्रूं: ह्रौं: ह्रः ऊर्ध्वलोक, अधो लोक मध्यलोक समागतान् विघ्नान् निवारय निवारय मां एतान् सर्वान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

रक्षासूत्र बन्धन मंत्र

ॐ नमोंऽर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे रक्षाबंधनं करोमि एतस्य समृद्धिरस्तु। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा।

तिलक करण मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतपराक्रमाय ते भवतु। यह मंत्र पढ़कर गृहस्थाचार्य सभी पात्रों को तिलक लगावें।

अंगन्यास विधि

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम गात्रे रक्ष रक्ष स्वााहा
यह मंत्र पढ़कर अपने वस्त्रों का स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।
ॐ ह्र णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व जगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

मण्डप प्रतिष्ठा मंत्र

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षःनमोर्हते श्रीमते पवित्रर जलेन मण्डप शुद्धि करोमि स्वाहा। (मण्डप पर जल से शुद्धि करें)
भो! चतुर्णिकाय देवाः स्वथाने तिष्ठ तिष्ठ स्वनियोगं कुरु कुरु स्वाहा।
भो! पूर्वदिशा..विदिशा के प्रतिहारी स्व स्थाने....
भो! दक्षिणदिशा..विदिशा के प्रतिहारी स्वस्थाने..
भो! पश्चिमदिशा ..विदिशा के प्रतिहारी स्वस्थान.
भो! उत्तरदिशा..विदिशा के प्रतिहारी स्वस्थाने...
भो! वातकुमार देवाः अग्नि कुमार देवाः, वास्तुकुमार देवः मेघकुमार नाग कुमार देवाः स्वस्थाने ...

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

ॐ ह्रां ह्रीं: ह्रूं: ह्रौं: ह्र: जिन मण्डप स्थले धरित्री जाग्रते अवस्थायां कुरु कुरु स्वाहा।
भो! क्षेत्रपाल देव: स्वथाने तिष्ठ तिष्ठ स्वनियोग कुरु कुरु स्वाहा।
भो! धनद रत्न वृष्टि करु कुरु
रक्षा मन्त्र–ॐनमो अर्हते सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।
शांति मंत्र–ॐ क्षूं हूं फट् किरीटिं घातय घातय, परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय, सहस्रखण्डान् कुरु, परमुद्रां छिन्द- छिन्द, परमन्त्रान् भिन्द-भिन्द, क्षां क्ष: फट् स्वाहा।

"पात्र शुद्धि मंत्र"

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: ऐतेषां पात्रशुद्धि सर्वांगशुद्धि: भवतु।

"मण्डप शुद्धि मंत्र"

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्ष: प्रतिष्ठा मण्डप शुद्धिं कुर्म:।

"मण्डप पर सूत्र बांधने का काव्य"

यत्पंचवर्णाक्तपवित्रसूत्रं, सूत्रोक्ततत्त्वाभमनेकमेकम्।
तेनत्रिवारे परिवेष्टयाम:, शिष्टेष्टयागाश्रयमण्डपेन्द्र।।

मन्त्र:-ॐ अनादिपरब्रहम्णे नमो नम:। ॐ ह्रीं जिनाय नमो नम: । ॐचतुर्मंगलाय नमो नम:। ॐ चतुर्लोकोत्तमाय नमो नम:। ॐ चतु: शरणायनमो नम:---अस्य विधान --- नामधेयं यजमानस्य श्री ---यजमानस्य सपरिवारे वर्धस्व-2 विजस्य -2 भवतु-2सर्वदा शिवं कुरु

यज्ञोपवीत धारण करने का मंत्र

ॐ नम: परमशान्ताय शांति कराय रत्नत्रय स्वरूप यज्ञोपवीतं धारयामि मम गात्र पवित्रं भवतु अर्हं नम: स्वाहा।

कलश में सामग्री रखने का मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नम: मंगल कलशे मंगल कार्य निर्विघ्न परिसमाप्त्यर्थं पूंगी फलानि प्रभृति वस्तुनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

"मंगल कलश परश्री फल रखने का मंत्र"

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्ष: क्षैं क्षैं नमो अर्हते भगवते श्रीमते सर्व रक्ष रक्ष हूं फट् स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना मंत्र

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणे मतेऽस्मिन् विधीयमाने श्री (विधान) महामण्डल विधान कार्ये। ...श्री वीर निर्वाण संवत्सरे, ...मासे, ...पक्षे, ...तिथौ, ...दिने, ...लग्ने, भूमिशुद्धयर्थं, पात्रशुद्धयर्थं, शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षत श्रीफलादिशोभितं शुद्धप्रासुकतीर्थजलपूरितं मंगलकलशस्थापनं करोमि श्रीं ह्रीं ह्रीं सः स्वाहा।

दीपक स्थापना

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकंश, कललोकसुखाकर-मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

(मुख्य दिशानुसार आग्नेय कोण में दीपक स्थापित करें।)

शास्त्र स्थापना

अरहंत-भासियत्थं गणहर-देवेहिंगंथियं सम्मं।
पणमामि भत्तिजुत्तो सुदणाण-महोवहिंसिरसा॥

ॐ ह्रीं जिन मुखोदभूत रत्नत्रय स्वरूप जिन शास्त्र स्थापयामि स्वाहा॥।

नोट-अरहंत भगवान का कभी अभिषेक नहीं होता जिनबिम्ब अभिषेक करने के लिए ही बनाए जाते हैं अतः भक्त की भावना के अनुरुप अभिषेक की व्यवस्था करना चाहिए किसी की श्रद्धा को ठेस पहुँचाने में ब्रह्म हत्या के समान पाप है।

लघु जलाभिषेक पाठ-1

तर्ज- आलोचना पाठ (चाल छन्द)

परिणाम की शुद्धी हेतू, जिनबिम्ब परम है सेतू।
जिन के दर्शन को पाते, निज के दर्शन हो जाते॥
परमेष्ठी पंच हमारे, हैं तारण तरण सहारे।
हम जिनाभिषेक को आए, जिनपद में शीश झुकाए॥1॥

(श्वोसोच्छवास पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र जाप करें)

अभिषेक प्रतिज्ञा

जिन प्रतिमा के न्हवन का, करते हम संकल्प।
भाव सुमन अर्पण करें, छोड़ के अन्तर्जल्प॥2॥

ॐ ह्रीं अभिषेक प्रतिज्ञायां परिपुष्पांजलि क्षिपेत्।

तिलक लगाने का मंत्र

चंदन खुशबूदार ले, तिलक करें नव अंग।
करें इन्द्र की कल्पना, धारें विशद उमंग॥

ॐ ह्रीं नवांगेषु तिलकं अवधारयामि।

श्रीकार लेखन

उभय लक्ष्मी प्राप्तजिन, तीर्थंकर भगवान।
पीठोपरि श्रीकार हम, लिखते महति महान॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं पीठोपरि श्रीकार लेखनं करोमि।

"सिंहासन स्थापना"

पाण्डु शिला की कल्पना, करते यहाँ विशेष।
न्हवन हेतु जिस पर यहाँ, तिष्ठो श्री जिनेश।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पीठथापनं (सिंहासन) स्थापनं करोमि।

"जिनबिम्ब स्थापना"

भक्तिभाव के रत्न जड़ित, पावन सिंहासन।
हृदय कमल मेरा हे प्रभु, भावों का आसन।।
आहवानन् है यहाँ आपका, सिंहासन पर।
नाथ! पधारो आप विशद, श्रद्धा आसन पर।।5।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थाधिनाय भगवन्निह पाण्डुक-शिलापीठे सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ जिनबिम्ब स्थापनं करोमि।

"चार कलश स्थापना"

प्रासुक निर्मल नीर से, कलश भराए चार।
स्थापित चउ कोंण में, करते मंगलकार।।6।।

ॐ ह्रीं चतु:कोणेषु स्वस्तये चतु: कलशस्थापनं करोमि।

"अर्घ चढ़ावें"

जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल साथ।
करने को अभिषेक हम, अर्घ्य चढ़ाते नाथ!।।7।।

ॐ ह्रीं स्नपनपीठस्थित जिनायर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

"जल से अभिषेक"

जिन की मुद्रा जिन बिम्बों में, विशद झलकती अपरम्पार।
भावों से जिनवर का दर्शन, करते हैं हम बारम्बार।।
करते न्हवन यहाँ भक्ती से, नाथ! आपकी जय जय हो।
मोक्ष मार्ग पर बढ़े प्रभू मम्, जीवन यह मंगलमय हो।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर-जलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

"चार कलश से अभिषेक"

करते न्हवन चार कलशों से, कर्म घातिया मम क्षय हों।
अनन्त चतुष्टय पा जाऐं हे नाथ! आपकी जय जय हो।।
करते न्हवन यहाँ भक्ती से, नाथ! आपकी जय जय हो।
मोक्ष मार्ग पर बढ़े प्रभू मम्, जीवन यह मंगलमय हो।।9।।

ॐ ह्रीं श्री श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं श्री वृषभादिमहावीरान्त-चतुर्विंशति तीर्थंकर-परम-देवं-आद्यानां आद्ये मध्यलोके, जम्बूद्वीपे, भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे.... प्रदेशे....नाम्निनगरे. ... तिथो....वासरे मुन्यार्यिका-श्रावक- श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं चतु: कलशेन जलेनाभिषिंचयाम:।।

"वृहद जिनाभिषेक"

परमौदारिक परम सुगन्धित, प्रभु तन से शुभ अतिशय हो।
न्हवन सुगन्धित जल से करते, नाथ! आपकी जय-जय हो॥
करते न्हवन यहाँ भक्ती से, नाथ! आपकी जय जय हो।
मोक्ष मार्ग पर बढ़े प्रभू मम्, जीवन यह मंगलमय हो॥10॥

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इ्वीं इ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सं क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति **सुगन्धित जलेन** वृहच्छांति-मन्त्रेणाभिषेकं करोमि।

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके 'विशद' पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादिवीरान्तेभ्योऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शुद्ध वस्त्र से बिम्ब का, करते हम प्रक्षाल।
यही भावना है विशद, कटे कर्म जंजाल॥12॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोमि।

आसन पर जिनराज को, करें विशद आसीन।
विनयभाव आदर सहित, सब मिल ज्ञान प्रवीण॥13॥

ॐ ह्रीं अभिषेकोपरान्ते सिंहासने जिनबिम्ब स्थापनं करोमि।

नीर गंध आदिक सभी, द्रव्यों का ले अर्घ्य।
जिन चरणों अर्पित करें, पाने सुपद अनर्घ्य॥14॥

ॐ ह्रीं पीठ स्थित जिनायार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- पूज रहे तव पाद हम, तारण-तरण जहाज।
भव-भव भ्रमण विनाशकर, पाएँ सिद्ध समाज॥15॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्।)

अभिषेक समय की स्तुति

(तर्ज-करले जिनवर का गुणगान आई मंगल घड़ी...)

करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी।
आई सारी नगरी, झूमे जनता सगरी।।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी॥1॥
प्रासुक करके जल भर लाए, सिर के ऊपर ढारे।
करते हम अभिषेक प्रभु का, जागे भाग्य हमारे॥
सिर पर रखकर लाए भक्त, देखो जल गगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी॥2॥
पाण्डुक शिला पे जिन प्रतिमा को, भाव सहित पधराए।
चार कलश चारों कोंणों पर, जल भरकर रखवाए॥
खुशियाँ छाईं चारों ओर, हमारी नगरी।
करने जिनवर का अभिषेक, आई सारी नगरी॥3॥

भजन-अभिषेक समय का

(तर्ज-खिलौना जानकर)

कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं।
बनें हम मोक्ष के राही, न्वहन प्रभु का कराते हैं।टेक।।
कभी अरहंत के कोई, चरण भी छू नहीं पाते।
बिम्ब पाषाण धातू के, प्रतिष्ठित भव्य करवाते।।
पुण्य की वृद्धि करने को, न्वहन उनका कराते हैं।
कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं।।1।।
जिनालय तीन लोकों में, अकृत्रिम श्रेष्ठ शुभकारी।
रहे जिनबिम्ब उनमें शुभ, श्रेष्ठ शाश्वत हैं अविकारी।।
वहाँ नर देव विद्याधर, न्वहन कर सिर झुकाते हैं।
कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं।।2।।
प्रथम कर्त्तव्य श्रावक का, रहा अभिषेक फिर पूजन।
करें जो भाव से अर्चा, पुण्य का वे करे अर्जन।।
भक्ति से इन्द्र सौ प्रभु का, न्वहन अतिशय कराते हैं।
कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं।।3।।
प्रभु यह भक्त अर्चा को, यहाँ पर आज आये हैं।
'विशद' अभिषेक कर प्रभु का हर्ष मन में जगाते हैं।।
बनें हम मोक्ष के राही, भावना आज भाते हैं।
कलश में नीर निर्मल यह, विशद प्रासुक भराते हैं।।4।।

अभिषेक पाठ-2

(श्री माघनन्दि मुनि कृत)

श्रीमन्नतामर शिरस्तटरत्नदीप्ति,
तोयावभासि चरणाम्बुज युग्ममीशम्।

अर्हन्तमुन्नत पद प्रदमाभिनम्य,
त्वन्मूर्ति-षूद्यदभिषेक विधिं करिष्ये।।1।।

अर्थ-पौर्वाह्णिक/माध्याह्णिक/अपराह्णिक देव वन्दनायां पूर्वाचार्यानु क्रमेण सकल कर्म क्षयार्थं भाव पूजा वन्दनास्तव समेतं श्री पंचमहागुरुभक्ति कायोत्सर्गं करोम्यहम्।

(27 श्वासोच्छवास पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र का स्मरण करें)

याः कृत्रिमास्तदितराः प्रतिमाजिनस्य,
संस्नापयन्ति पुरुहूत मुखादयस्ताः।
सद्भाव लब्धि समयादि निमित्त योगात्त्,
तत्रैवमुज्ज्वलधिया कुसुमं क्षिपामि।।2।।

इति अभिषेक प्रतिज्ञा करोमि (पुष्पक्षेण करें)

श्रीकार लेखन

श्री पीठक्लृप्ते "विशदाक्षतौद्यैः", श्री प्रस्तरे पूर्ण शशांककल्पे।
श्री वर्तके चन्द्र मसीतिवार्तां, सत्यापयंतीं श्रियमालिखामि।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोम्यहम्।

पीठ स्थापन

कनकाद्रिनिभं कम्रं, पावन पुण्य कारणम्।
स्थापयामि परं पीठं, जिनस्नपनायभक्तितः।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पीठ सिंहासन स्थापनं करोम्यहम्। (सिंहासन स्थापित करें)

जिनबिम्ब स्थापन

भृंगार चामर सुदर्पण पीठ कुम्भ
तालध्वजातप निवारक भूषिताग्रे।
वर्धस्वनन्द जय पाठ पदावलीभिः,
सिंहासने जिन! भवन्तमहं श्रयामि।।
वृषभादि सुवीरान्तान्, जन्माप्तौ जिष्णु चर्चितान्।
स्थापयाम्यभिषेकाय, भक्त्या पीठे महोत्सवम्।।5।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह स्नपनपीठे सिंहासने तिष्ठ-तिष्ठ इति प्रतिमा स्थापनम्। (बिम्ब स्थापन करें)

चार कलश स्थापन

श्रीतीर्थकृत्स्नपनवर्य विधौ सुरेन्द्रः,
क्षीराब्धि वारिभिरपूरय दर्थ कुम्भान्।
तांस्तादृशानिव विभाव्य यथाहणीयान्,
संस्थापये कुसुम चन्दन भूषिताग्रान।।6।।
शातकुम्भीय कुम्भौघान्, क्षीराब्धेस्तोय पूरितान्।
स्थापयाामि जिनस्नान, चन्दनादि सुचर्चितान्।।

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुः कोणेषु चतुकलशास्थापनं करोम्यहम्।।

अर्घ्य

आनन्द निर्भर सुर प्रमदाादि गानैर्,
वांदित्र - पूर - जय - शब्द - कलशप्रशस्तैः।
उद्गीयमान-जगतीपति-कीर्तिमेनाम्,
पीठस्थलीं वसु-विधार्चन योल्लसामि।।7।।

ॐ ह्रीं स्नपनपीठ स्थित जिनायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रथम कलशाभिषेक

कर्म प्रबन्ध निगडैरपि हीनताप्तम्,
ज्ञात्त्वाऽपि भक्तिवशतः परमादि देवम्।
त्वां स्वीय कल्मष गणोन्मथनाय देव।
शुद्धोदकैरभिनयामि महाभिषेकम्।।8।।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

तीर्थोत्तम भवै नीरैः क्षीरवारिधि रूपकैः।
स्नपयामि प्रतिमायां, जिनान् सर्वार्थ सिद्धिदान्।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामः

यह पढ़ते हुए कलश से प्रतिमाजी पर 108 धारा जल की छोड़ें

चार कलशाभिषेक

दूरावनम्र सुरनाथ किरीट कोटि,
संलग्न रत्न किरणच्छविधूसराघ्रिम्।
प्रस्वेद ताप मल मुक्तिमपि प्रकृष्टैर,-
भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाऽभिषिञ्चे।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं श्री वृषभादि महावीर पर्यन्त चतु-र्विंशति तीर्थंकर परमदेवं मध्यलोके जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे भारत देशे...प्रदेशे....जिलान्तर्गते....नाम्निनगरे...चैत्यालये (मन्दिरे) मण्डपे

वीर निर्वाण संवत्सरे...मासानामुत्तमे मासे...मासे....पक्षे....शुभ तिथौ.. .वासरे शुभघटी लग्ने शुभ...मुहूर्ते मुन्यार्यिकाश्रावक श्राविकाणां सकल कर्म क्षयार्थं चतुः कलशनाभिषिञ्चयामि स्वाहा।

वृहद् शांति मंत्र

सकल भुवन नाथं तं जिनेन्द्रं सुरेन्द्रै,
रभिषव विधिमाप्तं स्नातकं स्नापयामः।
यदभिषव वन वारां, बिन्दुरेकोऽपि नृणां,
प्रभवति हि विदधातुं भुक्ति सन्मुक्तिलक्ष्मीम्॥10॥

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इ्वीं इ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्री द्रीं हं झं इ्वीं क्ष्वीं हं सः झं वं ह्रः यः सः क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः क्ष्वीं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः ह्रीं द्रां द्रीं नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः इति सुगन्धित जलेन बृहच्छान्तिमंत्रेणाभिषेकं करोमि।

सुगन्धित कलशाभिषेक

द्रव्यैरनल्प घनसार चतुः समाद्यै,
रामोद वासित समस्त दिगन्त रालैः।
मिश्री कृतेन पयसा जिन पुंगवानां,
त्रैलोक्य पावन महं स्नपनं करोमि।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इ्वीं इ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर सुगन्धित जलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

विनायक यन्त्राभिषेक

अर्हं मंत्रं नमस्कृत्य, रत्नत्रय तपोनिधिम्।
सिद्धयंत्रं स्नपयामि, सर्वोपद्रव शान्तये।।

ॐ ह्रीं श्री विनायक सिद्ध यंत्रं च जलेन स्नपयामः।

यन्त्राभिषेक

स्नात्वा शुभांवर धराः कृत यत्न योगात्।
यंत्रं निवेश्य शुचि पीठ वरेऽभिषञ्चेत्।।

ॐ भूर्भुवः स्वरिह मंगल यंत्र मेतत् विघ्नौघवारकमहं परिषेचयामि।।

अर्घ्य

पानीय चन्दन सदक्षत पुष्प पुञ्ज, नैवेद्य दीपक सुधूप फलव्रजेन।
कर्माष्टककर्मष्टिकक्रथनवीर-मनन्त शक्तिं, सम्पूजयामि महसा महसां निधानम्॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हेतीर्थपा! निज यशोधवली कृताशाः,
सिद्धौषधाश्च भव दुःख महागदानाम्।
सद्भव्य हृज्जनित पंक कबंध कल्पाः,
यूयंजिनाः सतत शान्ति करा भवन्तु।।

इत्युक्त्वा शान्त्यर्थंपुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

(शान्तिधारा करें पश्चात् प्रक्षालन विधि करें)

नत्वामुहुर्निज करैरमृतोपमेयैः,
स्वच्छै र्जिनेन्द्रतव चन्द्र करावदातैः

शुद्धांशुकेन विमलेन नितान्त रम्ये,
देहेस्थितान् जलकणान् परिमार्जयामि।।

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिनबिम्बमार्जनं करोम्यहम्।

स्नानं विधायभवतोष्ट सहस्र नाम्ना-
मुच्चारणेन मनसोवचसो विशुद्धिम्।
जिघृक्षुरिष्टमिन तेऽष्ट मयीं विधातुं,
सिंहासने विधिवदत्र-निवेशयामि।।

ॐ ह्रीं जिन बिम्ब सिंहासने स्थापितं करोम्यहम्।

जलगंधाक्षतैः पुष्पैः, चरु दीप सुधूपकैः।
फलै रर्घौर्जिनमर्चे, जन्मदुःखाप-हानये।।

ॐ ह्रीं पीठ स्थित जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नत्वा परीत्य निज नेत्र ललाटयोश्च,
व्याप्तं व्यात्यु क्षणेन हरतादघ सञ्चयं मे।
शुद्धोदकं जिनपते तव पाद-योगाद्,
भूयाद् भवातप हरं धृतमादरेण।।

गंधोदक मस्तक पर लगावे

मुक्ति श्री वनिताकरोदकमिदं, पुण्यांकुरोत्पादकं,
नागेन्द्रत्रिदशेन्द्र चक्र पदवी राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान चरित्र दर्शन लता, संवृद्धि संपादकं,
कीर्ति श्री जयसाधकं तव जिन स्नानस्यगन्धादकम्।

ॐ ह्रीं जिनगन्धोदकं स्वललाटे नेत्तेय धारयामि।

इमे नेत्रे जाते सुकृत जल सिक्ते सफलिते,
ममेदं मानुष्यं कृतिजन गणादेय-मभवत्।

मदीयाद् भल्लाटा-दशुभतर कर्माटन-मभूत्।।
सदेदृक्पुण्यार्हन मम भवतु ते पूजनविधौ।।

इत्युक्त्वा पुष्पाञ्जलिं क्षिपाम्यहम्

पंचामृत अभिषेक पाठ

(शम्भू छन्द)

श्रीमत् जिनवर वन्दनीय हैं, तीन लोक में मंगलकार।
स्याद्वाद के नायक अनुपम, अनन्त चतुष्टय अतिशयकार॥
मूल संघ अनुसार विधि युत, श्री जिनेन्द्र की शुभ पूजन।
पुण्य प्रदायक सद्दृष्टि को, करने वाली कर्म शमन॥1॥

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्रीमत् मेरू के दर्भाक्षत, युक्त नीर से धो आसन।
मोक्ष लक्ष्मी के नायक जिन, का शुभ करके स्थापन॥
मैं हूँ इन्द्र प्रतिज्ञा कर शुभ, धारण करके आभूषण।
यज्ञोपवीत मुद्रा कंकण अरु, माला मुकुट करूँ धारण॥2॥

ॐ नमो परम शान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृताय अहं रत्नत्रयस्वरुपं यज्ञोपवीत धारयामि मम गात्रं पवित्रं भवतु ह्रीं नमः स्वाहा।

तिलक लगाने का मंत्र

हे विबुधेश्वर! वृन्दों द्वारा, वन्दनीय श्री जिन के बिम्ब।
चरण कमल का वन्दन करके, अभिषेकोत्सव कर प्रारम्भ॥

स्वयं सुगन्धी से आये ज्यों, भ्रमर समूहों का गुंजन।
गंध अनिन्द्य प्रवासित अनुपम, का मैं करता आरोपण॥3॥
ॐ ह्रीं नवांग तिलकं अवधारयामि स्वाहा।

भू प्रच्छालन मंत्र

जो प्रभूत इस लोक में अनुपम, दर्प और बल युक्त सदैव।
बुद्धीशाली दिव्य कुलों में, जन्मे जो नागों के देव॥
मैं समक्ष उनके शुभ अनुपम, करने हेतू संरक्षण।
स्नपन भूमि का करता हूँ, अमृतजल से प्रच्छालन॥4॥
ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

पीठ प्रच्छालन मंत्र

इन्द्र क्षीर सागर के निर्मल, जल प्रवाह वाला शुभ नीर।
हरता है संसार ताप को, काल अनादि जो गम्भीर॥
जिनवर के शुभ पाद पीठ का, प्रच्छालन करता कई बार।
हुआ उपस्थित उसी पीठ को, प्रच्छालित मैं करूँ सम्हार॥5॥
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठप्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

श्री कारलेखन मंत्र

श्री सम्पन्न शारदा के मुख, से निकले जो अतिशयकार।
विघ्नों का नाशक करता है, सदा सभी का मंगलकार॥

स्वयं आप शोभा से शोभित, वर्ण रहा पावन श्रीकार।
श्री जिनेन्द्र के भद्रपीठ पर, लिखता हूँ मैं अपरम्पार॥6॥
ॐ ह्रीं पाण्डुकशिला पीठे श्रीकारलेखनं करोमि स्वाहा।

अग्नि प्रज्ज्वलन क्रिया

दोहा- मोह रूप वन दहन में, पावन रहे समर्थ।
अग्नि प्रज्ज्वलन कर रहे, हम पूजा के अर्थ॥7॥
ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नमः स्वाहा।

दश दिग्पाल आह्वान

इन्द्र अग्नि यम नैऋत पावन, वरुण पवन कुबेरैशान।
धरणेन्द्र सोम सभी जिनवर का, करो ह्वन तुम महति महान॥
अपने-अपने अनुचर सारे, अपने सब चिन्हों के साथ।
करो भेंट स्वीकार यहाँ सब, जिन पद आप झुका कर माथ॥8॥

दशदिक्पाल के मंत्र

ॐ आं क्रौं ह्रीं इन्द्र आगच्छ-आगच्छ इन्द्राय स्वाहा॥1॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं अग्ने आगच्छ-आगच्छ आग्नेय स्वाहा॥2॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं यम आगच्छ-आगच्छ यमाय स्वाहा॥3॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं नैऋत आगच्छ-आगच्छ नैऋताय स्वाहा॥4॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं वरुण आगच्छ-आगच्छ वरुणाय स्वाहा॥5॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं पवन आगच्छ-आगच्छ पवनाय स्वाहा॥6॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं कुबेर आगच्छ-आगच्छ कुबेराय स्वाहा॥7॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

ॐ आं क्रौं ह्रीं ऐशान आगच्छ-आगच्छ ऐशानाय स्वाहा॥8॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं धरणेन्द्र आगच्छ-आगच्छ धरणेन्द्राय स्वाहा॥9॥
ॐ आं क्रौं ह्रीं सोम आगच्छ-आगच्छ सोमाय स्वाहा॥10॥

दशदिक्पालों का अर्घ्य

तीन लोक के नाथ कहे जो, केवलज्ञानी महति महान।
दस प्रकार के धर्म की वृष्टी, तीन लोक में करें प्रधान॥
गुण रत्नों के कहे महार्णव, जिनपद चढ़ा रहे हम अर्घ्य।
'विशद' कुसुम अक्षत आदिक का, अर्घ्य चढ़ा पद पाओ अनर्घ्य॥9॥

ॐ ह्रीं इन्द्रादि दशदिग्पालेभ्यो इदं अर्घ्यं पाद्यं दीपं धूपं चरुं बलि स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञ भागं च यजामहे प्रतिगृहतां प्रति गृहतां स्वाहा।

क्षेत्रपाल का अर्घ्य

भो! क्षेत्रपाल हो रक्षपाल, तुम जिन शासन के महति महान।
गुण चन्दन तेलादि धूप ले, वसु द्रव्य से करते सम्मान॥
यज्ञ भाग ले करें अर्चना, श्री जिनेन्द्र का मंगलगान।
जिनाभिषेक पूजा विधान में, आके पाओ निज स्थान॥10॥

ॐ आं क्रों अत्रस्थ विजयभद्रादि पञ्च क्षेत्रपाल इदं अर्घ्यं पाद्यं गंधं दीपं चरूं वलिं स्वस्तिकं अक्षतं यज्ञ भागं च यजा महे प्रतिग्रहतां-प्रतिग्रहतामीति स्वाहा।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)

जिनबिम्ब स्थापन मंत्र

गिरि सुमेरु के अग्रभाग में, पाण्डुक शिला का है स्थान।
श्री आदि जिन का पहले ही, इन्द्र किए अभिषेक महान्॥

कल्याणक का इच्छुक मैं भी, जिन प्रतिमा का स्थापन।
अक्षत जल पुष्पों से पूजा, भाव सहित करता अर्चन॥11॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री वर्णे प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

अर्घ्य

निर्मल जल परिमल चंदन अरु, श्री को सुखकर ले अक्षत।
श्रेष्ठ सुगन्धित पुष्प सु चरू शुभ, शुद्ध बनाए अमृतवत्॥
सुर भवनों को करें प्रकाशित, ऐसे लेकर दीप महान।
श्रेष्ठ सुगन्धित धूप और फल, से जिन का करते गुणगान॥13॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वर्णे जिनबिम्ब स्थापना करोमि अर्घ्यं निर्व.

(चारों दिशा में चार कलश स्थापन मंत्र)

उत्तमोत्तम पल्लव से अर्चित, कहे गये जो महति महान्।
स्वर्ण और चाँदी ताँबे अरु, रांगा निर्मित कलश महान्॥
चार कलश चारों कोणों पर, जल पूरित ज्यों चउ सागर।
ऐसा मान करूँ स्थापन, भक्ति से मैं अभ्यन्तर॥12॥

ॐ ह्रीं स्वस्त्ये चतुः कोणेषु चतुः कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

(जल से अभिषेक करें)

श्री जिनेन्द्र के चरण दूर से, नम्र हुए इन्द्रों के भाल।
मुकुट मणी में लगे रत्न की, किरणच्छवि से धूसर लाल॥
जो प्रस्वेद ताप मल से हैं, मुक्त पूर्ण श्री जिन भगवान।
भक्ति सहित प्रकृष्ट नीर से, मैं करता अभिषेक महान्॥14॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं

तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके "विशद" पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो जलेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं नि. स्वाहा।

इक्षुरसाभिषेक

इन्द्र अञ्जली बद्ध शीश पर, रख के अपने दोनों हाथ।
श्री जिनेन्द्र के चरण झुकाते, भक्ति भाव से अपना माथ॥
तुरत पेलकर इच्छूरस से, शीश पे देते हे प्रभु! धार।
नाथ! आप हो करुणाकारी, करो सभी का प्रभु उद्धार॥15॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरइक्षुरसेन जिनाभिषेचयामिति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो इक्षु रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शर्करा रसाभिषेक

रजो विलाश कर्पूर पिष्ट शुभ, मधुर शर्करा रस शुभकार।
मोक्षरमा के स्वामी जिन के, शीश पे देते पावनधार॥

मन वाञ्छित फल देने वाली, श्री जिनेन्द्र की भक्ति अपार।
जिन चरणों में भक्त स्वतः ही, फल पाते हैं विस्मयकार॥

ॐ ह्रीं...शर्करा रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा-जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके "विशद" पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो शर्करा रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नारियल रसाभिषेक

स्वच्छ नारियल का जल शीतल, जो पवित्र है शुभ मनहार।
लोकालोक प्रकाशी जिनका, न्हवन कराते मंगलकार॥

ॐ ह्रीं...नारियल रसेन जिनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके "विशद" पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो नारियल रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दाड़िम रसाभिषेक

दाड़िम के दाने मोती सम, श्रेष्ठ पक्व लेकर मनहार।
तुरत पेलकर रस ले पावन, न्हवन कराते अतिशयकार॥

ॐ ह्रीं...दाड़िम रसेनजिनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके "विशद" पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दाड़िम रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आम्र रसाभिषेक

पके आम का रस ले मीठा, शोभित होवे स्वर्ण समान।
श्री जिनेन्द्र के शीश पे देते, जिसकी धारा महति महान॥
ॐ ह्रीं...आम्र रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा-जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके "विशद", पावन अर्घ्य चढ़ाय॥
ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो आम्र रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

फल रसाभिषेक

वीतराग जिन बिम्ब मनोहर, तीन लोक में मंगलकार।
पक्व...के रस द्वारा, देते जिनके शीश पे धार॥
ॐ ह्रीं...रसेनाभिसिंचयामि स्वाहा।

दोहा-जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके "विशद", पावन अर्घ्य चढ़ाय॥
ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो आम्र रसेन अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

घृताभिषेक

श्रेष्ठ वर्ण कंचन सम सुन्दर, देह प्रभा जिनकी शुभकार।
अनुपमेय गुण रहे मनोहर, अर्हन्तों के मंगलकार॥
नमस्कार कर शीश पे देते, हैं हम जिन के घृत की धार।
परम सुगन्धी वाला होता, वातावरण श्रेष्ठ मनहार॥16॥
ॐ ह्रीं.....घृताभिषेकं करोमिति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय॥
ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो घृताभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दुग्धाभिषेक

पूर्ण चन्द्रमा की किरणों सम, धवल दुग्ध से देते धार।
जिनके यश की गौरव गरिमा, फैल रही है अतिशयकार॥
कल्पवृक्ष समनाथ! आप हैं, भवि जीवों को फल दातार।
अतः आपके चरण कमल में, वन्दन करते बारम्बार॥17॥
ॐ ह्रीं.....दुग्धाभिषेकं करोमीति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय॥
ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दुग्धाभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दध्याभिषेक

क्षीर सिन्धु से उठी तरंगें, फैन राशि सम आभावान।
उससे सुन्दर दधि की धारा, शीश पे जिन के करें महान॥
मन वाञ्छित फल देने वाली, श्री जिनेन्द्र की भक्ति अपार।
जिन चरणों में भक्त स्वतः ही, फल पाते हैं विस्मयकार॥18॥
ॐ ह्रीं..... दध्याभिषेकं करोमीति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो दध्याभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सर्वौषधिअभिषेक

दही दूध घृत इच्छूरस से, जिनवर का करके अभिषेक।
उबटन करकालेय सुकुंकुम, सर्व मिलाकर करके एक॥
मिश्रित कर उज्जवल सर्वौषधि, से धारा देते जिनशीश।
शीश झुकाकर वन्दन करते, पाने को हम भी आशीष॥19॥

ॐ ह्रीं....सर्वौषधि जिनाभिषेकं करोमीति स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद, पावन अर्घ्य चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो सर्वौषधिअभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(चार कलश से अभिषेक करें)

इष्ट मनोरथ रहे सैकड़ों, उनकी शोभा धारे जीव।
पूर्ण सुवर्ण कलशा लेकर शुभ, लाए अनुपम श्रेष्ठ अतीव॥
भव समुद्र के पार हेतु हैं, सेतु रूप त्रिभुवन स्वामी।
करता हूँ अभिषेक भाव से, श्री जिनेन्द्र का शिवगामी॥20॥

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतंचतुर्विंशति तीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे....देशे....नाम.

.....नगरे.....एतद्.....जिनचैत्यालये वीर नि. सं..... मासोत्तममासे... .मासे....पक्षे....तिथौ.....वासरे प्रशस्त ग्रहलग्न होरायां मुनिआर्यिका-श्रावक-श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं चतु: कलशेन जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्।

चन्दन लेपन

तीन लोक में पुण्य प्रदायक, चन्दन को केसर में गार।
करते हैं जिनबिम्बों में हम, श्रेष्ठ विलेपन मंगलकार॥
निज गुण पाने का जागे अब, हे जिनेन्द्र मेरा सौभाग्य।
नाथ! आपके गुण सौरभ से, विशद जगाए हम भी भाग्य॥21॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं जिनबिम्बोपरि चन्दन विलेपनं करोमि स्वाहा।

पुष्पवृष्टि

द्वादश योजन तक सुगन्ध जो, फैलाते हैं पुष्प पराग।
पुष्प वृष्टि करते हैं पावन, जिन चरणों में धर अनुराग॥
मोक्ष मार्ग की सिद्धी पाने, करें भाव से हे प्रभु! ध्यान।
'विशद' भाव से नाथ! आपका, करते हैं पावन गुणगान॥22॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं जिनबिम्बोपरि पुष्प वृष्टिं करोमि स्वाहा।

(सुगंधित कलशाभिषेक करें)

जिनके शुभ आमोद के द्वारा, अन्तराल भी भली प्रकार।
चतुर्दिशा का परम सुवासित, हो जाता है शुभ मनहार॥

चार प्रकार कर्पूर बहुल शुभ, मिश्रित द्रव्य सुगन्धीवान।
तीन लोक में पावन जिन का, करता मैं अभिषेक महान्।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इ्वीं इ्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पूर्णसुगंधितकलाशाभिषेकेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल लाय।
जिनाभिषेक करके विशद पावन अर्घ्य चढ़ाय।।

ॐ ह्रीं वृषभादि वीरान्तेभ्यो सुगंधित कलश अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋषिमण्डल यंत्राभिषेक

ऋषीमण्डल शुभ यंत्र का, करते शुभ अभिषेक।
रोग शोक सब दूर हो, जागे विशद विवेक।।

ॐ ह्रीं पवित्रतर जलेन ऋषिमण्डल यंत्र अभिषेकं करोमि इति स्वाहा।

मंगल आरती अवतरण

रखे पात्र में श्री फल उज्ज्वल, अक्षत पुष्प मनोहर दीप।
इत्यादिक से सज्जित थाली, मंगलमय हम लाए समीप।।
काम दाह के नाशक हे जिन, सर्व सुखों के तुम आलय।
'विशद' आरती करते हैं हम, आके अनुपम देवालय।।

ॐ ह्रीं श्रीं अर्हत्परमेष्ठिने नमः मंगल आरती अवतरणम् करोमि स्वाहा।

गंधोदक

जिनाभिषेक का गंधोदक शुभ, मुक्ति श्री के उदक समान।
पुण्यांकुर उत्पन्न करे जो, सुर नरेन्द्र सब वैभववान।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण की, लता की वृद्धी का कारण।
कीर्ति लक्ष्मी जय का साधक, 'विशद' रहा जो निस्कारण।।25।।

मस्तकोपरि गंधोदक धारयामि इति स्वाहा।

अभिषेक समय की वन्दना

(तर्ज-जिनवर जगती के ईश....)

हे तीन लोक के नाथ! झुकाते माथ।
आज हम स्वामी, अभिषेक करे शिवगामी।।टेक।।
अकृत्रिम सोहें जिन मंदिर, जिन प्रतिमाएँ जिनमें सुंदर।
भक्ती करके शत इन्द्र करें प्रणमामी, अभिषेक करें शिवगामी।।1।।
जल क्षीर सिंधु से लाते हैं जिनवर का न्वहन कराते हैं।
भक्ति कर बनते भक्त, श्रेष्ठ पथगामी, अभिषेक करे शिवगामी।।2।।
सुर इन्द्रों का सहयोग करें, इन्द्राणी मंगल पात्र भरें।
सुर चँवर ढौरते, जिनके आगे नामी, अभिषेक करे शिवगामी।।3।।
जो न्हवन प्रभु का करते हैं, वे कर्म कालिमा हरते हैं।
वे सद्श्रावक भी बने 'विशद' शिवगामी, अभिषेक करें शिवगामी।।4।।
जो जिनवर का अभिषेक करें, वे अपने संकट दूर करें।
सद् संयम धर, बन जाते अन्तर्यामी, अभिषेक करें शिवगामी।।5।।

हे तीन लोक.....

शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकलमषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगो-पसर्गविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव- विनाशनाय, सर्वक्षामडामरविनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम (.....) **सर्वज्ञानावरण कर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदर्शनावरण कर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववेदनीयकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमोहनीयकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वायुःकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वनामकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वगोत्रकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वान्तरायकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वक्रोधं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमानं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमायां** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वलोभं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमोहं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वरागं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वद्वेषं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वगजभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि

भिन्द्धि **सर्वसिंहभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वअश्वभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वगौभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वाग्निभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसर्पभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वयुद्धभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसागरनदीजलभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वजलोदरभगंदरकुष्ठकामलादिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वनिगडादिबंधनभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववायुयानदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववाष्पयानदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वचतुश्चक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वत्रिचक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववाष्पधानीविस्फोटकभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वविषाक्तवाष्पक्षरणभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वविद्युतदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभूकम्पदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि, **सर्वभूतपिशाचव्यंतर-डाकिनीशाकिन्यादि भयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वधनहानिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि

सर्वव्यापारहानिभयं छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वराजभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वचौरभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुष्टभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वशत्रुभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वशोकभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसाम्प्रदायिकविद्वेषं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववैरं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुर्भिक्षं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमनोव्याधिं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वआर्तरौद्रध्यानं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुर्भाग्यं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वायशः** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वपापं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्व अविद्यां** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वप्रत्यवायं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वकुमतिं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वक्रूरग्रहभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुःखं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वापमृत्युं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि।

ॐ त्रिभुवनशिखरशेखर-शिखामणि-त्रिभुवन-गुरुत्रिभुवनजनताअभयदानदायक-सार्वभौमधर्म-साम्राज्य-नायकमहतिमहावीरसन्मति-वीरातिवीर-वर्धमाननामालंकृत श्रीमहावीर जिनशासन-प्रभावात् सर्वे जिनभक्ताः

सुखिनो भवंतु-3।

ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं अर्हं आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे मेरोर्दक्षिणभागे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे भारतदेशे..... प्रदेशे..... नामनगरे वीरसंवत्..... तमे..... मासे..... पक्षे..... तिथौ..... वासरे नित्य पूजावसरे (..... विधानावसरे) विधीयमाना इयं शान्तिधारा सर्वदेशे राज्ये राष्ट्रे पुरे ग्रामे नगरे सर्वमुनिआर्यिका-श्रावकश्राविकाणां चतुर्विधसंघस्य मम च... शांतिं करोतु मंगलं तनोतु इति स्वाहा।

हे षोडश तीर्थंकर! पंचमचक्रवर्तिन्! कामदेवरूप! श्री शांतिजिनेश्वर! **सुभिक्षं** कुरू कुरू **मनः समाधिं** कुरू कुरू **धर्म शुक्लध्यानं** कुरू कुरू **सुयशः** कुरू कुरू **सौभाग्यं** कुरू कुरू **अभिमतं** कुरू कुरू **पुण्यं** कुरू कुरू **विद्यां** कुरू कुरू **आरोग्यं** कुरू कुरू **श्रेयः** कुरू कुरू **सौहार्दं** कुरू कुरू **सर्वारिष्ट ग्रहादीन्** अनुकूलय अनुकूलय **कदलीघातमरणं** घातय घातय **आयु** द्राघय द्राघय। **सौख्यं** साधय साधय, ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत् शांतिकराय सर्वोपद्रव-शांति कुरू कुरू ह्रीं नमः। परमपवित्रसुगंधितजलेन जिनप्रतिमायाः मस्तकस्योपरि शांतिधारां करोमीति स्वाहा। चतुर्विधसंघस्थय मम च..... सर्वशांतिं कुरू कुरू तुष्टिं कुरू कुरू पुष्टिं कुरू कुरू वषट् स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांति निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः॥

अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु शांती धारा देते हैं॥
अर्घ-जल गंधाक्षत पुष्पचरु फल, दीप धूप का अर्घ्य बनाय।
'विशद' भाव से शांति धार दे, श्री जिनपद में दिया चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं श्री क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

गुरु श्री का अर्घ्य

दोहा- राही मुक्ती मार्ग के, पालें पञ्चाचार।
परमेष्ठी आचार्य पद, वन्दन बारम्बार॥

ॐ ह्रूँ परम पूज्य आचार्य श्री...चरणेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अभिषेक समय की आरती

(तर्ज-आनन्द अपार है)

जिनवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
जिनबिम्बों की आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है।टेक॥
दीप जलाकर आरति लाए, जिनवर तुमरे द्वार जी।
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी॥1॥
जिनवर...
मिथ्या मोह कषायों के वश, भव सागर भटकाए हैं।
होकर के असहाय प्रभू जी, द्वार आपके आए हैं॥2॥
जिनवर...
शांती पाने श्री जिनवर का, हमने न्हवन कराया जी।
तारण तरण जानकर तुमको, आज शरण में आया जी॥3॥
जिनवर.
हम भी आज शरण में आकर, भक्ती से गुण गाते हैं।
भव्य जीव जो गुण गाते वह, अजर अमर पद पाते हैं॥4॥
जिनवर...
नैय्या पार लगा दो भगवन्, तव चरणों सिरनाते हैं।
'विशद' मोक्ष पद पाने हेतू, दर शीश झुकाते हैं॥5॥
जिनवर का....!

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

गन्धोदक लेने का मंत्र

दोहा- मानो जिन गिर से गिरी, जल धारा हे नाथ!
गंधोदक उत्तमांग उर, 'विशद' लगाएँ माथ।।

मस्तकोपरि गंधोदक धारयामि

लघु विनय पाठ-1

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ।।1।।
शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।।2।।
पीड़ा हारी लोक में, भव-दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।।3।।
धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।।4।।
भविजन को भवसिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।।5।।
चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हों नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।।6।।
यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को विशद विराग।।7।।
एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार।।8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।।9।।
मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।।10।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णात्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णात्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं, धम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना रह पाए।

।। पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्प चरू, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं श्री द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।।5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।

तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी!, करता हूँ प्रभु का गुणगान।।1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।।2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

"स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरह मल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण।।1।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान॥
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान॥2॥
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश॥
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज॥3॥

॥ इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

विनय पाठ-2

इह विधि ठाड़ो होयके, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥1॥
अनंत चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥2॥
तिहुं जग की पीड़ा-हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥3॥

हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥4॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुं जग भूप॥5॥
मैं वंदौ जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबंध के छेदने, और न कछू उपाव॥6॥
भविजन को भवकूप ते तुम ही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार॥7॥
चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में भविजन को शिवगैल॥8॥
तुम पद पंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय॥9॥
चक्री खगधर इंद्रपद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम ते शिवपद लहैं, नेम सकल हनि आप॥10॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥11॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥12॥
थकी नाव भवदधिविषै, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥13॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥14॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥15॥
तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥16॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार॥17॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारकैं, कीजै आप समान॥18॥
तुमकी नेक सृदृष्टितैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूबो जात हों, नेक निहार निकार॥19॥
जो मैं कहहूँ औरसों, तो न मिटै उर झार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार॥20॥
वन्दों पाँचों परम गुरु, सुरगुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥21॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवगमसाधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥22॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परमपद, पंचधरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान॥1॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हद्देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दों स्वयमेव॥2॥
मंगल आचारज मुनि मंगल गुरु उवझाय।
सर्वसाधु मंगल करो, वन्दौ मन वच काय॥3॥
मंगल सरस्वती मात का मंगल जिनवर धर्म।
मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥4॥
या विधि मंगल करन से, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत॥5॥

पुष्पांजलिं क्षिपामि

पूजा पीठिका - (संस्कृत)

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥1॥
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करना)
चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं,

केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केविल पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि। ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

अपवित्र पवित्रो वा, सुस्थितो दु:स्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते॥1॥
अपवित्र पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥2॥
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथम मंगलम् मतः॥3॥
एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं॥4॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं॥5॥
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्र नमाम्यहं॥6॥
विघ्नौघाः प्रलयम् याान्ति शाकिनी-भूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे॥7॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे कल्याण नाथ महंयजे॥
ॐ ह्रीं भगवतो-गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंचकल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे जिननाथ महंयजे॥
ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु पंच परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे जिननाम महंयजे॥
ॐ ह्रीं भगवत् जिन अष्टोत्तर सहस्त्र नामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे जिन सूत्र महंयजे॥
ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणितत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल

श्री मज्जनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद-नायक मनंत चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघ-सुदृशां-सुकृतैकहेतु-
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुंगवाय,
स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जितदृंग मयाय,
स्वस्तिप्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय॥
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधाप्लवाय;
स्वस्ति स्वभाव-परभावविभासकाय;
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय॥
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं;
भावस्य शुद्धि मधिकामधिंगतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्;
भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं॥
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्याययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल-बोधवह्नौ;
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री वृषभो नः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।

श्री सुमतिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अरहनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वर्धमानः।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥1॥

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि करें)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥2॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादना-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥3॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥4॥
जंघावलि-श्रेणि-फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥5॥
अणिम्नि दक्षाःकुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ताः, कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्वलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥6॥
सकामरूपित्व-वशित्वमेश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुण प्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥7॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥8॥
आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्लमल्लौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुपरमर्षयोनः॥9॥
क्षीरं स्रवन्तोऽत्रघृतं स्रवन्तो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीणसंवान महानसाश्चं स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥10॥
(इति परम-ऋर्षिस्वस्ति मंगल विधानम्) (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह! विद्यमान तीर्थंकर, सिद्धपरमेष्ठी निर्वाणक्षेत्र समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥9॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार॥

शान्तये शांतिधारा

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा-देव-शास्त्र-गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल॥

(तामरस छंद)

जय-जय-जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते॥
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्वसाधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते॥
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पञ्चकल्याण नमस्ते।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शाश्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते॥

दोहा-अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत॥

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-देव-शास्त्र-गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य पा, पावें शिव का योग॥

॥ इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)॥

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र-गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण॥
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।
ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।
ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।
ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।
ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।
ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।
ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥8॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्वजिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥9॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार॥

शान्तये शांतिधारा...

दोहा-पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से, पावे निज स्थान॥1॥

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार॥2॥

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर॥3॥

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान॥4॥

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान॥5॥

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.।

जयमाला

दोहा-तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान॥

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, ओर ना मिलते अन्य कहीं॥
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा॥1॥
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल॥

चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते है पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्वसाधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।

गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याये भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा-नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने आये हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

श्री सिद्ध परमेष्ठी की पूजा

स्थापना

ज्ञान दर्शनावरण वेदनीय, मोहनीय का किए विनाश।
आयु नाम अरु गोत्र अन्तराय, आठ कर्म का करके नाश॥
दर्श ज्ञान सुख वीर्य अगुरुलघु, अव्यावाध अरु अवगाहन।
सूक्ष्मत्व गुण प्राप्त सिद्ध जिन, का हम करते आह्वानन्॥

दोहा- **आत्म सिद्धि करके बने, सिद्ध शिला के ईश।**
जिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्दः रेखता)

नीर का कलशा लिया भराय, चरण में प्रभु के दिया चढ़ाय।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥1॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् जन्म-जरा- मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर चंदन लिया घिसाय, चरण में प्रभु के दिया चढ़ाय।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥2॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

थाल अक्षत का लिया भराय, प्रभू के पद में दिया चढ़ाय।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥3॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प हाथों में ले शुभकार, अर्चना करते बारम्बार।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥4॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस नैवेद्य बनाए आज, चढ़ाने लाए हम जिनराज।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥5॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप यह घी का लिया प्रजाल, वन्दना करते विशद त्रिकाल।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥6॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् महामोहान्ध- कार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगन्धित लाये धूप महान, नशाएँ आठों कर्म प्रधान।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ॥7॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अष्ट कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

सरस फल लाए यहाँ महान, मोक्ष फल पाएँ हम भगवान।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ।8॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाते पाने सुपद अनर्घ्य।
अर्चना करने आए नाथ, चरण में झुका रहे हम माथ।9॥

ॐ ह्रीं सर्व कर्म विनाशक सिद्धचक्राधिपते श्री सिद्ध परमेष्ठिन् अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार॥

शांतये शांति धारा.....

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा- सिद्धों की पूजा करें, करने कर्म विनाश।
जयमाला गाते विशद, हो शिवपुर में वास॥

(शम्भू छन्द)

गुण गाने को सिद्ध प्रभू के, अर्पित है मेरा जीवन।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य स्वरूपी, सिद्धों के पद में वन्दन॥

काल अनादी से कर्मों ने, हमको बहुत सताया है।
चतुर्गती में भ्रमण किया बहु, पार नहीं मिल पाया है॥1॥
ज्ञानदर्शनावरण वेदनीय, अन्तराय की तुम जानो।
त्रिंशत कोड़ा-कोड़ा सागर, स्थिति भाई पहिचानो॥
नीच गोत्र की बीस-बीस है, मोहनीय की सत्तर जान।
तैंतिस सागर आयु कर्म की, जानो यह उत्कृष्ट प्रधान॥2॥
वेदनीय बारह मुहूर्त्त की, नाम गोत्र की जानो आठ।
अन्तर्मुहूर्त शेष कर्मों की, स्थिति का आता है पाठ॥
मध्यम के हैं भेद अनेकों, जिसका नहीं है कोई प्रमाण।
बार-बार पाकर दुख भोगे, नहीं हुआ आतम कल्याण॥3॥
रत्नत्रय को पाकर प्रभु ने, तीन योग से करके ध्यान।
पूर्ण नाशकर मोहनीय को, सुख अनन्त पाए भगवान॥
ज्ञानावरणी कर्म नाशकर, प्रकट किया है केवलज्ञान।
कर्म दर्शनावरणी नाशा, केवल दर्शन जगा महान॥4॥
अन्तराय का अन्त किए जिन, वीर्यानन्त प्रकाश किया।
अनन्त चतुष्टय पाकर प्रभु ने, निज आतम में वास किया॥
इन्द्रों द्वारा रचना होती, समवशरण की अपरम्पार।
शीश झुकाकर वन्दन करते, प्राणी चरणों बारम्बार॥5॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

आयु कर्म के साथ नाम अरु, गोत्र वेदनीय करते नाश।
नित्य निरंजन शुभ अविनाशी, करते हैं चेतन में वास॥
अगुरुलघु सूक्ष्मत्व प्राप्त कर, पाते हैं गुण अव्याबाध।
अवगाहन गुण में अवगाहन, करके पाते हैं आह्लाद॥6॥
अन्तिम देह त्याग कर अपनी, क्षण में बन जाते हैं सिद्ध।
लोक शिखर पर प्रभू विराजे, अशरीरी हो जगत प्रसिद्ध॥
भाव बनाकर आये हैं हम, तव पद को पाने हे नाथ!
'विशद' भाव से वन्दन करते, चरणों झुका रहे हम माथ॥7॥

(छन्द:घत्तानन्द)

जय-जय अविकारी, आनन्दकारी, मोक्ष महल के अधिकारी।
जय-जय मंगलकारी, हे गुणधारी! भव बाधा पीड़ा हारी॥

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यक्त्व-अनन्तज्ञान-अनन्तदर्शन-अनन्तवीर्यअगुरु-लघुत्व-अवगाहनत्व-सूक्ष्मत्व-निराबाधात्वगुण सम्पन्न-सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **अष्ट कर्म को नाशकर, पाया शिवपुर वास।**
अर्चा करके आपकी, होवे पूरी आस॥

॥ इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

अर्घ्यावली

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ्य

पद अनर्घ पाने का, मन में भाव न आया।
पञ्च परावर्तन करके, बहु संसार बढ़ाया॥
अर्घ्य चढ़ाते चरण में, पाने को शिवद्वार।
पूजा करते भाव से, पाने को भव पार॥
मोक्ष दातार जी, तुम हो दीनदयाल, परम शिवकार जी॥9॥

ॐ ह्रीं विदेह क्षेत्रस्य विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिनचैत्यालयों का अर्घ्य

सप्त कोटि अरु लाख बहत्तर, अधोलोक में महति महान।
चार सौ अट्ठावन अकृत्रिम, मध्य लोक में जिनगृह मान॥
लख चौरासी सहस सत्तानवे, तेइस ऊर्ध्व में श्री जिनधाम।
असंख्यात ज्योतिष व्यन्तर के, जिनगृह को है 'विशद' प्रणाम॥

ॐ ह्रीं कृत्रिमाकृत्रिमजिनचैत्यालेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अकृत्रिम जिनबिम्बों का अर्घ्य

अकृत्रिम जिन चैत्यालय शुभ, तीन लोक में रहे महान्।
भावन व्यन्तर ज्योतिष वासी, स्वर्ग में जो भी रहे विमान॥
उनमें जो जिनबिम्ब विराजे, अकृत्रिम शुभ मंगलकार।
'विशद' कर्म की शांति हेतु हम, अर्घ्य चढ़ाते यह मनहार॥

ॐ ह्रीं श्री कृत्रिमाकृत्रिम-चैत्यालय सम्बंधि जिनबिम्बेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

एक सौ सत्तर तीर्थंकर का अर्घ्य

पंच भरत ऐरावत पावन, एक सौ साठ विदेह विशेष।
एक सौ सत्तर कर्म भूमियों, में हो सकते हैं तीर्थेश॥
क्षेत्र विदेहों में तीर्थंकर, कम से कम रहते बीस।
जिनके चरणों विशद भाव से, झुका रहे हैं अपना शीश॥

ॐ ह्रीं ढाई द्वीप प्रतिकाले सप्ततिशत कर्म भूमि स्थित सर्व तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध भगवान का अर्घ्य

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाते पाने सुपद अनर्घ्य।
अर्चना करने आए नाथ!, चरण में झुका रहे हम माथ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिस तीर्थंकर के अर्घ्य

तर्ज–सास भी कभी बहु थी

धर्म प्रवर्तन प्रभु जी कीन्हें हैं, षट् कर्मों की शिक्षा दीन्हें हैं।
आदिनाथ स्वामी हैं, मुक्ति पथगामी हैं, शिवसुख में करते रमण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥1॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अजितनाथ जी कर्म विजेता हैं, मुक्ती पथ के अनुपम नेता हैं।
शिवपद के दाता हैं, जीवों के त्राता हैं, जिनवर हैं पावन श्रमण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कार्य असंभव संभव कीन्हें हैं, स्व का चित्त स्वयं में दीन्हें हैं।
संभव जिनस्वामी हैं, मुक्ति पथगामी हैं, चरणों में करते नमन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥3॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अभिनंदन पद वंदन करते हैं, चरणों में अपना सिर धरते हैं।
जग में निराले हैं, शुभ कांतिवाले हैं, सारा जग करता नमन्॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुमतिनाथ यह नाम निराला है, मति सुमति जो करने वाला है।
पंचम तीर्थंकर हैं, मानो शिवशंकर हैं, कर्मों का करते शमन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पद्मप्रभुजी पद्म समान कहे, कमल की भाँति आप विरक्त रहे।
महिमा दिखाई है, प्रतिमा प्रगटाई है, बाड़े को कीन्हा चमन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

जिन सुपार्श्व की महिमा न्यारी है, सारे जग में विस्मयकारी है।
जिनवर कहाए हैं, मुक्तिपद पाए हैं, कीन्हें हैं मोक्ष गमन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥7॥
ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
चन्द्र चिन्ह प्रभु के पद श्रेष्ठ रहा, धवल कांति है चन्द्र समान अहा।
चंदा सितारों में, सोहें बहारों में, प्रभुजी हैं चन्द्र समान अहा॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥8॥
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
पुष्पदंत जी प्रभु कहाए हैं, दंत पंक्ति पुष्पों सम पाए हैं।
नाम जो पाया है, सार्थक कहाया है, ऐसा है आगम कथन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥9॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
तन मन से शीतलता पाई है, शीतलवाणी अति सुखदायी है।
शीतल जिन चंदन है, जिनपद में अर्चन है, कर्मों का करना हनन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥10॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
श्रेय प्रदाता जो कहलाए हैं, नि:श्रेयस पद प्रभुजी पाए हैं।
श्रेय दिला दीजे, देरी अब न कीजे, मिट जाए भवकी तपन।
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥11॥
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वसुपूज्य सुत जग उपकारी हैं, वासुपूज्य जिन मंगलकारी हैं।
चंपापुर प्रभु आए, कल्याणक सब पाए, चंपापुर की शुभ धरन।
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥12॥
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
विमल गुणों को पाने वाले हैं, विमलनाथ जिनराज निराले है।
निर्मल जो पावन हैं, अतिशय मनभावन हैं, जग में हैं तारण तारण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥13॥
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
गुण अनंत जिनने प्रगटाए हैं, अनंतनाथ जिनराज कहाए हैं।
जग में न आएँगे, अंत ना पाएंगे, करते हैं सुख में रमण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥14॥
ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
धर्मध्वजा जो हाथ सम्हारे हैं, धर्मनाथ जिनराज हमारें हैं।
धर्म के धारी हैं, अतिशय शुभकारी हैं, करते हम जिन पद वरण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥15॥
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अन्र्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
शांतिनाथ पद माथ झुकाते हैं, जिनभक्ती कर हम हर्षाते हैं।
शांती के दाता हैं, जग के विधाता हैं, आते जो प्रभु के चरण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥16॥
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

कुंथुनाथ अज लक्षणधारी हैं, प्राणीमात्र के जो उपकारी हैं।
तीर्थंकर पद पाए, चक्री शुभ कहलाए, तेरहवें आप मदन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥17॥
ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
कामदेव पद जिनने पाया था, चक्ररत्न भी शुभ प्रगटाया था।
अरहनाथ तीर्थंकर, अनुपम थे क्षेमंकर, मैंटे जो जन्म-मरण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥18॥
ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
सब मल्लों में मल्ल कहाए हैं, कर्म मल्ल जो सभी हराए हैं।
मल्लिनाथ की जय हो, कर्मों का भी क्षय हो, करते हम पद में नमन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥19॥
ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
मुनियों के व्रत जिनने पाए हैं, मुनिसुव्रतजी जो कहलाए हैं।
शनिग्रह विनाशी हैं, सद्गुण की राशि हैं, कर्मों का कीन्हा क्षरण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥20॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
विजयसेन सुत नमि जिन कहलाए, अनंत चतुष्टय अनुपम प्रगटाए।
शिवसुख जो पाए हैं, जग को दिलाए हैं, पाए हैं मुक्ती सदन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥21॥
ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वर बनके जिनवरजी आये थे, राजमती को ब्याह न पाए थे।
मुनियों के व्रत पाए, संयम जो अपनाए, पशुओं का देखा क्रंदन॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥22॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
उपसर्ग विजेता जो कहलाते हैं, उनके पद हम शीश झुकाते हैं।
समता जो धारे हैं, शत्रु भी हारे हैं, पारस प्रभु के चरण॥
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥23॥
ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
वर्धमान सन्मति कहलाए हैं, वीर और अतिवीर कहाए हैं।
महावीर कहलाए, पाँच नाम प्रभु पाए, कर्मों का कीन्हें दहन।
क्योंकि बड़े पुण्य से अवशर आया है, जिनवर का जो दर्शन पाया है॥24॥
ॐ ह्रीं श्री वर्धमान जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
दोहा- **चौबीसों तीर्थेश के, चरणों विशद प्रणाम।**
यही भावना भा रहे, पाएँ हम शिव धाम॥
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा

समुच्चय चौबीसी भगवान का अर्घ्य

निज आतम शक्ति जगाएँ, पावन यह अर्घ्य चढ़ाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥
ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंच बालयति का अर्घ्य

कर्मों का घोर तिमिर छाया, मिथ्यात्व जाल फैलाए है।
हम भूल गये सद्राह प्रभो! न पार उसे कर पाए हैं।।
हम पद अनर्घ पाने हेतू यह अर्घ्य करें पद में अर्पण।
वासुपूज्य अरु मल्लि नेमि जिन, पार्श्व वीर पद में वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री पंच बालयति वासुपूज्य, मल्लि, नेमि, पार्श्व, वीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबली स्वामी का अर्घ्य

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

सोलहकारण का अर्घ्य

यह अर्घ्य चढ़ाते भाई, पावन अनर्घ्य पददायी।
हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुयद्धुयादि षोड़सकारणेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचमेरु का अर्घ्य

हमने सच्चा स्वरूप, अब तक न पाया।
मेरा है चेतन रूप, उसको बिसराया।।

हैं पंचमेरु के मध्य, अस्सी जिन मंदिर।
शुभ रत्नमयी हैं भव्य, अतिशय जो सुन्दर।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु संबंधी अशीति जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वरद्वीप का अर्घ्य

प्राप्त करने हम सुपद अनर्घ्य, चढ़ाते अष्ट द्रव्य का अर्घ्य।
झुकाते हम चरणों में माथ, भावना पूरी कर दो नाथ।
द्वीप नन्दीश्वर रहा महान्, जिनालय में सोहें भगवान।
करें हम भाव सहित गुण गान, प्राप्त हो हमको पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे पूर्वपश्चिमोत्तरदक्षिण द्विपंचाशज्-जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण का अर्घ्य

शाश्वत पद के बिना जगत में, बार-बार भटकाए हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें हम, अर्घ्य चढ़ाने आए हैं।
निज स्वभाव को हम पा जाएँ, यही भावना भाते हैं।
उत्तम धर्म प्रगट करने को, सादर शीश झुकाते हैं।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ्य

आठों द्रव्यों का अर्घ्य, बनाकर यह लाए।
पाने हम सुपद अनर्घ, अर्घ्य लेकर आए।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

रत्नत्रय रहा महान, विशद अतिशयकारी।
करके कर्मों की हान, श्रेष्ठ मंगलकारी।।
ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्र अर्घ्य

हम अष्ट द्रव्य का अर्घ्य श्रेष्ठ, यह शुद्ध बनाकर लाए हैं।
अष्टम वसुधा है सिद्ध भूमि, हम उसको पाने आए हैं।।
अब पद अनर्घ पाने हेतू, यह मनहर अर्घ्य चढ़ाते हैं।
निर्वाण भूमियाँ हैं पावन, हम सादर शीश झुकाते हैं।।
ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठिने जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिमण्डल का अर्घ्य

चौबिस जिन वसु वर्ग पंच गुरु, रत्नत्रय चउ देव निकाय।
चार अवधि धर अष्ट ऋद्धि युत, चौबीस सूरि त्रय ह्रीं जिनाय॥
दश दिग्पाल यंत्र सम्बन्धी, परम देव जो रहे महान।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, विशद करें हम भी गुणगान॥
ॐ ह्रीं सर्वोपद्रव विनाशन समर्थाय यंत्र सम्बन्धी परम देवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरस्वती का अर्घ्य

पावन यह अर्घ्य बनाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ॥9॥
ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाह।

सप्तर्षि का अर्घ्य

मन वचन काय हो अन्तर्मुख, विषयों से मन अब हट जाए।
शुभ पद अनर्घ्य पाने हेतु, यह अर्घ्य बनाकर हम लाए॥
हम सप्तऋषी की पूजा कर, अपना सौभाग्य जगाएँगे॥
अब छोड़ के यह संसार वास, सीधे शिवपुर को जाएँगे॥
ॐ ह्रीं श्री मन्वादिसप्तर्षिभ्यो अर्घ्यं निव.स्वाहा।

सर्व आचार्य परमेष्ठी अर्घ्य

पूर्वाचार्यश्री शांति सागर जी, आदिसागराचार्यप्रवर।
महावीर कीर्ति वीर सिन्धु शिव, विमल सिन्धु सन्मति सागर
भरत सिन्धु कुन्थुसागर जी, विद्यानन्द विद्यासागर।
पुष्पदन्त गुरु विराग सिन्धुपद, वन्दन मेरा विशद सादर।
ॐ ह्रूँ सर्व आचार्य परमेष्ठी चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आचार्य श्री विरागसागर जी महाराज का अर्घ्य

तन विराग है मन विराग है, जो विराग की मूरत हैं।
श्री जिनेन्द्र के लघु नन्दन गुरु, वीतरागमय सूरत हैं॥
मुक्ती पथ के राही बनकर, विशद करें जग का कल्याण।
प.पू. गुरु विराग सिन्धु पद, अर्घ्य चढ़ा करते गुणगान॥
ॐ ह्रूँ प.पू. गणाचार्य श्री विरागसागर मुनीन्द्राय! अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें मन में भाव बनाये हैं॥
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

क्षेत्रपाल का अर्घ्य

जल के यह कलश भराए, हम भेंट हेतू यह लाए।
तुम क्षेत्र के रक्षाकारी, हे क्षेत्रपाल मनहारी॥

ॐ आं क्रों विध्वंशनायजिन शासन रक्षक क्षेत्रपालाय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

पद्मावती का अर्घ्य

किया घोर उपसर्ग कमठ ने, पार्श्व प्रभु थे ध्यानालीन।
शीश पे धारा पद्मावती ने, चरणों झुका कमठ हो दीन॥
जन-जन की रक्षाकारी, हे पद्मावती हो आप महान।
अर्घ्य समर्पित विशद भाव से, करके करते हम गुणगान॥

ॐ ह्रीं जिनशासन रक्षिका धरणेन्द्रभार्या पद्मावती देवी अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूं सिद्ध पूजूं चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूं साधु पूजूं भाव सों।1।
अर्हन्त-भाषित बैन पूजूं द्वादशांग रचे गणी।
पूजूं दिगम्बर गुरुचरण शिव हेतु सब आशा हनी।2।
सर्वज्ञ भाषित धर्म दशविधि दया-मय पूजूं सदा।
जजुं भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।3।
त्रैलौक्य के कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पन मेरु नन्दीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूँ।4।
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूं सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।5।
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस-वसु जपि होयं पति शिवगेह के।6।

दोहा- जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूं, बहु विधि भक्ति बढ़ाय।7।

ॐ ह्रीं भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्रीअरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्योनमः, प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः, दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः, उत्तम क्षमादि दशलाक्षणिक धर्मेभ्योनमः, सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान सम्यक्-चारित्रेभ्यो नमः, जल के विषैं थल के

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

विषैं आकाश के विषैं गुफा के विषैं पहाड़ के विषैं नगर नगरी विषै ऊर्ध्वलोक मध्यलोक पाताल लोक विषैं विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्योनमः, विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थकरेभ्यो नमः, पांच भरत पांच ऐरावत दशक्षेत्र सम्बन्धी तीस चौबीसी के सातसौ बीस जिनराजेभ्योनमः, नन्दीश्वरद्वीप सम्बन्धी बावन जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्योनमः, पंचमेरु सम्बन्धि अस्सी जिन चैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्योनमः, सम्मेदशिखर कैलाश चंपापुर पावापुर गिरनार सोनागिर मथुरा तारंगा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः, जैनबद्री मूडबिद्री देवगढ़ चन्देरी पपौरा हस्तिनापुर अयोध्या राजगृही चमत्कार जी श्रीमहावीरजी पद्मपुरी तिजारा आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवन्तं कृपावन्तं श्रीवृषभादि महावीर पर्यन्तं चतुर्विंशति तीर्थंकर-परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बू द्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे.....नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे..... मासे शुभे....तिथौ.....वासरे मुनि आर्यिकानां श्रावक श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं (जलधारा) अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घ्यं सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्ति पाठ

शास्त्रोक्त विधि पूजा महोत्सव सुरपती चक्री करें।
हम सारिखे लघु पुरुष कैसे यथाविधि पूजा करें।।

धन क्रिया ज्ञान रहित न जानें रीति पूजन नाथ जी।
हम भक्ति वश तुम चरण आगे जोड़ लीने हाथ जी।1।
दुखहरण मंगल करण आशा भरन जिन पूजा सही।
यों चित में सरधान मेरे शक्ति है स्वयमेव ही।।
तुम सारिखे दातार पाए काज लघु जाचूं कहा।
मुझ आप सम कर लेहु स्वामी यही इक वांछा महा।।2।।
संसार भीषण विपिन में वसुकर्म मिल आतापियो।
तिस दाह तें आकुलित चित है शांति थल कहुं ना लह्यो।।
तुम मिले शांति-स्वरूप शांति करण समरथ जगपती।।
वसु कर्म मेरे शांत करदो शांतिमय पंचम गती।3।
जबलों नहीं शिव लहूं तबलों देह यह धन पावना।
सतसंग शुद्धाचरण श्रुत-अभ्यास आतम भावना।।
तुम बिन अनंतानंत काल गयो रुलत जगजाल में।
अब शरण आयो नाथ दोऊ कर जोड़ नावत भाल मैं।।4।।

दोहा- कर-प्रमाण के मान तैं गगन नपै किहिं भंत।
त्यौं तुम गुण वर्णन करत कवि पावै नहिं अंत।।

(यहां पर कायोत्सर्ग पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र जपना चाहिये।)

विसर्जन पाठ

सम्पूर्ण विधि कर वीनऊं इस परम पूजन ठाठ में।
अज्ञानवश शास्त्रोक्त विधि तें चूक कीनी-पाठ में।।

सो होहु पूर्ण समस्त विधि-वत तुम चरण की शरण तैं।
वंदौं तुम्हें कर जोरि, करो उद्धार जामन मरण तैं।।1।।

आह्वाननं, स्थापनं तथा सन्निधिकरण विधान जी।
पूजन विसर्जन यथा विधि जानूं नहीं गुणखान जी।।
जो दोष लागौ सौ नशौ सब तुम चरण की शरण तैं।
वंदौं तुम्हें कर जोरि, करो उद्धार जामन मरण तैं।।2।।

तुम रहित आवगमन आह्वानन कियो निज भाव में।
विधि यथाक्रम निजशक्ति सम पूजन कियो अति चाव में।
करहूं विसर्जन भाव ही में तुम चरण की शरण तें।
वंदौ तुम्हें कर जोरि, करो उद्धार जामन मरण तें।।3।।

दोहा- तीन भुवन तिहूं काल में, तुमसा देव न और।
सुख कारण संकट हरण, नमौं 'जुगल' कर जोर।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

आसिका लेने का पद

दोहा- श्री जिनवर की आसिका, लीजे शीशे चढ़ाय।
भव भवके पातक कटें, दुःख दूर हो जाय।।

(इसके पश्चात् नीचे दिये भजन या स्तुति आदि बोलते हुए प्रतिमाजी वेदी युक्त की तीन प्रदक्षिणा देकर ढोक देनी चाहिये)

नवदेवता पूजन

स्थापना

अर्हन्त सिद्ध आचार्य उपाध्याय, सर्वसाधु जग में पावन।
जैन धर्म जिनचैत्य जिनालय, जैनागम का आह्वानन्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिन धर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

यह नीर चढ़ाने लाए, भव रोग नाश हो जाए।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो जन्म, जरा, मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चंदन अर्चा को लाए, संसार ताप नश जाए।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत ये धवल चढ़ायें, अक्षय पद हम भी पाएँ
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

यह पुष्प चढ़ाने लाए, मम् कामरोग नश जाएँ।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी।।4।।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व.स्वाहा।

चरु चढ़ा रहे मनहारी, है क्षुधा रोग परिहारी
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी।।5।।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

पावन यह दीप जलाए, मम मोह तिमिर नश जाए।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी।।6।।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व.स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी।।7।।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल ताजे यहाँ चढ़ाएँ, अब मोक्ष सुफल को पाएँ।
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी।।8।।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताये फलं निर्व. स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाते भाई जो है अनर्घ्य पददायी
नव देव पूजते भाई, इस जग में मंगलदायी।।9।।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिनधर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्योभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांती धारा से मिले, मन में शांति अपार।
अतः आपके पद युगल, देते शांती धार।।
।। शांतये शांति धारा ।।

दोहा- पुष्पांजलि के हेतु यह, पावन लाए फूल।
कर्मों से मुक्ती मिले, शिव पद हो अनुकूल।।
।। दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

नवदेवता के अर्घ्य

झुकते हुऐ इन्द्र के मुकटों, की मणियों से आभावान।
जिन के पद नख शोभा पाते, जिनका हम करते गुणगान।।1।।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत् परमेष्ठिभ्यों अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्श ज्ञान सुख वीर्य अगुरु लघु, सूक्ष्मत्व अवगाहन गुणवान।
अव्याबाध अष्टगुण धारी, सिद्धों का करते गुणगान।।2।।
ॐ ह्रीं श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिक्षा दीक्षा देने वाले, पालन करते पंचाचार।
छत्तिस गुणधर आचार्यों के, पद में वन्दन बारम्बार।।3।।
ॐ ह्रीं श्री आचार्य परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, धारी उपाध्याय गुणवान।
सम्यक्श्रुत को पाते हैं जो, जिनका करते हम गुणगान।।4।।
ॐ ह्रीं श्री उपाध्याय परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण शुभ, रत्नत्रय धारी अविकार।
सर्वसाधु की अर्चा करके, वन्दन करते बारम्बार।।5।।
ॐ ह्रीं श्री साधु परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
उत्तम क्षमा आदि दश जान, रत्नत्रय युत धर्म प्रधान।
परम अहिंसा धर्म है पावन, हम जा धारे हे भगवान।।6।।
ॐ ह्रीं श्री जिनधर्मांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
द्वादशांग जिनवाणी पावन, द्रव्य भाव श्रुत रुप प्रधान।
अर्चा करते जिनवाणी की, पाने हेतु सम्यक्ज्ञान।।7।।
ॐ ह्रीं श्री जैनागमाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कृत्रिमाकृत्रिम जिनबिम्बों की, अर्चा करते बारम्बार।
अल्पकाल में भव्य जीव वह, शिवपद पाते अपरम्पार।।8।।
ॐ ह्रीं श्री जिनचैत्यभ्याः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कृत्रिमाकृत्रिम जिनचैत्यालय, तीन लोक में रहे महान्।
अष्ट द्रव्य से पूजा करके, गाते हैं प्रभु का गुणगान।।9।।
ॐ ह्रीं जिनचैत्यालयेभ्याः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जाप्य-ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिन धर्म जिन आगम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

दोहा- पूजनीय नवदेवता, जग में रहे त्रिकाल।
भाव सहित गाते यहाँ, उनकी हम जयमाल।।

(वीर छन्द)

नव कोटी से नवदेवों के, पद पंकज में करें प्रणाम।
निज स्वरूप के ज्ञान हेतु हम, सबको ध्याते आठों याम।।
धन्य धन्य अरहंत परम प्रभु, चार घातिया कर्म विहीन।
सर्व लोक के ज्ञाता दृष्टा, सम्यक् केवल ज्ञान प्रवीण।।1।।
सहज ज्ञान स्वरूप धन्य हैं, सिद्ध महाप्रभु महिमावंत।
त्रैकालिक ध्रुव गुण अनंत के, धारी सिद्ध अनंतानंत।।
पञ्चाचार परायण अनुपम, धन्य धन्य आचार्य महान्।
शिक्षा दीक्षा दाता गुरुवर, भव्यों को दें सम्यक्ज्ञान।।2।।
उपाध्याय मुनिधन्य लोक में, द्वादशांग श्रुत के धारी।
ज्ञाता द्रव्य भाव श्रुत के शुभ, मोक्ष पंथ के अधिकारी।।
रत्नत्रय का पालन करते, ज्ञान ध्यान तप रहते लीन।
विषयाशा के त्यागी मुनिवर, होते सम्यक् ज्ञान प्रवीण।।3।।
धर्म वस्तु स्वभाव रूप है, सर्व जगत में रहा महान।
परम अहिंसामयी धर्म शुभ, जीवों का करता कल्याण।।
स्याद्वाद रवि से आलोकित, सुर नर पूजित लोक महान्।
सन्देहादिक दोष रहित शुभ, सप्त तत्त्व का जिसमें ज्ञान।।4।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

अर्हन्तों की प्रातिहार्य युत, निर्विकार मुद्रा पावन।
काष्ठ उपल धातू का अनुपम, बिम्ब बना है मनभावन॥
घंटा तोरण से सुसज्जित, परकोटा संयुक्त महान्।
कलश युक्त शुभ शिखर मनोहर, से दिखती हैं ऊँची शान॥5॥
दोहा- पूजा कर नव देव की, पूज्य बनें धीमान्।
धन वैभव सुख प्राप्त कर, करें आत्मकल्याण॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधु जिन धर्म जिनागम जिनचैत्य चैत्यालयेभ्यो: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नवदेवों की भक्ति से, हो कर्मों का नाश।
'विशद' ज्ञान पाकर शुभम्, होवे मुक्ती वास॥

(इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजन

(स्थापना)

दोहा- ऋषभादिक चौबीस जिन, जग में हुए महान।
विशद हृदय में आज हम, करते हैं, आह्वान्॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। ॐ ह्रीं चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

यह शीतल जल भर लाए, निज प्यास बुझाने आए।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन भवताप नशाए, हम ताप नशाने आए।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥2॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हम अक्षत नाथ चढ़ाएँ, निज अक्षय निधि प्रगटाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥3॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, प्रभु शील सम्पदा पाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥4॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

संज्ञा आहार विनशाएँ, रुज क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी॥5॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

मिथ्या का घोर अँधेरा, नश जाए अब प्रभु मेरा।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।6।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अब घाती कर्म नशाएँ, निज गुण अपने प्रगटाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।7।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल कर्म का है दुखकारी, अब फले सुगुण की क्यारी।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।8।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आतम शक्ती जगाएँ, पावन यह अर्घ्य चढ़ाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।9।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- पद तीर्थंकर का प्रभू, पाए मंगलकार।
जयमाला गाते यहाँ, पाने भव से पार।।

(चौपाई)

आदिनाथ आदी में आए, अजित नाथ सब कर्म नशाए।
सम्भवनाथ कहे जग नामी, अभिनन्दन हैं शिव पथगामी।।
सुमतिनाथ शुभ मति के धारी, पद्मप्रभू जग मंगलकारी।
जिन सुपार्श्व महिमा दिखलाए, चन्द्र प्रभु चन्दा समगाए।।
सुविधिनाथ है जग उपकारी, शीतल जिन शीतलता धारी।
जिन श्रेयांस जी श्रेय जगाए, वासुपूज्य जग पूज्य कहाए।।
विमलनाथ कर्मों के जेता, जिनानन्त हैं कर्म विजेता।
धर्मनाथ हैं धर्म के धारी, शांतिनाथ जग शांतीकारी।।
कुन्थुनाथ के गुण जग गाये, अरहनाथ पद शीश झुकाए।
मल्लिनाथ सब कर्म हटाए, मुनिसुव्रत पावन व्रत पाए।।
नमीनाथ पद नमन हमारा, नेमिनाथ दो हमें सहारा।
पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता, ढोक वीर पद में जग देता।।
चौबिस जिन महिमा के धारी, कहे स्वयंभू जिन अविकारी।
जो इनके पद पूज रचाये, पुण्य निधी वह प्राणी पाए।।
जिन की महिमा यह जग गाये, अर्चाकर सौभाग्य जगाए।
भाग्य उदय मेरा अब आया, नाथ आपका दर्शन पाया।।
द्वार आपका अतिशयकारी, श्रावक सुधि आते अनगारी।
भक्ति भाव से महिमा गाते, पद में सविनय शीश झुकाते।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

गाते हैं जो भजनावलियाँ, खिलती हैं भक्ती की कलियाँ।
भाव बनाकर हम यह आये, शिव पद हमको भी मिल जाए॥

दोहा- शिव पद के धारी हुए, तीर्थंकर चौबीस।
जिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- पूजा करते आपकी, तीन लोक के नाथ।
राह दिखाओ मोक्ष की, चरण झुकाते गाथ॥

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री आदिनाथ पूजन

(स्थापना)

जो कर्म भूमि के समय श्रेष्ठ, षट्कर्मों का उपदेश किए।
तुम ऋषी बनो या कृषी करो, जीवों को यह संदेश दिए॥
ऐसे श्री ऋषभ देव स्वामी, जो धर्म प्रवर्तक कहलाए।
हम आदिनाथ का आह्वानन, करने को चरणों में आए॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आहवाननं। ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

यह कलश में जल भर लाए, जल धार कराने आए।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

केशर चन्दन में गारा, भव ताप नाश हो सारा।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय से पूजा रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लाए, अब क्षुधा नशाने आए।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

है मोह कर्म का नाशी, ये दीपक ज्ञान प्रकाशी।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।
फल सरस चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।
वसु द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ।
श्री आदिनाथ को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
दोहा- शांतीधारा जो करें, पावें शांती अपार।
शिवपद के राही बनें, होवें भव से पार।।
।। शान्तेय-शान्तिधारा ।।
दोहा- पुष्पाञ्जलिं करते विशद, लेकर पावन फूल।
कर्म अनादी से लगे, हो जाते निर्मूल।।
।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत।।

पञ्चकल्याणक

(मोतियादाम छन्द)

आषाढ़ वदि द्वितीया रही महान, प्रभु जी पाए गर्भ कल्याण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।1।।
ॐ ह्रीं आषाढ़वदि द्वितीयायां गर्भकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र वदि नौमी को भगवान, प्राप्त शुभ किए जन्मकल्याण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।2।।
ॐ ह्रीं चैत्रवदि नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चैत्र वदि नौमी को शुभकार, प्रभु ने संयम लीन्हा धार।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।3।।
ॐ ह्रीं चैत्रवदि नवम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
वदी फाल्गुन एकादशी जान, प्रभु जी पाए केवलज्ञान।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।4।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनवदि एकादश्यां केवलज्ञानकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
माघ वदि चौदश हुई महान, कैलाशगिरि से पाए निर्वाण।
पूजते आदिनाथ पद आज, बने जो तारण तरण जहाज।।5।।
ॐ ह्रीं माघवदि चतुर्दश्यां मोक्षकल्याण प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

शीश झुकाते आपके, चरणों बालाबाल।
आदिनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

(चौबोला छन्द)

आदिनाथ तीर्थंकर स्वामी, धर्म प्रवर्तन किए महान।
निज स्वभाव में लीन हुए प्रभु, पाए शाश्वत मुक्ती धाम॥
जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, नगर अयोध्या महति महान।
चयकर के सर्वार्थ सिद्धि से, पाए प्रभू गर्भ कल्याण॥1॥
पाण्डु शिला पे हर्ष भाव से, इन्द्र किए प्रभु का अभिषेक॥
नाम दिया सौधर्म इन्द्र ने, प्रभु के पग में लक्षण देख॥
षट् कर्मों का राज्य अवस्था, में ही दिए आप संदेश।
नृत्य देखकर नीलाञ्जना का, संयम धारे प्रभु विशेष॥2॥
सिद्धारथ वन में जा प्रभु ने, निज आतम का किया मनन।
एक हजार वर्ष तप करके, शुक्ल ध्यान में हुए मगन॥
कर्म घातियाँ नाश प्रभु ने, पाया पावन केवलज्ञान।
इन्द्राज्ञा पा धन कुबेर ने, समवशरण कीन्हा निर्माण॥3॥
गंध कुटी में कमलाशन पर, अधर विराजे जिन तीर्थेश।
ॐकारमय दिव्य देशना, द्वारा दिए भव्य संदेश॥
अष्टापद पर जाके प्रभु जी, किए कर्म का पूर्ण विनाश।
मोक्ष महापद को पाकर के, सिद्धशिला पर कीन्हे वास॥4॥
किए प्रतिष्ठित जिन प्रतिमाएँ, नगर नगर में आभावान।
विशद भाव से जिनके चरणों, करते हैं हम भी गुणगान॥
नाथ आपकी अर्चा करके, मेरे मन जागा आनन्द।
पुण्योदय जागा है मेरा, हुआ पाप आश्रव भी मंद॥5॥

(घत्ता छंद)

हे आदीश्वर! प्रथम जिनेश्वर, भव संताप विनाश करो।
हम तुमको ध्याते पूज रचाते, मेरे उर में वास करो॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीन लोक में पूज्य है, आदिनाथ दरबार।
जिनकी अर्चा से मिले, मोक्ष महल का द्वार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

श्री पद्मप्रभु पूजन

स्थापना

पद्म प्रभु ने पद्म सम, धार लिया वैराग।
तिष्ठाते निज हृदय में, करके पद अनुराग॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

हम निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादी रोग नशाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

चन्दन यह घिसकर लाए, भवताप नशाने आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।2।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत यह यहाँ चढ़ाएँ, हम अक्षय पदवी पाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।3।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह सुरभित पुष्प चढ़ाएँ, हम काम बाण विनसाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।4।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ा हर्षाएँ, हम क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।5।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के यह दीप जलाए, मम मोह नाश हो जाए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।6।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।7।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल यह पूजा को लाए, शिव फल पाने हम आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।8।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पाने अनर्घ्य पद आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।।9।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

चौपाई

गर्भ चिन्ह माँ के उर आये, देव रत्न वृष्टी करवाए।
माघ कृष्ण पष्ठी शुभ गाई, उत्सव देव किए सुखदायी।।1।।
ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

कार्तिक शुक्ल त्रयोदशि पाए, सुर नर इन्द्र सभी हर्षाए।
जन्मोत्सव मिल इन्द्र मनाए, आनन्दोत्सव श्रेष्ठ कराए।।2।।
ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सुदि तेरस शुभकारी, संयम धार हुए अनगारी।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, जग जंजाल छोड़ वन आए।।3।।
ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल की पूनम पाए, विशद ज्ञान प्रभु जी प्रगटाए।
धर्म देशना आप सुनाए, इस जग को सत्पथ दिखलाए।।4।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी भाई, के दिन प्रभु ने मुक्ती पाई।
अपने सारे कर्म नशाए, तज संसार वास शिव पाए।।5।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- पद्मासन पद में पदम, पद्म प्रभु भगवान।
जयमाला गाते विशद, पाने शिव सोपान।।

(मानव छन्द)

चरण में भक्ती से शत् इन्द्र, झुकाते प्रभु चरणों में शीश।
कहाए पद्मप्रभु भगवान, जगत में जगती पति जगदीश।।1।।
अनुत्तर वैजयन्त से आप, चये कौशाम्बी नगरी आन।
धरण नृप रही सुसीमा मात, गर्भ में कीन्हे आप प्रयाण।।2।।
दाहिने पग में कमल का चिन्ह, इन्द्र ने देख दिया शुभ नाम।
कराए न्हवन मेरु पे इन्द्र, चरण में कीन्हे सभी प्रणाम।।3।।
जगा प्रभु के मन में वैराग, सकल संयम धर हुए मुनीश।
ऋद्धियाँ प्रगटी अपने आप, अतः कहलाए आप ऋशीष।4।।
स्वयंभू बनकर के भगवान, जगाए अनुपम केवलज्ञान।
रचाएँ समवशरण तब देव, रहा विधि का कुछ यही विधान।।5।।
पूर्ण कर आयू कर्म अशेष, किए सब कर्मों का प्रभु नाश।
समय इक में सिद्धालय जाय, वहाँ पर कीन्हे आप निवास।।6।।
दोहा-प्रभु अनन्त ज्ञानी हुए, गुण अनन्त की खान।
गुण गाते निज भाव से, मिले मुक्ति का यान।।
ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- इन्द्रिय जेता आप हो, बने आप भगवान।
अतः इन्द्र शत आपका, करें 'विशद' गुणगान।।
।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

श्री चन्द्रप्रभु जिन पूजन

स्थापना

सोरठा- **कांती चन्द्र समान, चन्द्र प्रभु भगवान की।**
भाव सहित आह्वान, हृदय कमल में आपका॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल टप्पा)

निर्मल जल यह प्रासुक करके, हम लाए भाई।
जन्म जरादी रोग नाश हो, जो है दुखदायी॥
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥1॥ पूजते...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन में केसर की खुशबू, अतिशय महकाई।
भवाताप हो नाश हमारा, चर्च रहे भाई॥
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥2॥ पूजते...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अक्षत धवल मनोहर, लाए हर्षाई।
अक्षय पद पाएँ हम जिसकी, फैली प्रभुताई॥

पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥3॥ पूजते...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित पुष्पों ने इस जग में, महिमा दिखलाई।
जिन भक्तों ने काम रोग से, भी मुक्ती पाई।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥4॥ पूजते...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

ताजे यह नैवेद्य बनाए, हमने सुखदायी।
क्षुधा रोग हो नाश हमारा, महिमामय भाई॥
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥5॥ पूजते...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नमयी शुभ घी के दीपक, अनुपम प्रजलाई।
महामोह तम जिन अर्चा से, क्षण में नश जाई।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई॥6॥ पूजते...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप अग्नि में खेने से शुभ, धूम उड़े भाई।
नशें कर्म आठों अब मेरे, जो है दुखदायी।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।7।। पूजते...
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस ताजे फल लाए, पावन सुखदायी
महामोक्ष फल पाय जिसकी, फैली प्रभुताई।।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।8।। पूजते...
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाया, हमने शुभ भाई।
पद अनर्घ्य पाने हम आए, मन में हर्षाई।।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।9।। पूजते...
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चालछन्द)

पाँचें वदि चैत निराली, जिनगृह में छाई लाली।
गर्भागम देव मनाए, जिन माँ के गर्भ में आए।।1।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि आई, सारी जगती हर्षाई।
सुर जन्म कल्याण मनाएँ, सब ताण्डव नृत्य कराएँ।।2।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि पाए, जिनवर वैराग्य जगाए।
क्षण भंगुर यह जग जाना, निजका स्वरूप पहचाना।।3।।
ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि सातें जानो, प्रभु हुए केवली मानो।
सुर समवशरण बनवाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।।4।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन सुदि सातें पाई, मुक्ती वधु जो परणाई।
प्रभु सारे कर्म नशाए, शिवपुर में धाम बनाए।।5।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ल सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- भक्ती से भवि जीव का, कटे कर्म जंजाल।
मुक्ती पाने के लिए, गाते हैं जयमाल।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

(चाल टप्पा)

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, चन्द्र पुरी गाई।
वैजयन्त से चयकर माँ के, गर्भ आए भाई॥
चन्द्र प्रभु जिन मंगलदायी।
जिनकी अर्चा कर जीवों ने, मुक्ति श्री पाई॥1॥
चन्द्र प्रभु जिन मंगलदायी।
गर्भागम पूरा होने पर, जन्म घड़ी आई।
न्हवन कराया शत् इन्द्रों ने, जग मंगलदायी॥2॥
चन्द्र प्रभु जिन मंगलदायी।
दायें पग में अर्धचन्द्र शुभ, लक्षण है भाई।
आयू लाख पूर्व दश की प्रभु, पाए सुखदायी॥3॥
चन्द्र प्रभु जिन मंगलदायी।
धवल रंग था धनुष डेढ़ सौ, प्रभु की ऊँचाई।
तड़ित चमकता देख प्रभू ने, जिन दीक्षा पाई॥4॥
चन्द्र प्रभु जिन मंगलदायी।
कर्म घातिया नाश प्रभू ने, ज्ञान निधी पाई।
धन कुबेर ने समवशरण की, रचना बनवाई॥5॥
चन्द्र प्रभु जिन मंगलदायी।

दोहा- आत्म ध्यान करके प्रभू, कीन्हे कर्म विनाश।
शिव नगरी में जा किया, सिद्ध शिला पर वास॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- भक्ती करते भक्तगण, होके भाव विभोर।
शिव पद के राही बनें, बढ़े मोक्ष की ओर॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री पुष्पदन्त पूजा-

स्थापना (सोरठा)

पुष्पदन्त भगवान, शिवपथ के राही बने।
करते हम आह्वान, रत्नत्रय निधि के लिए॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(रेखता छन्द)

यह चरण चढ़ाने लिया नीर, अब रोग त्रय की मिटे पीर।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

फैले चन्दन की बहु सुवास, हो भवाताप का पूर्ण नाश।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

अक्षत ले पूजा करें आज, अब मोक्ष महल का मिले ताज।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।3॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

यह पूजा करने लिए फूल, अब काम रोग का नशे मूल।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।4॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

यह चरू चढ़ाते हैं महान, अब क्षुधा रोग की होय हान।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।5॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम करें दीप से जग प्रकाश, अब मोह महातम होय नाश।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।6॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

शुभ खेने लाए यहाँ धूप, नश कर्म प्राप्त हो निज स्वरूप।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।7॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से हम पूजा करें देव, अब मोक्ष महाफल मिले एव।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।8॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चढ़ा रहे यह श्रेष्ठ अर्घ्य, पद हम भी पाएँ शुभ अनर्घ्य।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।9॥
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(छन्द)

फागुन कृष्णा नौमी प्रधान, प्रभु स्वर्ग से चय आये महान।
तव देव किए मिल नमस्कार, जो रत्नवृष्टि कीन्हे अपार।।1॥
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित मार्ग शीर्ष एकम विशेष, प्रभु पुष्पदन्त जन्मे जिनेश।
देवों ने कीन्हा नृत्य गान, शुभ न्हवन कराए हर्ष मान।।2॥
ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित मार्ग शीर्ष एकम जिनेश, दीक्षा धारे जिनवर विशेष।
मन में जगा जिनके विराग, फिर किए प्रभु जी राग त्याग।।3॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल द्वितिया महान, प्रगटाएँ प्रभु कैवल्य ज्ञान।
शुभ समवशरण रचना अपार, सुर किए जहाँ पर भक्ति धार॥4॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन शुक्ला आठें ऋशीष, प्रभु सिद्ध शिला के हुए ईश।
जिनके गुण गाते हैं सुदेव, भक्ती रत रहते हैं सदैव॥5॥

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- मंगलमय भगवान हैं, मंगल जिनका नाम।
मंगलमय जयमाल गा, करते चरण प्रणाम॥

(छन्द वेसरी)

पुष्पदन्त तीर्थंकर गाए, प्राणत स्वर्ग से चयकर आये।
पितु सुग्रीव मात जयरामा, काकन्दी नगरी का नामा॥1॥
मगर चिन्ह दाँये पद पाए, इक्ष्वाकु कुल नन्दन गाए।
धनुष एक सौ ऊँचे जानो, धवल रंग तन का शुभ मानो॥2॥
दो लख पूर्व की आयु पाये, निष्कंटक प्रभु राज्य चलाए।
उल्का पात देखकर स्वामी, बने मोक्ष पथ के पथगामी॥3॥

दीक्षा सहस्र भूप संग पाए, दीक्षा वृक्ष पुष्प कहलाए।
प्रभु जब केवल ज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए॥4॥
ब्रह्म आपका यक्ष कहाए, काली आप यक्षिणी पाए।
गणधर आप अठासी पाए, गणधर प्रमुख नाग कहलाए॥5॥
सर्व ऋषी दो लाख बताए, गुण छियालिस प्रभु जी के गाए।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, "विशद" हुए मुक्ती पथगामी॥6॥

दोहा- शुक्रारिष्ट नाशक प्रभू, पुष्पदन्त भगवान।
जीवन मंगलमय बने, करते तव गुण गान॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- करें चरण की वन्दना, जग के सारे जीव।
शिव पद में कारण बने, पावें पुण्य अतीव।

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री शीतलनाथ पूजन

स्थापना (सोरठा)

पाया शिव सोपान, शीतलनाथ जिनेन्द्र ने।
निज उर में आह्वान, करते हैं हम भाव से॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

(छन्द मोतिया दाम)

चढ़ाते प्रभु यह निर्मल नीर, मिले भव सागर का अब तीर।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

घिसाया चन्दन यह गोशीर, मिटे अब मेरी भव की पीर।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते अक्षत यहाँ महान, मिले अक्षय पद मुझे प्रधान।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प यह सुरभित लिए विशेष, चढ़ाते तव पद यहाँ जिनेश।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

बनाए चरु हमने रसदार, चाहते हम आतम उद्धार।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जलाते हम यह दीप प्रजाल, ज्ञान अब जागे मेरा त्रिकाल।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

जलाएँ अग्नी में यह धूप, प्रकट हो मेरा निज स्वरूप।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते ताजे फल रसदार, प्राप्त हो हमको पद अनगार।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते अर्घ्य यहाँ पर आज, मिले शिवपद का अब स्वराज।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

शुभ चैत कृष्ण आठें महान, को देव किए मिल यशोगान।
प्रभु शीतल जिनवर गर्भधार, महिमा दिखलाए सुर अपार।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुभ माघ कृष्ण द्वादशी सुजान, जन्मे शीतल जिनवर महान।
शत् इन्द्र किए आके प्रणाम, जिन शीतल प्रभु का दिए नाम।।2।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

प्रभु माघ कृष्ण द्वादशी वार, दीक्षावन में जा लिए धार।
जिन सर्व परिग्रह से विहीन, निज आत्मध्यान में हुए लीन॥3॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पौष कृष्ण चौदश महान, प्रकटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान।
तब समवशरण रचना अनूप, कई देव किए पद झुके भूप॥4॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्विन शुक्ला आठ जिनेश, मुक्ती पद पाए हैं विशेष। कर्मों को करके आप नाश, प्रभु सिद्धशिला पर किए वास॥5॥

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ल अष्टमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- शीतलनाथ जिनेन्द्र का, जपें निरन्तर नाम।
जयमाला गाएँ विशद, करके चरण प्रणाम॥

(मोतिया दाम)

स्वर्ग आरण से चयकर आय, नगर महिलपुर में सुखदाय।
गर्भ पाए शीतल जिन राय, इन्द्र रत्नों की वृष्टि कराय॥1॥

पिता दृढ़रथ हैं जिनके भ्रात, प्रभू की रही सुनन्दा मात।
जन्म जब पाए जिन तीर्थेश, धरा पर खुशियाँ हुई विशेष॥2॥
मनाए जन्मोत्सव तब देव, करें जिनवर की जो नित सेव।
कल्पतरु लक्षण रहा महान, आयु इक लाख पूर्व की मान॥3॥
प्राप्त करके पद युवराज, चलाया कई वर्षों तक राज।
देखकर हिम का प्रभू विनाश, किए निज आतम का आभास॥4॥
स्वयंभू जिन ने दीक्षाधार, किया कर्मों को प्रभु ने क्षार।
जगाया अनुपम केवल ज्ञान, प्रभू ने किया जगत कल्याण॥5॥
प्रथम गणधर का कुन्थू नाम, सतासी गणधर करें प्रणाम।
कूट विद्युतवर से जिनराज, प्राप्त कीन्हे शिवपुर का ताज॥6॥

दोहा- कर्म शृंखला नाशकर, हुए मोक्ष के ईश।
जिनके चरणों में 'विशद', झुका रहे हम शीश॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जैनागम जिन धर्म के, विशद आप आधार।
भक्त चरण वन्दन करें, कर दो भव से पार॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

श्रीवासुपूज्य जिन पूजन

स्थापना (सोरठा)

वासुपूज्य भगवान, जगत पूज्यता पाए हैं।
हृदय करें आह्वान, पूजा करने के लिए।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दोहा- जिन चरणों में नीर की, देते हम त्रय धार।
रोग त्रय का नाशकर, पाएँ भवदधि पार।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

मलयागिरि चन्दन घिसा, चढ़ा रहे हम नाथ।
भव से मुक्ती दीजिए, झुका रहे हम माथ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अक्षत के यहाँ, भर लाए हम थाल।
अक्षय पद पाएँ प्रभू, गाते हैं गुणमाल।।3।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाते भाव से, काम रोग हो नाश।
मुक्ती हो संसार से, पाए शिव पद वास।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

चढ़ा रहे नैवेद्य यह, तुम चरणों भगवान।
क्षुधा रोग का नाश हो, पाएँ पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का यह दीपक लिया, करके यहाँ प्रजाल।
ज्ञान दीप जगमग जले, गाते हम जयमाल।।6।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप जलाते आग में, फैले श्रेष्ठ सुगंध।
अष्ट कर्म का नाश हो, पाएँ आत्मानन्द।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

पूजा करने लाए यह, उत्तम फल रसदार।
विशद भावना भा रहे, पाएँ हम शिव द्वार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का भाव से, चढ़ा रहे यह अर्घ्य।
यही भावना है विशद, पाएँ सुपद अनर्घ्य।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

सोरठा

हो गई माला-माल, षष्ठी कृष्ण अषाढ़ की।
दीन दयाल कृपाल, गर्भ कल्याणक पाए थे।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठीयां गर्भमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

जन्मे जिन भगवान्, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
इन्द्र किए गुणगान, आनन्दोत्सव तव किए॥2॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पकड़ी शिव की राह, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
छोड़ी जग की चाह, संयम धारा आपने॥3॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपोमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया नाश, शिव पद के राही बने।
कीन्हे ज्ञान प्रकाश, भादों शुक्ला दोज को॥4॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल द्वितीयायां ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश, जिन श्रेयांस जी ने किए।
सिद्ध शिला पर वास, सुदी चतुर्दशी भाद्र पद॥5॥

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्षमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- जगत पूज्यता पाए हैं, वासुपूज्य भगवान।
हर्षित हो सुर नर मुनी, करते हैं जयगान॥

(ज्ञानोदय छन्द)

महाशुक्र से चयकर स्वामी, चम्पापुर में आये थे।
इन्द्राज्ञा से देवों ने तव, दिव्य रत्न बरसाए थे॥1॥
जयावती माता है जिनकी, वसूपूज्य है पिता महान।
इक्ष्वाकु शुभ वंश आपका, भैंसा चिन्ह रही पहिचान॥2॥
गर्भागम को पूर्ण किए प्रभु, जन्म कल्याणक तब पाए।
न्हवन कराया मेरुगिरी पर, देव सभी मंगल गाए॥3॥
लाख बहत्तर पूर्व की आयू, सात धनुष ऊंचाई जान।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, जाति स्मरण पाए महान॥4॥
दीक्षा धारण किए प्रभू जी, छह सौ राजाओं के साथ।
केवलज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए आप त्रैलोकी नाथ॥5॥
छियासठ गणधर रहे प्रभु के, मंदर जिनमें रहे प्रधान।
कर्म नाशकर चम्पापुर से, पाए प्रभु जी पद निर्वाण॥6॥

दोहा- चम्पापुर में आपके, हुए पञ्च कल्याण।
भक्त पुकारें आपको, दो प्रभु जी अब ध्यान॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- भक्ती से मुक्ती मिले, कहते ऐसा लोग।
'विशद' भक्ति का हे प्रभू, दो हमको अब योग॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

श्री शांतिनाथ जिन पूजा

शांतिनाथ शांती के दाता, इस जग में कहलाए हैं।
भक्त चरण की भक्ती करने, का सौभाग्य जगाए है॥
अतिशयकारी जिन प्रतिमाएँ, शांतिनाथ की महति महान।
श्री जिनेन्द्र की अर्चा करने, करते हम उर में आह्वान॥
दोहा- शांती पाने के लिए, आए आपके द्वार।
विशद वन्दना कर रहें, पद में बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(केसरी छन्द)

प्रासुक हमने नीर कराया, शिवपद पाने यहाँ चढ़ाया।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन यहाँ चढ़ाने लाए, भव सन्ताप नाश हो जाए।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥2॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हमने यहाँ चढ़ाए, अक्षय पद पाने हम आए।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥3॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाते यह शुभकारी, काम नाश हो हे त्रिपुरारी
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥4॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाने लाए, क्षुधा नाश करने हम आए।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥5॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोह तिमिर का नाशनकारी, दीप चढ़ाते मंगलकारी।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥6॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में यह धूप जलाएँ, कर्म नाश सारे हो जाएँ।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥7॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल से पूज रहे जिनस्वामी, हम भी बने मोक्ष पथ गामी।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥8॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाएँ, पद अनर्घ हम भी पा जाएँ
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी॥9॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

भादों कृष्ण सप्तमी जानो, प्रभू गर्भ में आये मानो।
दिव्य रत्न खुश हो वर्षाए, देव सभी तब हर्ष मनाए।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण सप्तम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस को स्वामी, जन्मे शांतिनाथ शिवगामी।
सारे जग ने हर्ष मनाया, जिनवर का जयकारा गाया।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चौदस भाई, शांतिनाथ जिन दीक्षा पाई।
जिनके मन वैराग्य समाया, छोड़ चले इस जग की माया।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल दशमी शुभकारी, विशद ज्ञान पाये त्रिपुरारी।
ॐकार मय ध्वनि गुंजाए, भव्यों को शिवराह दिखाए।।4।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस शुभ गाई, शांतिनाथ जिन मुक्ती पाई।
प्रभु ने सारे कर्म नशाए, शिवपुर अपना धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- शांति प्रदायिक शांति जिन, तीनों लोक त्रिकाल।
जिनकी गाते भाव से, नत होके जयमाल।।

(छन्द-तामरस)

चिच्चेतन गुणवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।
शांतिनाथ भगवान नमस्ते, वीतराग विज्ञान नमस्ते।।1।।
सम्यक् श्रद्धाधार नमस्ते, विशद ज्ञान के हार नमस्ते।
सम्यक् चारित वान नमस्ते, तपधारी गुणवान नमस्ते।।2।।
जगती पति जगदीश नमस्ते, ऋद्धी धार ऋशीष नमस्ते।
गर्भ कल्याणक वान नमस्ते, प्राप्त जन्म कल्याण नमस्ते।।3।।
तप कल्याणक धार नमस्ते, केवल ज्ञानाधार नमस्ते।
मोक्ष महल के ईश नमस्ते, वीतराग धारीश नमस्ते।।4।।
जन्म के अतिशय वान नमस्ते, ज्ञान के भी दश जान नमस्ते।
देवों के शुभकार नमस्ते, प्रातिहार्य भी धार नमस्ते।।5।।
अनन्त चतुष्टय वान नमस्ते, शुभ छियालिस गुणवान नमस्ते।
करके आतम ध्यान नमस्ते, पाए पद निर्वाण नमस्ते।।6।।

दोहा- शांती के हैं कोष जिन, शांती के आधार।
'विशद' शांति पाए स्वयं, करो प्रभू उद्धार।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती पाने के लिए, भक्त खड़े हैं द्वार।
सुनो प्रार्थना हे प्रभो! बोलें जय-जयकार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन

स्थापना

शनि ग्रह पीड़ा हर कहे, मुनिसुव्रत भगवान।
जिनका करते आज हम, भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई छन्द)

निर्मल नीर भराकर लाए, जन्मादिक रुज मम नश जाए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर से शुभ गंध बनाए, भवाताप हरने हम आए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत चढ़ा रहे मनहारी, अक्षय पद दायक शुभकारी।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ाने लाए, काम रोग मेरा नश जाए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाते भाई, क्षुधा रोग नाशी शिवदाई।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥5॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के हम शुभ दीप जलाएँ, मोह तिमिर से मुक्ति पाएँ।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥6॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में हम धूप जलाएँ, आठों कर्म नाश हो जायें॥
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥7॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल यह सरस चढ़ाते भाई, जो हैं मोक्ष महाफलदायी।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥8॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तायं फलं निर्वपामीति स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
नाथ! आपकी महिमा गाते, पद में सादर शीश झुकाते॥9॥
ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

सावन वदि द्वितिया शुभकारी, मुनिसुव्रत जिन मंगलकारी।
माँ के गर्भ में चयकर आए, रत्नवृष्टि कर सुर हर्षाए॥1॥
ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दशें कृष्ण वैशाख बखानी, जन्म लिए मुनिसुव्रत स्वामी।
इन्द्र देव सेना ले आए, जन्मोत्सव पर हर्ष मनाए॥2॥
ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
अस्थिर भोग जगत के गाए, जान प्रभु जी दीक्षा पाए।
घोर सुतप कर कर्म नशाए, दशें कृष्ण वैशाख सुहाए॥3॥
ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण दशम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नोमी कृष्ण वैशाख सुहानी, हुए प्रभु जी केवल ज्ञानी।
जगमग-जगमग दीप जलाए, सुरनर दीपावली मनाए॥4॥
ॐ ह्रीं वैशाख कृष्ण नवम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि द्वादशी शुभकारी, मुक्ती पाए जिन त्रिपुरारी।
कूट निर्जरा से शिवपद पाए, शिवपुर अपना धाम बनाए॥5॥
ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा-मुनिसुव्रत भगवान की, रही निराली चाल।
भव सुख पाते जीव जो, गाते हैं जयमाल॥

(नरेन्द्र छंद)

प्राणत स्वर्ग से मुनिसुव्रत जिन, चयकर के जब आये।
राजगृही में खुशियाँ छाईं, जग जन सब हर्षाए॥1॥
नृप सुमित्र के राज दुलारे, जय श्यामा माँ गाई।
गर्भ समय पर रत्न इन्द्र कई, वर्षाये थे भाई॥2॥
तीन लोक में खुशियाँ छाईं, घड़ी जन्म की आई।
सहस्राष्ट लक्षण के धारी, बीस धनुष ऊँचाई॥3॥
न्हवन कराया देवेन्द्रों ने, कछुआ चिह्न बताया।
बीस हजार वर्ष की आयू, श्याम रंग शुभ गाया॥4॥
उल्कापात देखकर स्वामी, शुभ वैराग्य जगाए।
पञ्च मुष्ठि से केश लुंचकर, मुनिवर दीक्षा पाए॥5॥
आत्म ध्यान कर कर्म घातिया, नाश किए जिन स्वामी।
केवलज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए मोक्ष पथगामी॥6॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

गिरि सम्मेद शिखर के ऊपर, निर्जर कूट बताई।
उस पावन भूमी से प्रभु ने, मोक्ष लक्ष्मी पाई।।7।।

दोहा-अष्टादश गणधर रहे, सुप्रभ प्रथम गणेश।
कूट निर्जरा से प्रभु, नाशे कर्म अशेष।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-मुनिसुव्रत भगवान का, जपें निरन्तर नाम।
इस भव के सुख प्राप्त कर, पावें वे शिवधाम।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्) ।।

श्री नेमिनाथ पूजन

स्थापना

पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, तीर्थंकर पद पाते हैं।
इन्द्राज्ञा पा धन कुबेर तव, समवशरण बनवाते हैं।।
नेमिनाथ तीर्थंकर जिनकी, अर्चा करते महति महान्।
विशद हृदय में श्री जिनेन्द्र का, भाव सहित करते आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सखी छंद

प्रभु निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

केसर ये धवल चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत ये धवल चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

ये पुष्प चढ़ाने लाए, मम काम रोग नश जाए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य सरस सुखदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत के यह दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

यह धूप जलाते भाई, जो है पावन शिवदायी।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल यहाँ चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, शास्वत शिव-पदवी पाएँ।
हम जिन पद पूज रचाते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चाल छन्द)

भूलोक पूर्ण हर्षाया, गर्भागम प्रभु ने पाया।
कार्तिक सुदि षष्ठी पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठम्यां गर्भमंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी स्वामी, जन्मे जिन अन्तर्यामी।
भू पे छाई उजियाली, पा दिव्य दिवाकर लाली।।2।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी गाई, नेमी जिन दीक्षा पाई।
पशुओं का बन्धन तोड़ा, इस जग से मुख को मोड़ा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां तपमंगल मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन सुदि एकम जानो, प्रभु ज्ञान जगाए मानो।
शिव पथ की राह दिखाए, जीवों को अभय दिलाए।।4।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सातें आषाढ़ सुदि गाई, भव से प्रभु मुक्ती पाई।
नश्वर शरीर यह छोड़े, कर्मों के बन्धन तोड़े।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल सप्तम्यां मोक्षमंगल प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- जिन अर्चा जो भी करें, वे हों मालामाल।
नेमिनाथ भगवान की, गाएँ नित गुणमाल।।

(तोटक छन्द)

जय नेमिनाथ चिद्रूपराज, जय जय जिनवर तारण जहाज।
जय समुद्र विजय जग में महान, प्रभु शिवादेवि के गर्भ आन।।1।।
अनहद बाजों की बजी तान, सुर पुष्प वृष्टि कीन्हे महान।
सुर जन्म कल्याणक किए आन, है शंख चिन्ह जिनका प्रधान।।2।।
ऊँचाई चालिस रही हाथ, इक सहस आठ लक्षण सनाथ।
है श्याम रंग तन का महान, इस जग में जिनकी अलग शान।।3।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

जीवों पर करुणा आप धार, मन में जागा वैराग्य सार।
झंझट संसारी आप छोड़, गिरनार गये रथ आप मोड़।।4।।
कर केश लुंच व्रत लिए धार, संयम धारे हो निर्विकार।।
फिर किए आत्म का प्रभू ध्यान, तब जगा आपको विशद ज्ञान।।5।।
तब दिव्य देशना दिए नाथ, सुर नर पशु सुनते एक साथ।
फिर करके सारे कर्म नाश, गिरनार से पाए मोक्ष वास।।6।।

दोहा- भोगों को तज योग धर, दिए 'विशद' सन्देश।
वरने शिव रानी चले, धार दिगम्बर भेष।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- गुणाधार योगी बने, अपनाया शिव पंथ।
मोक्ष महल में जा बसे, किया कर्म का अंत।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजन

(स्थापना) (सखी छन्द)

जय उपसर्गों पर पाए, वे पार्श्वनाथ कहलाए।
जिनकी महिमा जग गाए, हम आह्वानन् को आए।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

अर्घ-(शम्भू छन्द)

क्षीरोदधि का पय सम जल प्रभु, धारा देने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

मलयागिर चन्दन केसर घिस, चरण चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय सुख पाने को अक्षत, पुञ्ज चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरतरु के यह सुमन मनोहर, नाथ चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

घृत के यह नैवेद्य सरस शुभ, ताजे नाथ बनाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

गौघृत भर कंचन दीपक में, दीपक ज्योति जलाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कृष्णागरू की धूप बनाकर, अग्नी बीच जलाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

पिस्ता अरु बादाम सुपारी, थाल में श्रीफल लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत आदिक से, हम यह अर्घ्य बनाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

वैशाख कृष्ण द्वितिया प्रभू, पाए गर्भ कल्याण।
चय हो अच्युत स्वर्ग से, भूपर किए प्रयाण।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे पारस नाथ।
सुर नरेन्द्र देवेन्द्र सब, चरण झुकाए माथ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषबदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, छोड़ दिया परिवार।
संयम धारण कर बने, पार्श्व प्रभू अनगार।।3।।

ॐ ह्रीं पौषबदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण वदि चौथ को, पाए केवल ज्ञान।
समवशरण रचना किए, आके देव प्रधान।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, करके आतम ध्यान।
कर्म नाश करके प्रभू, पाए पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- ध्यान लगाया आपने, जीते सब उपसर्ग।
गुण माला गाते विशद, पाने हम अपवर्ग।।

(राधेश्याम छन्द)

इन्द्र नरेन्द्र महेन्द्र सुरेन्द्र, गणेन्द्र सुमहिमा गाते हैं।
जिनवर के पञ्च कल्याणक में, खुश हो जयकार लगाते हैं।।1।।
जब गर्भागम में प्रभु आते, तब रत्न वृष्टि करते भारी।
यह तीर्थंकर प्रकृति का फल, इस जग में गाया शुभकारी।।2।।
जब जन्म कल्याणक होता है, तब यशोगान सुर करते हैं।
तीनों लोकों के जीव सभी, उस समय भाव शुभ करते हैं।।3।।
इस जग में रहकर के स्वामी, इस जग में न्यारे रहते हैं।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

सबसे रहते हैं वह विरक्त, सब उनको अपना कहते है।।4।।
गुणगान करें सब जीव सदा, यह पुण्य की ही बलिहारी है।
जो उभय लोक में जीवों को, होता शुभ मंगलकारी है।।5।।
सब कर्म नाश करके स्वामी, मुक्ती पथ पर बढ़ जाते हैं।
है शिवनगरी में सिद्धशिला, जिस पर निज धाम बनाते हैं।।6।।

दोहा- यह संसार असार है, जान सके ना नाथ।
आज ज्ञान हमको हुआ, अतः झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- भक्त कई तारे प्रभू, आई हमारी बार।
पास बुलालो शीघ्र ही, अब ना करो अवार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं।।

श्री महावीर पूजन

स्थापना (दोहा)

महावीर भगवान का, करते हैं शुभ ध्यान।
विशद हृदय में आज हम, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(मोतियादाम छन्द)

हम चढ़ा रहें हैं यहाँ नीर, जन्मादिक की अब मिटे पीर।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान।।1।।

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

महके चन्दन की बहु सुवास, संसार ताप का होय नाश।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान।2।।

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

यह चढ़ा रहे अक्षत महान, हम अक्षय पद पायें प्रधान।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान।।3।।

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ाते यहाँ खास, अब काम रोग का हो विनाश।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान।।4।।

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाते यहाँ आन, हो क्षुधा रोग की पूर्ण हान।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान।।5।।

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम दीप से करते हैं प्रकाश, अब मोहमहातम होय नाश।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान।।6।।

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

यह जला रहे हैं यहाँ धूप, अब नश जायें वसु कर्म भूप।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान।।7।।

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल यहाँ चढ़ाते हैं जिनेश, पायें हम मुक्ती फल विशेष।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान।।8।।

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्तायं फलं निर्व. स्वाहा।

हम चढ़ा रहे हैं यहाँ अर्घ्य, हो सुपद प्राप्त हमको अनर्घ्य।
हे वीर प्रभू जग में महान, अब करो मुक्ति हमको प्रदान।।9।।

ॐ ह्री श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

षष्ठी आषाढ़ सुदि पाए, सुर रत्न की झड़ी लगाए।
चहुँ दिश में छाई लाली, मानो आ गई दिवाली।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस सुदि चैत की आई, जन्मोत्सव की घड़ी गाई।
प्राणी जग के हर्षाए, खुश हो जयकार लगाए।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सित दशमी गाई, प्रभु ने जिन दीक्षा पाई
मन में वैराग्य जगाया, अन्तर का राग हटाया।।3।।

ॐ ह्रीं मगसिर सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सु दशमी पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
सुर समवशरण बनवाए, जिन दिव्य ध्वनि सुनाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाख शुक्ला दशमी केवलज्ञान प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सांकल तोड़े मुक्ती से नाता जोड़े।
कार्तिक की अमावस पाए, शिवपुर में धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- हुआ नहीं होगा नहीं, महावीर सा वीर।
जयमाला गाते यहाँ, पाने भव का तीर।।

(गीता छन्द)

सिद्धार्थ नृप के पुत्र हैं, महावीर जिन कहलाए हैं।
चयकर प्रभु जी स्वर्ग से, कुण्डलपुरी में आए हैं।।1।।
पाए प्रभु जी गर्भ अन्तिम, माता त्रिशला जानिए।
जिन माता देखे स्वप्न सोलह, नाथ वंशी मानिए।।2।।
शुभ जन्म कल्याणक समय पर, न्हवन मेरु पर किए।
शत् इन्द्र चरणों भक्ति से, नत ढोक चरणों में दिए।।3।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर जिन कहलाए हैं।
केहरि सुलक्षण दाएँ पग में, महावीर जिनवर पाए हैं।।4।।
शुभ जाति स्मृति से प्रभू, वैराग्य मन प्रगटाए हैं।
जग भोग ना भाए जिन्हें, संयम "विशद" अपनाए हैं।
प्रभु ध्यान कर निज आत्म का, केवल्य ज्ञान जगाए हैं।।5।।
कर कर्म घाती नाश जिन, अनन्त चतुष्टय पाए हैं।।6।।
फिर कर्म सारे नाश करके, मोक्ष पद पाए अहा!।
पावापुरी का पदम सरवर, मोक्ष स्थल शुभ रहा।।7।।

दोहा- **ज्ञान ध्यान तप कर प्रभू, कीन्हें कर्म विनाश।**
मुक्त हुए संसार से, पाए शिवपुर वाश।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **पूजा करने के लिए, द्रव्य लाए यह शुद्ध।**
सम्यक् दर्शन ज्ञान हम, पाएँ चरण विशुद्ध।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपेत्) ।।

णमोकार पूजा

(स्थापना)

णमोकार महामंत्र जगत में, सब मंत्रों से न्यारा है।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य प्रदायक, अतिशय प्यारा प्यारा है।।
सब मंत्रों का मूल मंत्र है, करते हम उसका अर्चन।
विशद हृदय में आह्वानन् कर, करते हैं शत् शत् वन्दन।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंचनमस्कार मंत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वेसरी छन्द)

क्षीर सिन्धु का जलभर लाए, जन्मादिक रुज हरने आए।
महामंत्र को नित हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन चन्दन यह घिस लाए, भवाताप को हरने आए
महामंत्र को नित हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत मुक्ता फल सम लाए, अक्षय पद पाने को आए।
महामंत्र को नित हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धित लाए स्वामी, जो हैं काम रोग हर नामी।
महामंत्र को नित हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

घृत के शुभ नैवेद्य बनाए, क्षुधा रोग हरने को आए।
महामंत्र को नित हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते॥5॥
ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय क्षुधारोग नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी यह दीप जलाए, मोह महातम हरने आए।
महामंत्र को नित हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते॥6॥
ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय मोहांधकार दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में शुभ धूप जलाएँ, अष्ट कर्म मेरे नश जाएँ।
महामंत्र को नित हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते॥7॥
ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नरियल यह बादाम सुपारी, चढ़ा रहे फल शिव फलकारी।
महामंत्र को नित हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते॥8॥
ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पद अनर्घ्य पाने को लाए।
महामंत्र को नित हम ध्याते, विशद भाव से महिमा गाते॥9॥
ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा दे रहे, नाथ आपके द्वार।
यही भावना है विशद, पाएँ भव से पार॥
॥ शान्तये शान्तिधारा॥

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने सत श्रद्धान।
पूरी हो मनकामना, मिलें सुपद निर्वाण॥
॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत॥

जयमाला

दोहा- परमेष्ठी की वन्दना, प्राणी करें त्रिकाल।
महामंत्र नवकार की, गाते हम जयमाल॥
(चाल छन्द)

हम महामंत्र को गायें, उसमें ही ध्यान लगाएँ।
निज हृदय कमल में ध्यायें, फिर सादर शीश झुकाएँ॥
शुभ पाँच सुपद हैं भाई, पैंतिस अक्षर सुखदायी।
हैं अट्ठावन मात्राएँ, बनती हैं कई विधाएँ॥1॥
प्राकृत भाषा में जानों, बहु अतिशयकारी मानो।
पाँचों परमेष्ठी ध्याते, उनके चरणों सिर नाते॥
पहले अर्हत् को ध्याते, जो केवल ज्ञान जगाते।
फिर सिद्धों के गुण गाते, जो अष्ट गुणों को पाते॥2॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

जो रत्नत्रय के धारी, हैं जन-जन के उपकारी।
हम आचार्यों को ध्याते, जो छत्तिस गुण का पाते।।
जो पच्चिस गुण के धारी, हैं जन-जन के उपकारी।
सब साधू ध्यान लगाते, निज आतम ज्ञान जगाते।।3।।
जो परमेष्ठी को ध्याते, वह परमेष्ठी बन जाते।
फिर कर्म निर्जरा करते, अपने कर्मों को हरते।।
कई अर्हत् पदवी पाते, वह तीर्थंकर बन जाते।
फिर केवल ज्ञान जगाते, कई देव शरण में आते।।4।।
हम यही भावना भाते, जिन पद में शीश झुकाते।
नित परमेष्ठी को ध्यायें, हम भावसहित गुण गायें।।
अनुक्रम से मुक्ति पावें, भवसागर से तिर जावें।
हम शिव सुख में रम जावें, इस भव का भ्रमण नशावें।।5।।
दोहा- महामंत्र के जाप से, नशते हैं सब पाप।
कर्मों का भी नाश हो, मिट जाए संताप।।

ॐ ह्रीं श्री अनादि अनिधन पंच नमस्कार महामंत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच के, चरण झुकाते शीश।
पुष्पांजलि कर पूजते, सुर नर इन्द्र मुनीश।।

(इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री बाहुबली पूजन

(स्थापना)

दोहा- तीर्थंकर के पुत्र हैं, बाहुबली है नाम।
हृदय कमल में आपका, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(बेसरी छन्द)

नीर भराकर हम ये लाए, जन्म-जरा मैटन को आए।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन गंध बनाकर लाए, भव सन्ताप नशाने आए।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत धवल धुवाकर लाए, अक्षय पद पाने को आए।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

पुष्प मनोहर चुनकर लाए, काम रोग हरने हम आए।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥4॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाने लाए, क्षुधा रोग नाशी जो गाए।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥5॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन घृत का दीप जलाए, मोह महातम हरने आए।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥6॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप जलाते हम ये भाई, अष्ट कर्म नाशी शिवदायी।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥7॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ये सरस चढ़ाने लाए, मोक्ष महाफल पाने आए।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥8॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्त फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
बाहुबली हम तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते॥9॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-विशद भाव से हम यहाँ, चढ़ा रहे शुभ नीर
अष्ट कर्म को नाशकर, पाना है भवतीर
।।शान्तेय शान्तिधारा।।

दोहा- पुष्पाञ्जलि लेकर यहाँ, करते प्रभु गुणगान।
विशद भावना है यही, पाएँ शिव सोपान॥
।।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत।।

जयमाला

दोहा- सप्त तत्त्व छह द्रव्य शुभ, लोकालोक त्रिकाल।
दर्शायक वाणी विमल, की गाते जयमाल॥
(शंभू छन्द)

सुर-असुर-खगाधिप योगीश्वर, मुनि जिन की महिमा गाते हैं।
हे बाहुबली! तव चरणों में, हम सादर शीश झुकाते हैं॥
तुम मात सुनंदा से जन्मे, प्रभु आदिनाथ के पुत्र कहे।
प्रभु कामदेव थे प्रथम श्रेष्ठ, शुभ चक्रवर्ती के भ्रात रहे॥1॥

सवा पाँच सौ धनुष देह शुभ, हरित वर्ण से शोभामान।
नील कुलाचल सम स्थिर प्रभु, नील गिरि सम आभावान॥
पोदनपुर के राजा का पद, बाहुबली को दिए जिनेश।
नगर अयोध्या का स्वामी पद, भरतेश्वर को दिया विशेष॥2॥
चक्र रत्न पाये भरतेश्वर, पुण्योदय से अपरंपार।
षट् खंडों पर विजयीश्री में, वर्ष बिताए साठ हजार॥
बाहुबली ने हार न मानी, युद्ध हुए तब उनसे तीन।
दृष्टि मल्ल जल युद्ध का निर्णय, कीन्हें मंत्री ज्ञान प्रवीण॥3॥
दृष्टि युद्ध अरु नीर युद्ध में, चक्रवर्ती ने मानी हार।
मल्ल युद्ध करने फिर दोनों, उसी समय हो गये तैय्यार॥
बाहुबली ने भरतेश्वर को, अधर उठाया अपने हाथ।
शक्तिहीन हुआ भरतेश्वर, जो था छह खण्डों का नाथ॥4॥
चक्रवर्ती ने चक्र चलाया, विफल हुआ उसका भी वार।
बाहुबली ने सोचा तब ही, है अनित्य सारा संसार॥
राज्य सौंपकर भरतेश्वर को, अष्टापद पर गये कुमार।
महाव्रतों को धारण करके, ध्यान किया होकर अविकार॥5॥
खड़ा हुआ मैं जिस धरती पर, भरत का है उस पर अधिकार।
यह विकल्प आता था मन में, बाहुबली को बारंबार॥
वामी बनी चरण में अतिशय, तन पर बेलें चढ़ी महान्।
क्रूर जंतुओं ने अंगों पर, बना लिया अपना स्थान॥6॥

सिर के केश बढ़े थे भारी, उनमें पक्षी बसे अपार।
कानों में भी बना घौंसला, पक्षी करते थे किलकार।
धन्य-धन्य इस अचल ध्यान का, धन्य हुए मुनिवर अविकार।
वीतराग गुरुओं की महिमा, कही गई है अपरम्पार॥7॥
कर्म नाशकर आदि प्रभु से, पहले कीन्हें मोक्ष प्रयाण।
सिद्धशिला पर बना लिए प्रभु, अपना स्थाई स्थान॥
यही भावना रही हमारी, चरणों रहे हमारा ध्यान।
संयम को पाकर के हम भी, इस भव से पावें निर्वाण॥8॥

दोहा- विशद गुणों के कोष हैं, बाहुबली है नाम।
परम तपस्वी आपके, चरणों विशद प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा-बाहुबली भगवान की, महिमा अपरम्पार।
पूजा अर्चा कर मिले, जग में सौख्य अपार॥

॥इत्याशीर्वादः॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

सोलह कारण पूजा

(स्थापना)

दोहा-सोलह कारण भावना, भावें जीव महान।
तीर्थंकर पद हेतु हम, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणानि! अत्र अवतर अवतर

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणानि! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणानि! अत्र मम सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(सखी छन्द)

जल की शुभ धार कराएँ, त्रय रोग नाश हो जाएँ।
हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि, विनयसम्पन्नता, शीलव्रतेष्वनतिचार, अभीक्ष्णज्ञानोपयोग, संवेग, शक्तितस्त्याग, शक्तितस्तप साधु-समाधि, वैयावृत्यकरण, अर्हद्भक्ति, आचार्यभक्ति, बहुश्रुतभक्ति, प्रवचनभक्ति, आवश्यकापरिहाणि, मार्ग प्रभावना, प्रवचन वात्सल्य, इति षोडश कारणेभ्यो: नम: जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन चरणों गंध चढ़ाएँ, भवताप से मुक्ती पाएँ।
हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत से पूज रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी।।3।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ाने लाए, भव रोग नाश हो जाए।
हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी।।4।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चरु से हम पूज रचाएँ, अब क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी।।5।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्चा को दीप जलाए, मम मोह तिमिर नश जाए।
हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी।।6।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

यह धूप जला हर्षाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी।।7।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल यहाँ चढ़ाने लाए, फल मुक्ती पाने आए।
हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी।।8।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाते भाई, पावन अनर्घ्य पददायी।
हम सोलह कारण भाई, पूजा करते शिवदायी।।9।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती धारा दे रहे, पाने सिद्ध स्वरूप।
शीघ्र प्राप्त होवे मुझे, मेरा निज स्वरूप।।

"शान्तये शान्तिधारा"

दोहा- पुष्प चढ़ाते भाव से, पावन खुशबूदार।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने भव से पार।।

।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

16 कारण भावना

दर्शन विशुद्धि सुखदायी, शिवपद में कारण भाई।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।1।।
ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धि भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
नर विनय भाव के धारी, होते जग मंगलकारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।2।।
ॐ ह्रीं विनय भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
है अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, बनते हैं शिवपद भोगी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।3।।
ॐ ह्रीं अभीक्ष्णज्ञानोपयोगी भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
व्रत शील अनतिचार धारें, वे संयम रत्न सम्हारे।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।4।।
ॐ ह्रीं शीलव्रतेष्वनतिचार भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
संवेग भाव जो पाते, भव से विरक्त हो जाते।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।5।।
ॐ ह्रीं संवेग भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो त्याग शक्तिसः करते, वे मुक्ति वधू को वरते
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।6।।
ॐ ह्रीं शक्तित्याग भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो सुतप शक्तिसः धारें, वे कर्म शत्रु को मारें।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।7।।

ॐ ह्रीं शक्तिस्तप भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
हैं साधु समाधि के धारी, जिन आतम ब्रह्म विहारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।8।।
ॐ ह्रीं साधुसमाधि भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
करते जो वैय्यावृत्ती, उनकी है अलग प्रवृत्ती
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।9।।
ॐ ह्रीं वैय्यावृत्ति भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
करते जो अर्हद् भक्ती, भव से पाते वह मुक्ती।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।10।।
ॐ ह्रीं अर्हद्भक्ति भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
आचार्य भक्ति सुखकारी, भवि जीवों को हितकारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।11।।
ॐ ह्रीं आचार्यभक्ति भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बहुश्रुत भक्ती धर ज्ञानी, होते जग में कल्याणी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।12।।
ॐ ह्रीं बहुश्रुतभक्ति भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
प्रवचन भक्ती के धारी, होते जिन धर्म प्रचारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।13।।
ॐ ह्रीं प्रवचनभक्ति भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जो आवश्यक अपरिहारी, बनते हैं शिवमगचारी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।14।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

ॐ ह्रीं आवश्यक अपरिहारी भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मार्ग प्रभावक भाई, शिव नारि वरें सुखदायी।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।15।।

ॐ ह्रीं मार्गप्रभावक भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रवचन वत्सल जो पावें, वे केवलज्ञान जगावें।
जो विशद भावना भाते, वे तीर्थंकर पद पाते।।16।।

ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सल भावनायैः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- सोहल कारण भावना, भायें हम हे नाथ!।
शिवपथ के राही बनें, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं षोडशकारण भावनायैः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीर्थंकर पद का रहा, जो सोपान त्रिकाल।
सोलह कारण भावना, की गाते जयमाल।।

(चौपाई)

काल अनादि अनन्त बताया, इसका अन्त कहीं न पाया।
लोकालोक अनन्त कहाया, जिनवाणी में ऐसा गाया।।
जीव लोक में रहते भाई, इनकी संख्या कही न जाई।
जीवादिक छह द्रव्यें जानो, सर्व लोक में इनको मानो।।
चतुर्गति में जीव भ्रमाते, कर्मोदय से सुख-दुख पाते।
मिथ्यामति के कारण जानो, भ्रमण होय ऐसा पहचानो।।
उससे प्राणी मुक्ति पावें, जैन धर्म जो भी अपनावें।
प्राणी तीर्थंकर पद पाते, भव्य भावना जो भी भाते।।

सोलह कारण इसको जानो, प्रथम श्रेष्ठ आवश्यक मानो।
दर्श विशुद्धि जो कहलावे, सम्यक् दृष्टि प्राणी पावे।।
तो भी कोई काम न आवें, इसके बिना श्रेष्ठ सब पावे।
विनय भावना दूजी जानो, शील व्रतों का पालन मानो।।
ज्ञानोपयोग अभीक्ष्ण बताया, फिर संवेग भाव उपजाया।
शक्तितः शुभ त्याग बताया, तप धारण का भाव बनाया।।
साधु समाधि करें सद् ज्ञानी, वैयावृत्य भावना मानी।
अर्हद् भक्ति श्रेष्ठ बताई, है आचार्य भक्ति सुखदाई।।
आवश्यक अपरिहार्य जानिए, प्रवचन वत्सल श्रेष्ठ मानिए।
काल अनादि से कल्याणी, श्रेष्ठ भावना भाए प्राणी।।
हम भी यही भावना भाते, अपने मन में भाव बनाते।
विशद भावना हम ये भावें, फिर तीर्थंकर पदवीं पावें।।
अपने सारे कर्म नशाएँ, कर्म नाशकर शिवपुर जाएँ।
मुक्ती पद हम भी पा जावें, और नहीं अब जगत भ्रमावें।।

दोहा- सोलह कारण भावना, भाते योग सम्हाल।
भाव सहित हम वन्दना, करते विशद त्रिकाल।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि-षोडशकारणेभ्यो: जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-शाश्वत पद के हेतु हम, शाश्वत सोलह भाव।
भाने को उद्धत रहें, करके कोई उपाव।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

श्री नन्दीश्वर द्वीप पूजा

(स्थापना)

नन्दीश्वर शुभ द्वीप में, बावन श्री जिन धाम।
उनके श्री जिनबिम्ब का, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्ब समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

चौपाई

निर्मल नीर चढ़ाने लाए, जन्मादिक रुज हरने आए।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, पूजें जिन पद शीश झुकाए॥1॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित चन्दन यहाँ चढ़ाएँ, भव रोगों से मुक्ती पाएँ।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, पूजें जिन पद शीश झुकाए॥2॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत चरण चढ़ा हर्षाएँ, अक्षय पदवी को हम पाएँ।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, पूजें जिन पद शीश झुकाए॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ाने लाए, काम रोग को हरने आए।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, पूजें जिन पद शीश झुकाए॥4॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाते भाई, क्षुधा रोग नाशी शिवदायी।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, पूजें जिन पद शीश झुकाए॥5॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन घृत का दीप जलाते, मोह नाश को यहाँ चढ़ाते।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, पूजें जिन पद शीश झुकाए॥6॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप अग्नि में खेने लाए, कर्म आठ हम हरने आए।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, पूजें जिन पद शीश झुकाए॥7॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म विध्वंशनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल यह चढ़ा रहे मनहारी, पावन मोक्ष महाफलकारी।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, पूजें जिन पद शीश झुकाए॥8॥

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो महामोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

अर्घ्य चढ़ाते यह शुभकारी, विशद प्राप्त हो पद अविकारी।
नन्दीश्वर की जिन प्रतिमाएँ, पूजें जिन पद शीश झुकाए।।9।।
ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीप संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांतीधारा कर सभी, पाएँ शांती अपार।
यही भावना है विशद, मिले मोक्ष का द्वार।।
।। शान्तये-शान्तिधारा ।।

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने शिव सोपान।
अतःभाव से आज हम, करते जिन गुणगान।।
।। दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत ।।

नंदीश्वर पूजन के 4 अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

नंदीश्वर के पूर्व दिशा में, अंजनगिरि शुभदधिमुख चार।
रतिकर आठ के जिनगृह प्रतिमा, के पद वंदन बारम्बार।।1।।
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पूर्वदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम द्वीप के दक्षिण दिशा में, अंजनगिरि चउ दधिमुख जान।
रतिकर आठ के जिनगृह प्रतिमा, के पद वंदन बारम्बार।।2।।
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे दक्षिणदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नंदीश्वर के पश्चिम दिश में, अंजनगिरि है दधिमुख चार।
रतिकर आठ के जिनगृह प्रतिमा, के पद वंदन बारम्बार।।3।।
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे पश्चिमदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वर उत्तर अञ्जनगिरि दधिमुख चार रहे शुभकार।
रतिकर आठ के जिनगृह प्रतिमा, के पद वंदन बारम्बार।।4।।
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे उत्तरदिक् त्रयोदश जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टमद्वीप के चारों दिश में, तेरह-तेरह श्री जिनधाम।
उनमें जो जिनबिम्ब विराजित, जिनके चरणों विशद प्रणाम।।
ॐ ह्रीं नंदीश्वरद्वीपे चतुर्दिक द्विपंचाशत् जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा-नन्दीश्वर शुभ द्वीप में, हैं जिनधाम त्रिकाल।
जिनकी गाते भाव से, आज यहाँ जयमाल।।
(शम्भू छन्द)

अष्टम द्वीप श्री नन्दीश्वर, महिमाशाली रहा महान्।
योजन एक सौ त्रेसठ कोटी, लाख चौरासी आभावान।।
पर्व अढ़ाई में इन्द्रादी, पूजा करते मंगलकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।1।।
चतुर्दिशा में अंजनगिरियाँ, अंजन सम शोभित हैं चार।
अंजनगिरि की चतुर्दिशा में, दधिमुख पर्वत हैं शुभकार।।

दधिमुख के द्वय बाह्य कोण में, रतिकर दो हैं मंगलकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।2।।
योजन सहस्र चौरासी ऊँची, अंजनगिरियाँ चार समान।
दस हजार योजन के दधिमुख, रतिकर हैं इक योजनकार।।
कृष्ण श्वेत अरु लाल हैं क्रमशः, सभी ढोल सम गोलाकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।3।।
चतुर्दिशा में चार बावड़ी, एक लाख योजन चौकोर।
निर्मल जल से पूर्ण भरी हैं, फूल खिले हैं चारों ओर।।
एक लाख योजन के वन हैं, चतुर्दिशा में अपरम्पार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।4।।
एक दिशा में तेरह पर्वत, बावन होते चारों ओर।
स्वर्ण रत्नमय आभा वाले, करते मन को भाव विभोर।।
कलशा ध्वजा कंगूरे घण्टा, से शोभित मंदिर मनहार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।5।।
हैं प्रत्येक जिनालय में जिन, बिम्ब एक सौ आठ महान्।
नयन श्याम अरु श्वेत हैं नख मुख, लाल रंग के आभावान।।
श्याम रंग में भौंह केश हैं, वीतरागमय हैं अविकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।6।।
कोटी सूर्य चन्द्र भी जिनके, आगे पड़ते कांति विहीन।
दर्शन से सद् दर्शन पाकर, प्राणी होते ध्यानालीन।।

मानो बिन बोले ही सबको, शिक्षा देते भली प्रकार।
हम परोक्ष ही रचना करके, अर्चा करते बारम्बार।।7।।
दोहा-नन्दीश्वर शुभ द्वीप के, हैं जिनबिम्ब महान्।
विशद भाव से हम सभी, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टमद्वीपनन्दीश्वर संबंधित द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-महिमाशाली श्रेष्ठ हैं, नन्दीश्वर जिन धाम।
जिनबिम्बों को भाव से, करते 'विशद' प्रणाम।।

।। इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

पंचमेरु पूजा

(स्थापना)

दोहा- पञ्चमेरुओं मे रहे, अस्सी श्री जिनधाम।
जिनकी अर्चा के लिए, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं पंचमेरु जिनालयस्थ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

(मोतियादाम छन्द)

चढ़ाते जल हम हे भगवान!, रोग जन्मादिक नशें प्रधान।
पञ्चमेरु के श्री जिनेश, पूजते हैं हम यहाँ विशेष।।1।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते चन्दन खुशबूदार, भ्रमण नश जाए अब संसार।
पञ्चमेरू के श्री जिनेश, पूजते हैं हम यहाँ विशेष।।2।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते अक्षत धवल महान, पाएँ अक्षय पद महिमावान।
पञ्चमेरू के श्री जिनेश, पूजते हैं हम यहाँ विशेष।।3।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाने लाये हम यह फूल, काम हो जाए अब निर्मूल।
पञ्चमेरू के श्री जिनेश, पूजते हैं हम यहाँ विशेष।।4।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाएँ हम नैवेद्य विशेष, रुज होवे नाश अशेष।
पञ्चमेरू के श्री जिनेश, पूजते हैं हम यहाँ विशेष।।5।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप यह जला रहे मनहार, मोह तम हो जाए अब क्षार।
पञ्चमेरू के श्री जिनेश, पूजते हैं हम यहाँ विशेष।।6।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जलाते अग्नी में हम धूप, प्राप्त हो हमको सुपद अनूप।
पञ्चमेरू के श्री जिनेश, पूजते हैं हम यहाँ विशेष।।7।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते फल ये महति महान, मोक्ष फल पाएँ हे भगवान।
पञ्चमेरू के श्री जिनेश, पूजते हैं हम यहाँ विशेष।।8।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते हम ये पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य
पञ्चमेरू के श्री जिनेश, पूजते हैं हम यहाँ विशेष।।9।।

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- **देते जल की धार, शिव पद पाने के लिए।**
पाएँ भव से पार, भ्रमण मिटे संसार का।।

।। शान्तये-शान्तिधारा ।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

सोरठा-**पुष्पाञ्जलि के साथ, श्री जिन की अर्चा करें।**
चरण झुकाएँ माथ, विशद भाव से जिन चरण॥

।।दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

अर्घ्यावली

जम्बूद्वीप में श्रेष्ठ है, मेरु सुदर्शन नाम।
सोलह जिनवर बिम्बपद, करते विशद प्रणाम॥1॥

ॐ ह्रीं जम्बूद्वीपे सुमेरुगिरि स्थित षोड्श जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व घातकीखण्ड में, विजय मेरु शुभकार।
सोलह जिनवर बिम्बपद, करते विशद प्रणाम॥2॥

ॐ ह्रीं पूर्व घातकी खण्डद्वीपे विजयमेरु स्थित षोड्श जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपर घातकीखण्ड में, मेरु अचल महान्।
सोलह जिनवर बिम्बपद, करते विशद प्रणाम॥3॥

ॐ ह्रीं अपर धातकी खण्डद्वीपे अचलमेरु स्थित षोड्श जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पूरब दिशा, मंदर मेरु महान्।
सोलह जिनवर बिम्बपद, करते विशद प्रणाम॥4॥

ॐ ह्रीं पूर्व पुष्करार्धद्वीपे विद्युन्मालीमेरु स्थित शोडष जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्करार्ध पश्चिम सुगिरि, विद्युन्माली जान।
सोलह जिनवर बिम्बपद, करते विशद प्रणाम॥5॥

ॐ ह्रीं पश्चिम पुष्करार्धद्वीपे मन्दरमेरु स्थित शोडष जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ढाईद्वीप में मेरु शुभ, पाँच है मंगलकार।
उनमें जो जिन हैं, पूज रहे शुभकार॥6॥

ॐ ह्रीं ढाईद्वीपे पंचमेरु स्थित शोडष जिनालयस्थ सर्व जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **ढाई द्वीप के मध्य हैं, मेरू पंच महान्।**
जयमाला गाते विशद, करते हैं गुणगान॥

(बेसरी छन्द)

प्रथम सुदर्शन मेरु कहाया, भद्रशाल वन में बतलाया।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए।
योजन पञ्च शतक पे जानो, ऊपर नन्दन वन पहिचानो।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए॥1॥
साढ़े बासठ सहस्र बताया, ऊर्ध्व सौमनस वन कहलाया।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए॥
योजन छत्तिस सहस ऊँचाई, पाण्डुक वन सोहे तँह भाई।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए॥2॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

चारों मेरु समान बताए, भू पर भद्रशाल कहलाए।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए॥
योजन पञ्च शतक पर जानो, नन्दन वन चारों दिश मानो।
चारों दिश चैत्यालय गाए, अर्चा के शुभ भाव बनाए॥3॥
साढ़े पचपन सहस्र ऊँचाई, सौमनस वन की जानो भाई।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा के शुभ भाव बनाए॥
सहस्र अट्ठाइस योजन गाये, पाण्डुक वन ऊँचे बतलाए।
चारों दिश चैत्यालय गाये, अर्चा को शुभ भाव बनाए॥4॥
सुर नर विद्याधर मिल आवें, जिन वंदन करके सुख पावें।
चैत्यालय अस्सी शुभ गाए, वन्दन करने को हम आए॥
मेरु सुदर्शन की ऊँचाई, एक लाख योजन बतलाई।
विजयादि चारों की भाई, लख-चौरासी योजन गाई॥5॥
एक महायोजन शुभ जानो, दो हजार कोष का मानो।
इससे मेरू मापा जाए, बीस करोड़ कोष हो जाए॥
दक्षिण पाण्डुक वन में भाई, पाण्डुक शिला बनी सुखदाई।
रत्न कम्बला शिला बताई, उत्तर वन में सोहे भाई॥6॥
रत्नशिला पूरब में जानो, रत्नमयी इसको पहिचानो।
पाण्डु कम्बला है मनहारी, पश्चिम वन में मंगलकारी॥
श्रेष्ठ इन्द्र उस वन में जाते, तीर्थंकर का न्हवन कराते।
यहाँ बैठकर भाव बनाते, जिनपद में हम शीश झुकाते॥7॥

दोहा-चैत्यालय अस्सी रहे, पञ्च मेरु के धाम।
उनमें जो जिनबिम्ब हैं, उनको 'विशद' प्रणाम॥

ॐ ह्रीं पंचमेरु सम्बन्धि जिनचैत्यालयस्थ जिनबिंबेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-पञ्च मेरु हम पूजते, 'विशद' भाव के साथ।
अर्घ्य चढ़ा अर्चा करें, झुका रहे हैं माथ॥

॥ दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

वीरशासन जयन्ती पूजन

स्थापना

जिनके आदर्शों को पाकर, सद्राह स्वयं मिल जाती है।
जिनका सद्दर्शन करने से, निज हृदय कली खिल जाती है।
श्रावण वदि एकम को वाणी, श्री वीर प्रभू की खिरी महा।
जो पर्व वीर शासन जयन्ती, बन गया तभी से श्रेष्ठ अहा॥
दोहा- विपुलाचल गिरि राजगृही, पर जाके भगवान।
दिव्य देशना शुभ दिए, करते हम आहवान॥

ॐ ह्रीं वर्तमान शासन नायक श्री वीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं वर्तमान शासन नायक श्री वीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं वर्तमान शासन नायक श्री वीर जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

(शम्भू छन्द)

मृग तृष्णा में भव भव भटके, अब प्यास बुझाने आए हैं।
हे वीर प्रभो! तव चरणों में, यह नीर चढ़ाने लाए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं वर्तमान शासन नायक श्री वीर जिनेन्द्र! जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

है भवाताप से तप्त हृदय, संताप नशाने आए हैं।
हे वीर प्रभो! तव चरणों में, शुभ गंध चढ़ाने लाए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं वर्तमान शासन नायक श्री वीर जिनेन्द्र! संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर पद को तजकर के, अक्षय निधि पाने आए हैं।
हे वीर प्रभो! अक्षय अक्षत, हम चरण चढ़ाने लाए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं वर्तमान शासन नायक श्री वीर जिनेन्द्र! अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह मन विषयों में रमता है, उस पर जय पाने आए हैं।
हे वीर प्रभो! तव चरणों में, यह पुष्प चढ़ाने लाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं वर्तमान शासन नायक श्री वीर जिनेन्द्र! कामरोग विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जग क्षुधा रोग से व्याकुल है, वह रोग नशाने आए हैं।
हे वीर प्रभो! तव चरणों में नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं वर्तमान शासन नायक श्री वीर जिनेन्द्र! क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह तिमिर में अंध हुए, वह मोह गलाने आए हैं।
हे वीर प्रभो! तव चरणों में, यह दीप जलाने लाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं वर्तमान शासन नायक श्री वीर जिनेन्द्र! मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

है अष्ट कर्म बहु दुखदायी, जिनसे सब जीव सताए हैं।
हे वीर प्रभो! यह धूप जला, वसु कर्म नशाने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं वर्तमान शासन नायक श्री वीर जिनेन्द्र! अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोक्ष महाफल अतिशायी, वह पाने नाथ! शरण आए।
हे वीर प्रभो! तव चरणों में, फल सरस चढ़ाने यह लाए।।8।।

ॐ ह्रीं वर्तमान शासन नायक श्री वीर जिनेन्द्र! मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

है पद अनर्घ्य पावन जग में, हम उसको जान ना पाए हैं।
यह अर्घ्य चढ़ाते वीर प्रभो!, हम शिव पद पाने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं वर्तमान शासन नायक श्री वीर जिनेन्द्र! अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- कर्म जाल को काट कर, पाया पद निर्वाण।
शांतीधारा दे रहे, करते हम गुणगान।।

।।शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा- ज्ञान कल्याणक की रही, महिमा अपरम्पार।
केवलज्ञान जीव इस, जग से होते पार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत ।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

जयमाला

दोहा- विपुलाचल गिरि पर खिरी, दिव्य ध्वनि ॐकार।
ऐसे वीर जिनेश पद, वन्दन बारम्बार।।

(ज्ञानोदय छन्द)

यह संसार असार जान कर, मौन हुए प्रभु संयमधार।
द्वादश वर्ष तपस्या करके, देश-देश में किए विहार।।
ऋजुकमूल सरिता के तट पर, आप लगाए निश्चल ध्यान।
कर्म घातिया नाश किए प्रभु, प्रकट किए तब केवलज्ञान।।
इन्द्राज्ञा से धन कुबेर ने, समवशरण तब रचा विशाल।
द्वादश सभा लगी थी फिर भी, दिव्य ध्वनि ना खिरी त्रिकाल।।
पैंसठ दिन के बाद इन्द्र का, आसन कम्पित हुआ विशेष।
अवधि ज्ञान से जाना उसने, गणधर का ना हुआ प्रवेश।।
ब्राह्मण इन्द्रभूति गौतम को, इन्द्र युक्ति से तब लाया।
मानस्तंभ का दर्शन करके, सम्यक् दर्शन प्रगटाया।।
दीक्षा धारण कर गौतम ने, गणधर की पदवी पायी।
दिव्यध्वनि छयासठवें दिन प्रभु, द्वादशांग मय बिखराई।।
समवशरण का विपुलाचल पर, हुआ आज के दिन विस्तार।
हाहाकार मिटा इस जग का, हुई प्रभू की जय जयकार।।
"जियो और जीने दो" सबको, दिए प्रभू जी यह संदेश।
"परम अहिंसा परमो धर्मा:", का नारा प्रभु दिए विशेष।।

प्रथमं करणं चरणं काव्यं, यह अनुयोग बताए चार।
द्वादशांग वाणी में काव्यों, तत्वों का बतलाए सार।।
"विशद" वीर का शासन पावन, परम जयन्ती मंगलकार।
इस अवसर पर वीर प्रभू की, बोलो भाई जय-जयकार।।

दोहा- दिव्य ध्वनि प्रभु की खिरि, जग में मंगलकार।
जिसको पाके जीव कई, पाए भव दधि पार।।

ॐ ह्रीं वर्तमान शासन नायक श्री वीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अतिशयकारी देशना, दिए वीर भगवान।
अतः जीव जिनका करे, भाव सहित गुणगान।।

।। इत्याशीर्वाद पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

दशलक्षण पूजा

स्थापना

उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव, शौच सत्य संयम धारी।
तपस्त्याग आकिंचन धारे, ब्रह्मचर्य धर अनगारी।।
सुख शांति सौभाग्य प्रदायक, धर्म लोक में रहा महान्।
उत्तम क्षमा आदि धर्मों का, करते हैं हम भी आह्वान।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्म! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

(शंभू छन्द)

ध्यानमयी उत्तम जल लेकर, धारा तीन कराए हैं।
जन्मादिक का रोग नशाकर, निजगुण पाने आए हैं।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्याणि दशलक्षणधर्माय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानादर्श का शीतल चन्दन, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
भव संताप विनाश हेतु हम, आज यहाँ पर आए हैं।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुद्ध भाव के अक्षय अक्षत, जल से धोकर लाए हैं।
अक्षय पद पाने को अनुपम, भाव बनाकर आए हैं।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चिदानन्द मय पुष्प मनोहर, चुन-चुनकर के लाए हैं।
काल अनादी काम वासना, यहाँ नशाने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण के, शुभ नैवेद्य बनाए हैं।
क्षुधा शांत करने को अपनी, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव का दीप बनाकर, ज्ञान की ज्योति जलाए हैं।
मोह अंध के नाश हेतु हम, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म की धूप बनाकर, यहाँ चढ़ाने लाए हैं।
सम्यक् तप की अग्नि जलाकर, स्वाहा करने आए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज के गुण ही फल हैं अनुपम, वह प्रगटाने आए हैं।
मोक्ष महाफल पाने हेतु, ताजे फल यह लाए हैं।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शाश्वत पद के बिना जगत में, बार-बार भटकाए हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें हम, अर्घ्य चढ़ाने आए हैं।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

10 धर्म के अर्घ्य

(चौपाई छन्द)

क्रोध कषाय को पूर्ण नशाते, उत्तम क्षमा धर्म प्रगटाते।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मद की दम का करें सफाया, जिनने मार्दव धर्म उपाया।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं उत्तम मार्दव धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छोड़ रहे जो मायाचारी, होते वह आर्जव के धारी।
होते वह मुनिवर अनगारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं उत्तम आर्जव धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लोभ नाश जिनका हो जाए, वह ही शौच धर्म प्रगटाए।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं उत्तम शौच धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असत वचन के हैं जो त्यागी, सत्य धर्म धारी बड़भागी।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं उत्तम सत्य धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं असंयम जिनको भाए, वह संयम धारी कहलाए।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं उत्तम संयम धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म निर्जरा करने वाले, उत्तम तप धर रहे निराले।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहां में मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं उत्तम तप धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्विविध संग से रहित बताए, उत्तम त्याग धर्म धार गाए।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं उत्तम त्याग धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किंचित् राग रहित अविकारी, उत्तम आकिंचन व्रत धारी।
मुनिव्रत पाते हैं अनगारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं उत्तम आकिंचन्य धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्य व्रतधारी, होते आतम ब्रह्मविहारी।
मुनिव्रत पाते हैं अनगारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।10।।

ॐ ह्रीं उत्तम ब्रह्मचर्य धर्मांगाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उत्तम क्षमा आदि जो पाए, वह निश्चय शिवपुर को जाए।
होते हैं मुनिव्रत के धारी, सर्व जहाँ में मंगलकारी।।11।।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा-विशद धर्म के भाव से, कटे कर्म का जाल।
क्षमा आदि दश धर्म की, गाते हैं जयमाल।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

(बेसरी छन्द)

धर्म कहा दशलक्षण भाई, भवि जीवों को है सुखदाई।
मोक्ष मार्ग में नौका जानो, मुक्ती का शुभ कारण मानो॥
धारण करें धर्म जो कोई, कर्म नाश उसके भी होई।
मोक्ष मार्ग का साधन जानो, जग जन का हितकारी मानो॥
धर्म कहा है रक्षक भाई, धारण करो हृदय हर्षाई।
कहा मान का नाशनकारी, पग-पग पर होता हितकारी॥
मायाचारी को भी नाशे, आर्जव धर्म हृदय परकाशे।
लोभ हृदय में न रह पावे, शौच धर्म उर में प्रगटावे॥
मुख से सत्य वचन उच्चारे, सत्य धर्म जो उर में धारे।
मन को वश में करते भाई, इन्द्रिय दमन करें हर्षाई॥
बनते हैं संयम के धारी, हो जाते हैं जो अविकारी।
मूलधर्म का सुतप बताया, मोक्ष मार्ग का कारण गाया॥
करे निर्जरा तप से प्राणी, तीर्थंकर की है ये वाणी।
त्याग धर्म सब पाप नशावे, जो निज के गुण भी प्रगटावे॥
धर्माकिंचन सम न कोई, परम ब्रह्म प्रगटावे सोई।
ब्रह्मचर्य की महिमा न्यारी, सारे जग में विस्मयकारी॥
ब्रह्मचर्य व्रत पाने वाले, प्राणी जग में रहे निराले।
सारे जग में रहा निराला, शिव पद में पहुँचाने वाला॥

दोहा- विधि सहित जो व्रत करें, पूजन करें विधान।
सुख-शांति सौभाग्य पा, पावे पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्याणि दशलक्षणधर्माय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-दशलक्षण जिन धर्म का, रहे हृदय में वास।
सम्यक् दर्शन ज्ञान का, नित प्रति होय विकास॥

॥ इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ॥

तीस चौबीसी पूजा

स्थापना

दोहा- भरतैरावत क्षेत्र के, त्रैकालिक तीर्थेश।
आह्वानन् करते विशद, जिनका यहाँ विशेष॥

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विशंतितीर्थंकर समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं! अत्र मम तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

॥ चाल छन्द ॥

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, अपने त्रय रोग नशाएँ।
शुभ तीस चौबीसी भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥1॥

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विशंतितीर्थंकर जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व स्वाहा ।

चन्दन भवताप नशाए, हम यहाँ चढ़ाने लाए।
शुभ तीस चौबीसी भाई, हम पूज रहे शिवदायी॥2॥

ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विशंतितीर्थंकर संसारताप चन्दनं विनाशनाय निर्व. स्वाहा

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

अक्षत अक्षय पद दायी, हम यहाँ चढ़ाते भाई।
शुभ तीस चौबीसी भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।3।।
ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकर अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्व. स्वाहा।
जो काम रोग विनशाए, प्रभु चरणों पुष्प चढ़ाए।
शुभ तीस चौबीसी भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।4।।
ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकर कामबाणविधवंनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।
प्रभु क्षुधा रोग नश जाए, नैवेद्य चढ़ाने लाए।
शुभ तीस चौबीसी भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।5।।
ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकर क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।
पावन ये दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
शुभ तीस चौबीसी भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।6।।
ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकर मोहान्धाकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।
सुरभित ये धूप जलाएँ, अब आठों कर्म नशाएँ।
शुभ तीस चौबीसी भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।7।।
ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकर अरूटकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।
प्रभु मोक्ष महफल पाएँ, फल चरण चढ़ा हर्षाएँ।
शुभ तीस चौबीसी भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।8।।
ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकर मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा

शुभ अर्घ्य बनाकर लाए, पाने अनर्घ्य पद आए।
शुभ तीस चौबीसी भाई, हम पूज रहे शिवदायी।।9।।
ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुर्विंशतितीर्थंकर अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांति धारा कर मिले, मन में शांति अपार ।
वन्दन करते आपके, पद में बारम्बार ।।
शान्तये शांति धारा

दोहा- जीवन महके पुष्प सा, पुष्पांजलि कर नाथ।
अतः करें पुष्पांजलिं , चरण झुका कर माथ।।
पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा- भरतैरावत क्षेत्र में, हो तीर्थेश त्रिकाल।
भाव सहित जिनकी यहाँ, गाते हें जयमाल।।
।। चाल टप्पा ।।

कर्म घातिया के नाशी, जिन तीर्थंकर भाई।
केवल ज्ञानी पूज्य लोक में, होते अतिशायी-
जिनेश्वर पूज्य रहे भाई --।।1।।
ढाई द्वीप में भरत क्षेत्र शुभ, पाँच रहे भाई।
छियालिस मूलगुणों के धारी, की है प्रभुताई-जिनेश्वर--।।2।।
पंचैरावत में भी जिनवर, चौबिस हों भाई।

जिन शास्त्रें में जिनकी महिमा, पावन बतलाई-
जिनेश्वर---।।3।।
दिव्य देशना तीर्थंकर की, खिरती जो भाई ।
हर्ष भाव से रत्नत्रय निधि, जीवों ने पाई- जिनेश्वर ---।।4।।
दर्शन करके नाथ आपके, निज की सुधि आई।
विशद आपकी अर्चा करने, आए यहाँ भाई-
जिनेश्वर---।।5।।
दोहा- पूजा की है आपकी, भक्ति भाव के साथ ।
शिव पद पाने के लिए, चरण झुकाते माथ।।
ॐ ह्रीं त्रिंशच्चतुविंशंतितीर्थंकर जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।।

रत्नत्रय पूजा

स्थापना

दोहा- रत्नत्रय शुभ धर्म है, शिव पथ का सोपान।
विशद हृदय में आज हम, करते हैं आह्वान।।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र! अत्र आगच्छ-आगच्छ संवौषट् आह्वाननम्। ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र! अत्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द मोतिया दाम)

भराया कूप से हमने नीर, चढ़ाते पाने भव का तीर।
धर्म रत्नत्रय जगे प्रधान, प्राप्त हो जिसको पा निर्वाण।।1।।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्राय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
चढ़ाते केशर युक्त सुगंध, कर्म का आस्रव होवे बंद।
धर्म रत्नत्रय जगे प्रधान, प्राप्त हो जिसको पा निर्वाण।।2।।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्राय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
चढ़ाते अक्षत यहाँ महान, प्राप्त हो अक्षय पद भगवान।
धर्म रत्नत्रय जगे प्रधान, प्राप्त हो जिसको पा निर्वाण।।3।।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्राय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
चढ़ाएँ पुष्प सुगन्धी वान, काम रुज की हो जाए हान।
धर्म रत्नत्रय जगे प्रधान, प्राप्त हो जिसको पा निर्वाण।।4।।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्राय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
चढ़ाते यह नैवेद्य विशेष, क्षुधा रुज होवे नाश अशेष।
धर्म रत्नत्रय जगे प्रधान, प्राप्त हो जिसको पा निर्वाण।।5।।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्राय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दीप अग्निमय लिया प्रजाल, मोह का पूर्ण नशे जंजाल।
धर्म रत्नत्रय जगे प्रधान, प्राप्त हो जिसको पा निर्वाण।।6।।
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्राय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

जलाते धूप से उठे सुवास, शीघ्र हों आठों कर्म विनाश।
धर्म रत्नत्रय जगे प्रधान, प्राप्त हो जिसको पा निर्वाण॥7॥
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्राय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
चढ़ाते फल ये आभावान, मोक्षफल पाएँ महति महान।
धर्म रत्नत्रय जगे प्रधान, प्राप्त हो जिसको पा निर्वाण॥8॥
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्राय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
विशद आठों द्रव्यों का अर्घ्य, चढ़ाते पाने सुपद अनर्घ्य।
धर्म रत्नत्रय जगे प्रधान, प्राप्त हो जिसको पा निर्वाण॥9॥
ॐ ह्रीं सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
दोहा-हो शांती का वास, जीवन में मेरे विशद।
होवे पूरी आश, नीर चढ़ाते भाव से॥
॥ शान्तये शान्तिधारा ॥
दोहा-पाएँ शिव सोपान, पुष्पाञ्जलि करते विशद।
करते हम गुणगान, रत्नत्रय शुभ धर्म का॥
॥ पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत ॥

रत्नत्रय के अर्घ्य

देव-शास्त्र गुरु में विशद, हो सम्यक् श्रद्धान।
पच्चिस दोषों से रहित, हो सद्दर्श महान॥1॥
ॐ ह्रीं श्री सम्यक्दर्शनाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हीनाधिकता से रहित, याथातथ्य विशेष।
सम्यक् ज्ञान कहाए यह, कहते वीर जिनेश॥2॥
ॐ ह्रीं श्री सम्यक्ज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
पाँचों पापों से रहित, पंच समीती वान।
तीन गुप्तियों युक्त है, सच्चारित्र महान॥3॥
ॐ ह्रीं श्री सम्यक्चारित्राय नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
सम्यक् दर्शन ज्ञान शुभ, चारित रहा महान।
रत्नत्रय युतधर्म है, मुक्ती का सोपान॥
ॐ ह्रीं श्री रत्नत्रय स्वरूप धर्माय नमः पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा-थाल भरा वसु द्रव्य का, दीपक लिया प्रजाल।
रत्नत्रय शुभ धर्म की, गाते हम जयमाल॥

(शम्भू छन्द)

मोक्ष मार्ग का अनुपम साधन, रत्नत्रय शुभ धर्म कहा।
जिसने पाया धर्म विशद यह, उसने पाया मोक्ष अहा॥
प्रथम रत्न सम्यक् दर्शन, करना तत्त्वों में श्रद्धान।
निरतिचार श्रद्धा का धारी, सारे जग में रहा महान्॥1॥
श्रद्धाहीन ज्ञान चारित का, रहता नहीं है कोई अर्थ।
कठिन-कठिन तप करना भाई, हो जाता है सभी व्यर्थ॥

गुण का ग्रहण और दोषों का, समीचीन करना परिहार।
सम्यक् ज्ञान के द्वारा होता, जग में जीवों का उपकार।।2।।
ज्ञान को सम्यक् करने वाला, होता है सम्यक् श्रद्धान।
पुद्गल अर्ध परावर्तन में, जीव करे निश्चय कल्याण।।
सम्यक् श्रद्धापूर्वक सम्यक्, चारित में जो करते वास।
वस्तु तत्त्व का निर्णय करने, से हो मोह तिमिर का ह्रास।।3।।
निरतिचार व्रत के पालन से, हो जाता है स्थिर ध्यान।
निजानन्द को पाने वाले, करते निजानन्द रसपान।।
कर्मों का संवर हो जिससे, आस्रव का हो पूर्ण विनाश।
गुण श्रेणी हो कर्म निर्जरा, होवे केवलज्ञान प्रकाश।।4।।
रत्नत्रय का फल यह अनुपम, अनन्त चतुष्टय होवे प्राप्त।
अष्ट गुणों को पाने वाले, सिद्ध सनातन बनते आप्त।।
अन्तर्मन की यही भावना, रत्नत्रय का होय विकास।
कर्म निर्जरा करें विशद हम, पाएँ सिद्ध शिला पर वास।5।।
दोहा-तीनों लोकों में कहा, रत्नत्रय अनमोल।
रत्नत्रय शुभ धर्म की, बोल सके जय बोल।।

ॐ ह्रीं सम्यक्-दर्शन-ज्ञान-चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिसने भी इस लोक में, पाया यह उपहार।
अनुक्रम से उनको मिला, विशद मोक्ष का द्वार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

जिनवाणी पूजन

स्थापना

श्री जिनेन्द्र की देशना, जग में रही महान।
जिनवाणी का निज हृदय, करते हैं आह्वान।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

पाईता छन्द

हम निर्मल नीर चढ़ाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः! जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

सुरभित यह गंध बनाए, भव ताप नशाने आए।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यैः! संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अक्षय फल दायी, यह चढ़ा रहे हैं भाई।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।3।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य सरस शुभकारी, जो क्षुधा के रहे निवारी।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का शुभ दीप जलाएँ, हम मोह से मुक्ती पाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप खिवाएँ, कर्मों का पुञ्ज जलाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल सरस चढ़ाते भाई, कहलाए मोक्ष प्रदायी।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्व.स्वाहा।

पावन यह अर्घ्य बनाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
जिनवाणी को हम ध्यायें, निज सम्यक् ज्ञान जगाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै:! अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-प्रासुक जल से दे रहे, जलधारा शुभकार।
धर्म हृदय में धारकर, पाएँ भवदधि पार।।

।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा- पुष्पाञ्जलि करने यहाँ, लाए सुरभित फूल।
यही भावना है विशद, पाएँ भव का कूल।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

जयमाला

(बेसरी छन्द)

आचारांग प्रथम कहलाए, पद अष्टादश सहस बताए।
दूजा सूत्र कृतांग बताया, पद छत्तीस सहस मय गाया।।
स्थानांग तीसरा जानो, ब्यालिस सहस सुपद युत मानो।
चौथा समवायांग कहाए, चौंसठ सहस लाख पद पाए।।
व्याख्या प्रज्ञप्ति पाँचवा सारं, पद दो लाख अट्ठाइस हजारं।
ज्ञातृकथा छठवाँ शुभकारी, पाँच लाख छप्पन हज्जारी।।
सप्तम उपासकाध्ययन में जानो, सत्तर सहस ग्यारह लख मानो।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

अन्तःकृतदश अठम ऋषीशं, सहस अट्ठाइस लाख तेईसं॥
नवम अनुत्तर दश जिन भाखं, सहस चवालिस बानवे लाखं।
प्रश्न व्याकरण दशम विचारी, लाख बानवे सोल हजारी॥
ग्यारम सूत्र विपाक प्रकाशी, एक करोड़ लाख चौरासी।
चार कोटि पन्द्रह लख जानो, दो हजार पद सारे मानो॥
द्वादश दृष्टिवाद पन भेदी, एक सौ आठ कोटि पन वेदी।
अड़सठ लाख छप्पन हज्जारी, सहित पाँच पद ज्ञान प्रचारी॥
एक सौ बारह कोटि बताए, लाख तिरासी ऊपर गाए।
सहस अट्ठावन पंच बढ़ाएँ, द्वादश अंग सर्व पद पाएँ॥
कोटि इक्यावन अठलख जानो, सहस चौरासी छह सौ मानो।
साढ़े इक्कीस श्लोक निराले, इक इक पद तम हरने वाले॥

दोहा- जिनवाणी जिन देव कृत, देवे सम्यक् ज्ञान।
"विशद" हृदय में धारकर, पाएँ शिव सोपान॥

ॐ ह्रीं जिन मुखोद्भूत सरस्वती देव्यै! जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- जिनवाणी में सरस्वती, पाया है शुभ नाम।
कृपा पात्र माँ के बनें, करते चरण प्रणाम॥

।।इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र पूजन

स्थापना

तीन लोक में पूज्य हैं, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
जिन की अर्चा के लिए, करते हैं आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टापद, चंपापुर, गिरनार, पावापुर सम्मेदशिखर तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

सखी छन्द

प्रभु निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।
निर्वाण क्षेत्र शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर से गंध बनाए, भव का संताप नशाएँ।
निर्वाण क्षेत्र शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ये धवल चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ॥
निर्वाण क्षेत्र शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

ये पुष्प चढ़ाने लाए, मम काम रोग नश जाए।
निर्वाण क्षेत्र शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस सुखदायी, हम चढ़ा रहे हैं भाई।।
निर्वाण क्षेत्र शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के यह दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनशाएँ।
निर्वाण क्षेत्र शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

वह धूप जलाते भाई, जो है पावन शिवदायी।
निर्वाण क्षेत्र शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल यहाँ चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
निर्वाण क्षेत्र शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, शाश्वत शिव पर पदवी पाएँ।
निर्वाण क्षेत्र शिवदायी, हम पूज रहे हैं भाई।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्ताय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नाथ आपकी अर्चना, करते है शुभकार।
शांती पाने के लिए, देते शांती धार।।

।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते विशद, पाने शिव पुर वास।
अर्चा करते भाव से, होवे पूरी आस।।

।।दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत।।

जयमाला

दोहा- पूज्य क्षेत्र निर्वाण हैं, तीन लोक में श्रेष्ठ।
जयमाला गाते परम, जिनकी यहाँ यथेष्ठ।।

(तर्ज-दरस विशुद्ध भावना)

श्री निर्वाण क्षेत्र में जाय, वंदन कर प्राणी फल पाय।
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय।टेक।।
श्री सम्मेद शिखर मनहार, सर्व लोक में मंगलकार।
बृहस्पति भी महिमा को गाय, फिर भी पूर्ण नहीं कर पाय।।
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय।।1।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

यह तीरथ है अतिशयवान, बीस जिनेन्द्र पाए निर्वाण॥
कर्म नाशकर छोड़ी काय, तीन योग से जिनको ध्याय॥
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥2॥
आदिनाथ अष्टापद धाम, तीर्थ क्षेत्र को करूँ प्रणाम।
चरण कमल में शीश झुकाए, तीन योग से जिनको ध्याय॥
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥3॥
वासुपूज्य चंपापुर धाम, कर्मों से पाए विश्राम।
देव सभी चरणों में आय, भक्ति करके हर्ष मनाय॥
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥4।
चंपापुर है तीर्थ महान्, पाए प्रभो! पञ्चकल्याण।
सभी तीर्थ चम्पापुर जाय, अनुपम यह महिमा दिखलाय॥
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥5॥
ऊर्जयंत गिरि रही महान्, नेमिनाथ पाए निर्वाण।
पञ्चम टोंक पे ध्यान लगाय, अपने सारे कर्म नशाय॥
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥6॥
पावापुर है तीर्थ महान्, महावीर पाए निर्वाण।
पद्म सरोवर पुष्प खिलाय, सारा तीर्थ रहा महकाय॥
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥7॥
महिमा जिसकी अपरंपार, करो वंदना बारम्बार।
इस जीवन को सुखी बनाय, अनुक्रम से मुक्ती को पाय॥
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥8॥

पांचों तीर्थक्षेत्र निर्वाण, तीर्थंकर के रहे महान्।
भव्य जीव वंदन को जाय, मन में अतिशय हर्ष मनाय॥
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥9॥
बोल रहे हम जय-जयकार, हम भी पा जावें भव पार।
अंतिम विशद भावना भाय, कथन किया मन से हर्षाय॥
महासुख दाय, जय-जय तीर्थ परम पद दाय॥10॥
दोहा- पाप क्षीणकर पुण्य से, मिले तीर्थ का योग।
अंतिम मुक्ति वास हो, वंदन करूँ त्रियोग॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टापद, चंपापुर, गिरनार, पावापुर सम्मेदशिखरादि निर्वाण क्षेत्रेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- है अंतिम यह भावना, होय समाधीवास।
तीर्थक्षेत्र निर्वाण से, पाऊँ ज्ञान प्रकाश॥

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

सम्मेदशिखर कूट पूजन

स्थापना

नन्दन वन सी छटा निराली, हरियाली है चारों ओर।
खग मृग की किलकारी करती, मन मधुकर को भाव विभोर॥
कण-कण पावन है भूधर का, क्षण-क्षण होते कर्म शमन।
तीर्थ राज सम्मेद शिखर का, करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रे असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन्।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

अत्र अवतर अवतर संवौषट् आहवाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

।। ज्ञानोदय छन्द।।

ठण्डा गर्म नीर हो कैसा, आग बुझाए यथा-तथा।
पावन तीर्थ क्षेत्र की यात्रा, जन्म मरण की हरे व्यथा।।
शास्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो: नम: जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भ्रमण किया चारों गतियों में, निन्दा की दुर्गन्ध मिली।
सिद्ध क्षेत्र का वन्दन करने, आतम की हर कली खिली।।
शास्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो: नम: संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्त्रों जैसे जीवन बदले, अब हालात बदलना है।
करके सिद्ध क्षेत्र की यात्र, मोक्ष मार्ग पर चलना है।।
शास्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो: नम: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने हार मानकर, जिन चरणों टेका माथा।
हुए सिद्ध जो सिद्ध भूमि से, गाते हम उनकी गाथा।।
शास्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो: नम: कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

भड़के भूख भोग से जैसे, घी से आग भड़क जाए।
सिद्धों के चरणों में हमने, क्षुधा हरण को गुण गाए।।
शास्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो: नम: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन आंधी या तूफानों से, बुझ जाते दीपक अपने।
चेतन दीप जले जिन चरणों, पूर्ण होंय सारे सपने।।
शास्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो: नम: मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मो की आकुलता सुख दुख, भेद भाव दुख की दात्री।
कर्म धूल सब तजी आपने, पूजें धूप चढ़ा यात्री।।
शास्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो: नम: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल खाने का फल क्या होता, लोग समझ ना पाते हैं।
फल के त्यागी यही समझ के, शिव फल पर ललचाते हैं॥
शास्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥8॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो: नम: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पुण्य प्रभा श्री जिन सिद्धों की, कण-कण में भू पे बिखरे।
वैसे मूल्य अर्घ्य का का क्या हो, फिर भी आत्म रूप निखरे॥
शास्वत तीर्थ क्षेत्र है पावन, श्री सम्मेद शिखर शुभ नाम।
भूधर भू से सिद्ध हुए जो, जिन पद मेरा विशद प्रणाम॥9॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो: नम: अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्यावली

दोहा- कल्पतरु के पुष्प ले, पुष्पांजलि वर्षाय।
शास्वत तीरथ राज को, वन्दन कर हर्षाय॥

पुष्पांजलि क्षिपेत्

तीर्थंकर चौबीस के, चौबिस गणी प्रधान।
अर्घ्य चढ़ा वन्दन करें, पाने शिव सोपान॥1॥

ॐ ह्रीं श्री गौतमगणधरादि विभिन्न स्थानों से मोक्ष पधारे उन पवित्र स्थानों को एवं उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कूट ज्ञानधर से गये, कुन्थुनाथ शिव लोक।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, देते हैं हम ढोक॥2॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोड़ाकोड़ि 96 करोड़ 32 लाख 96 हजार 742 मुनि ज्ञानधर कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए मित्रधर कूट से, नमि जिनवर शिवराज।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, वन्दन करते आज॥3॥

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्रादि 9 कोड़ाकोड़ि 1 अरब 45 लाख 7 हजार 942 मुनि मित्रधर कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरहनाथ जिनराज का, गाया नाटक कूट।
अर्घ्य चढ़ा हम पूजते, जाएँ कर्म से छूट॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्रादि 99 करोड़ 99 लाख 99 हजार 999 मुनि नाटक कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवपद पाए मल्लि जिन, संबल कूट महान।
अर्घ्य चढ़ा जिनका विशद, करते हम गुणगान॥5॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्रादि 96 करोड़ मुनि संबल कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए संकुल कूट से, जिन श्रेयांस शिवधाम।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, करते विशद प्रणाम॥6॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोड़ाकोड़ि 96 करोड़ 96 लाख 9 हजार 542 मुनि संकुल कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पदंत भगवान का, सुप्रभ कूट विशाल।
अर्घ्य चढ़ाते भाव से, वन्दन करें त्रिकाल ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदंत जिनेन्द्रादि 1 कोड़ाकोड़ि 99 लाख 7 हजार 480 मुनि सुप्रभ कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्म प्रभु भगवान का, मोहन कूट विशेष ।
अर्चा करते भाव से, पाने निज स्वदेश ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्रादि 99 करोड़ 87 लाख 43 हजार 790 मुनि मोहन कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्जर कूट से पाए शिव, मुनिसुव्रत भगवान।
जिन अर्चा कर जीव कई, किए आत्म कल्याण॥9॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्रादि 99 कोड़ाकोड़ि 99 करोड़ 99 लाख 999 मुनि निर्जर कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

ललित कूट से शिव गये, चन्द्र प्रभु तीर्थेश।
अर्चा करते जिन चरण, देकर अर्घ्य विशेष॥10॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्रादि 984 अरब 72 करोड़ 80 लाख 84 हजार 555 मुनि ललित कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिव पाए कैलाश गिरि, से श्री आदि जिनेश।
जिन चरणों की अर्चना, करते भक्त विशेष॥11॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्रादि 10 हजार मुनि कैलाश पर्वत से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतलनाथ जिनेन्द्र का, विद्युतवर है कूट।
अर्चा करते जिन चरण, श्रद्धा धारअटूट।12॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्रादि 18 कोड़ाकोड़ि 42 करोड़ 32 लाख 42 हजार 905 मुनि विद्युत कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कूट स्वयंभू से हुए, जिनानन्त शिवकार।
अर्घ्य चढ़ा जिनके चरण, वन्दू बारम्बार॥13॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्रादि 96 कोड़ाकोड़ि 70 करोड़

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

70 लाख 70 हजार 700 मुनि स्वयंप्रभ कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल कूट से शिव गये, जिनवर सम्भवनाथ।
अर्चा करते जिन चरण, ऊपर करके हाथ॥14॥

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्रादि 9 कोड़ाकोड़ि 12 लाख 42 हजार 500 मुनि धवल कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पापुर से शिव गये, वासुपूज्य भगवान।
जिनपद करते भाव से, अर्घ्य चढ़ा गुणगान॥15॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्रादि मंदारगिरि (चम्पापुर) से 1 हजार मुनि मुक्त हुए उनके चरण कमल में योगत्रय से बारम्बार नमस्कार हो। जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन जिनराज का, कूट रहा आनन्द।
जिनकी अर्चा कर विशद, आश्रव होवे मंद॥16॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्रादि 72 कोड़ाकोड़ि 70 करोड़ 70 लाख 42 हजार 700 मुनि आनंद कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष गये श्री धर्म जिन, कूट सुदत्त्त महान।
जिनकी अर्चा कर मिले, भव्यों को निर्वाण॥17॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि 29 कोड़ाकोड़ि 19 करोड़

9 लाख 9 हजार 765 मुनि मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमति नाथ जी शिव गये, अविचल कूट है नाम।
जिनके चरणों में विशद, बारम्बार प्रणाम॥18॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्रादि 1 कोड़ाकोड़ि 84 करोड़ 72 लाख 81 हजार 700 मुनि अविचल कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कूट कुन्दप्रभ शांति जिन, का है जगत प्रसिद्ध।
ऋषियों के पद पूजते, हुए अभी तक सिद्ध॥19॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्रादि 9 कोड़ाकोड़ि 9 लाख 9 हजार 999 मुनि सुकुन्द कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पावापुर सर मध्य से, हुए वीर जिन सिद्ध।
पूज रहे जिन पाद हम, जो हैं जगत प्रसिद्ध॥20॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर स्वामी पावापुर के पदम् सरोवर से 26 मुनि सहित मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्व जिन शिव गये, कूट प्रभास सुनाम।
मुक्त हुए जो अन्य ऋषि, तिन पद विशद प्रणाम॥21॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि 49 कोड़ाकोड़ि 84 करोड़

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

72 लाख 7 हजार 742 मुनि प्रभास कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ती पाए विमल जिन, कूट कहाए सुवीर।
जिनकी अर्चा हम करें, पाने भव का तीर।।22।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्रादि 70 कोड़ाकोड़ि 60 लाख 6 हजार 742मुनि सुवीर कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ति सिद्धवर कूट से, पाए अजित जिनेश।
अर्घ्यं चढ़ाते भाव से, श्री जिन चरण विशेष।।23।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रादि 1 अरब 80 करोड़ 54 लाख मुनि सिद्धवर कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्ध हुए गिरनार से, नेमिनाथ भगवान।
अर्घ्यं चढ़ाकर पूजते, करके चरण प्रणाम।।24।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्रादि शम्बू प्रद्युम्न अनिरूद्ध इत्यादि 72 करोड़ 700 मुनि गिरिनार पर्वत से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णभद्र शुभ कूट से, पाए जो शिवधाम।
पार्श्वनाथ जिन के चरण, बारम्बार प्रणाम।।25।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्रादि 82 करोड़ 84 लाख 45

हजार 742 मुनि स्वर्णभद्र कूट से मुक्त हुए उनके चरण कमल में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- अर्चा शास्वत तीर्थ की, करते बारम्बार।
पुष्पांजलि करते तथा, देते शांतीधार।।

जाप-ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्योः नमः।

जयमाला

दोहा- शास्वत तीरथ राज है, गिरि सम्मेद महान।
अर्चा करते भाव से , पाने पद निर्वाण।।

छन्द-तामरस

जय जय तीरथ राज नमस्ते, तारण तरण जहाज नमस्ते।
गणधर पद चौबीस नमस्ते, सिद्ध अनन्त ऋषीश नमस्ते।।1।।
प्रथम ज्ञानधर कूट नमस्ते, कूट मित्रधर पूज्य नमस्ते।
नाटक कूट प्रधान नमस्ते, संवल कूट महान नमस्ते।।2।।
संकुल कूट विशेष नमस्ते, सुप्रभ कूट जिनेश नमस्ते।
मोहन कूट पे जाय नमस्ते, निर्जर कूट जिनाय नमस्ते।।3।।
ललित कूट है दूर नमस्ते, अष्टापद भरपूर नमस्ते।
विद्युतवर मनहार नमस्ते, कूट स्वयंभू सार नमस्ते।।4।।
धवल कूट है स्वेत नमस्ते, चम्पापुर जी क्षेत्र नमस्ते।
आनन्द कूट गिरीश नमस्ते, कूट सुदत्त ऋषीश नमस्ते।।5।।
अविचल कूट मुनीश नमस्ते,कूट कुन्दप्रभ शीश नमस्ते।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

पावापुर जी क्षेत्र नमस्ते, कूट प्रभास विशेष नमस्ते॥6॥
पावन कूट सुवीर नमस्ते, कूट सिद्धवर तीर नमस्ते ।
गिरि गिरनार अटूट नमस्ते, स्वर्णभद्र शुभ कूट नमस्ते॥7॥

दोहा- महिमा तीर्थ सम्मेद गिरि, की है अपरम्पार।
"विशद" भाव से पूजते, नत हो बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो: नम: अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीर्थराज की वंदना, करके प्रभु गुणगान।
मोक्षमार्ग पर जो बढ़ें, पावें शिव सोपान॥

॥ इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

नवग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिन पूजन

(स्थापना)

कर्मों ने काल अनादी से, हमको जग में भरमाया है।
मिलकर कर्मों के साथ सभी, नवग्रहों ने हमें सताया है॥
अब सूर्य चंद्र बुध भौम-गुरू, अरु शुक्र शनि राहू केतु।
आह्वानन् करते जिनवर का, हम नवग्रह की शांति हेतू॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिना:! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

(चाल छन्द)

निर्मल यह नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥1॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित ये गंध चढ़ाएँ, संसार ताप विनशाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥2॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत ये धवल चढ़ाएँ, पावन अक्षय पद पाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥3॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से पूज रचाएँ, हम काम रोग विनसाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते॥4॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

ताजे नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का शुभ दीप जलाएँ, हम मोह तिमिर विनसाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित ये धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से हम पूज रचाएँ, मुक्ती फल शिव पा जाएँ।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य बनाए, पाने अनर्घ्य पद आए।
हम ग्रहारिष्ट जिन ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक पंचकल्याणक प्राप्त श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- देके शांतीधार हम, पाएँ सम्यक् ज्ञान।
प्रकट होय मेरे विशद, वीतराग विज्ञान।।

।।शांतये शांतिधारा।।

दोहा-पुष्पों से पुष्पाञ्जलि, करते हैं हम आज।
यही भावना है विशद, पाएँ निज स्वराज।।

।।दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

नवग्रह अरिष्ट निवारक अर्घ्य

(चौपाई)

ग्रहारिष्ट रवि शांती पाए, पद्म प्रभु पद शीश झुकाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं रविग्रहारिष्ट निवारक श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहारिष्ट चन्द्र जिन स्वामी, शांत किए होके शिवगामी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।2।।

ॐ ह्रीं चन्द्रग्रहारिष्ट निवारक श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं भौम ग्रह भी रह पाए, वासुपूज्य को पूज रचाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।3।।

ॐ ह्रीं भौमग्रहारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

विमलादी वसु जिन को ध्यायें, ग्रहारिष्ट बाधा विनशाएँ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल, अनंत, धर्म, शांति, कुन्थु, अरह, नमि, वर्धमान अष्ट जिनेन्द्रेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषभादी वसु जिन शिवकारी, ग्रहारिष्ट गुरु नाशनहारी।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं गुरुग्रहारिष्ट निवारक श्री ऋषभ, अजित, संभव, अभिनन्दन, सुमति, सुपार्श्व, शीतल, श्रेयांस अष्ट जिनवरेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्रारिष्ट निवारक गाए, पुष्पदन्त स्वामी मन भाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं शुक्रग्रहारिष्ट निवारक श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत की महिमा गाए, शनि अरिष्ट ग्रह ना रह पाए।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमिनाथ पद पूज रचाये, राहु अरिष्ट नहीं रह पाये।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्रहारिष्ट केतू नश जाये, मल्लि पार्श्व का ध्यान लगाये।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री मल्लि-पार्श्व जिनेन्द्रेभ्य: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबिस जिनवर को जो ध्याते, ग्रहारिष्ट से शांती पाते।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, सुख-शान्ती सौभाग्य जगाएँ।।10।।

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्य: पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: अ सि आ उ सा नम: मम सर्व ग्रहारिष्ट शांतिं कुरु-कुरु स्वाहा।

जयमाला

दोहा- गगन मध्य में ग्रहों का, फैला भारी जाल।
ग्रह शांती के हेतु हम, गाते हैं जयमाल।।

(चौबोलो छन्द)

जगत गुरू को नमस्कार मम्, सद्गुरु भाषित जैनागम्।
ग्रह शांती के हेतु कहूँ मैं, सर्व लोक सुख का साधन।।
नभ में अधर जिनालय में जिन, बिम्बों को शत् बार नमन्।
पुष्प विलेपन नैवेद्य धूप युत, करता हूँ विधि से पूजन।।1।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

सूर्य अरिष्ट ग्रह होय निवारण, पद्म प्रभु के अर्चन से।
चन्द्र भौम ग्रह चन्द्र प्रभु अरु, वासुपूज्य के वन्दन से॥
बुध ग्रह अरिष्ट निवारक वसु जिन, विमलानन्त धर्म जिन देव।
शांति कुन्थु अर नमी सुसन्मति, के चरणों में नमन् सदैव॥2॥
गुरु ग्रह की शांति हेतू हम, वृषभाजित सुपार्श्व जिनराज।
अभिनन्दन शीतल श्रेयांस जिन, सम्भव सुमति पूजते आज॥
शुक्र अरिष्ट निवारक जिनवर, पुष्पदंत के गुण गाते।
शनिग्रह की शांति हेतु प्रभु, मुनिसुव्रत को हम ध्याते॥3॥
राहु ग्रह की शांति हेतु प्रभु, नेमिनाथ गुणगान करें।
केतू ग्रह की शांति हेतु प्रभु, मल्लि पार्श्व का ध्यान करें॥
वर्तमान चौबीसी के यह, तीर्थंकर हैं सुखकारी।
आधि व्याधि ग्रह शांती कारक, सर्व जगत मंगलकारी॥4॥
जन्म लग्न राशी के संग ग्रह, प्राणी को पीड़ित करते।
बुद्धिमान ग्रह नाशक जिनकी, अर्चा कर पीड़ा हरते॥
पंचम युग के श्रुत केवली, अन्तिम भद्रबाहु मुनिराज।
नवग्रह शांति विधि दाता पद, विशद वन्दना करते आज॥5॥

दोहा- चौबीसों जिन राज की, भक्ति करें जो लोग।
नवग्रह शांति कर 'विशद', शिव का पावें योग॥

ॐ ह्रीं सर्वग्रहारिष्ट निवारक श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्रेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा- चौबीसों जिनदेव, मंगलमय मंगल परम।
मंगल करें सदैव, नवग्रह बाधा शांत हो॥

॥इति पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

समोशरण पूजन

समवशरण के आगे अनुपम, मानस्तंभ रहे शुभकारी।
अष्टभूमियों के ऊपर शुभ, गंध कुटी पे जिन अविकारी॥
ॐकार मय दिव्य ध्वनि शुभ, द्वादश सभा में हो मनहारी।
हृदय कमल में तिष्ठो हे जिन! तव चरणों में ढोक हमारी॥

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरण्।

(पद्धड़ि छंद)

शुभ प्रासुक निर्मल नीर लाय, जिनवर के चरणों में चढ़ाय।
हो जाय जरादिक रोग नाश, जीवों की होवे पूर्ण आस॥1॥

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर को चंदन में घिसाय, जिन अर्चा करके हर्ष पाय।
संसार ताप का हो विनाश, जीवों की होवे पूर्ण आस॥2॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत प्रभु के पद में चढ़ाय, अक्षय पदवी को जीव पाय।
पाए शिवपुर में वह निवास, जीवों की होवे पूर्ण आस।।3।।

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

थाली पुष्पों से जो भराय, जिनवर की शुभ पूजा रचाय।
हो काम रोग का पूर्ण नाश, जीवों की होवे पूर्ण आस।।4।।

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस ताजे बनाय, अर्चा कर, जिन पद सिर झुकाय।
हो क्षुधा रोग उनका विनाश, जीवों की होवे पूर्ण आस।।5।।

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गौघृत से शुभ दीपक जलाय, श्रीजिन की आरति श्रेष्ठ गाय।
हो मोह महातम पूर्ण नाश, जीवों की होवे पूर्ण आस।।6।।

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में सुरभित धूप खेय, निज आत्म विशुद्धी रहा ध्येय।
उसके कर्मों का हो विनाश, जीवों की होवे पूर्ण आस।।7।।

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से थाली पावन भराय, जिनकी महिमा जो श्रेष्ठ गाय।
वह मोक्ष महल में करे वास, जीवों की होवे पूर्ण आस।।8।।

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अर्घ्य विशद अतिशय बनाय, जिनवर के चरणों में चढ़ाय।
वह सिद्ध शिला पर करें वास, कर्मों का करके पूर्ण नाश।।9।।

ॐ ह्रीं समोशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **शांती धारा कर मिले, मन में शांति अपार।**
अतः भाव से आज हम, देते शांती-धार।।
।।शान्तये शांतिधारा।।

दोहा- **पुष्पाञ्जलि जो भी करें, करें कर्म का नाश।**
रवि शशि से भी तीव्र वे, पावे ज्ञान प्रकाश।।
।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

जयमाला

समवशरण तीर्थेश का, गाया महति महान्।
जयमाला गाते विशद, पाने शिव सोपान॥

(ज्ञानोदय छन्द)

कर्म मोहनीय के नशते ही, ज्ञानावरणी कर्म नशे।
नशे दर्शनावर्ण कर्म अरु, अन्तराय भी पूर्ण नशे॥
केवल दर्शन ज्ञान वीर्य सुख, अनन्त चतुष्टय पाये हैं।
सुर नर किन्नर पशु के स्वामी, चरणों शीश झुकाये हैं॥1॥
धन कुबेर इन्द्राज्ञा पाकर, समवशरण रचना करते।
शुभ भावों का फल पाते वह, कोष पुण्य से निज भरते॥
मानस्तम्भ शोभते चउ दिश, मान गलित जो करते हैं।
रागी द्वेषी मोही जन के, मन का कालुष हरते हैं॥2॥
प्रथम चैत्य प्रासाद भूमि है, चैत्य बने हैं शुभकारी।
द्वितिय भूमी रही खातिका, निर्मल जल युत मनहारी॥
लता भूमि तृतिय कहलाई, श्रेष्ठ लताएँ रहीं महान।
उपवन भूमि चौथी पावन, जिसका कौन करे गुणगान॥3॥
ध्वज भूमी पञ्चम कहलाई, ध्वज पावन फहराते हैं।
कल्प वृक्ष भूमी छठवी में, तरु शुभ शोभा पाते हैं॥
सुरगृह भू में सुरपुर वासी, क्रीड़ा करते भाव विभोर।
श्री मण्डप भूमी में सुर नर, पशू बैठते चारों ओर॥4॥
तीन-पीठयुत गंध कुटी के, ऊपर श्री जिन का स्थान।
कमलाशन पर अधर शोभते, समवशरण में जिन भगवान॥

दिव्य देशना खिरती प्रभु की, चतुर्दिशा में हो दर्शन।
भव्य जीव जिन चरण बैठकर, भाव सहित करते अर्चन॥5॥
दोहा- समोशरण है श्रेष्ठ यह, पूजा करें विधान।
भाव सहित जो भी करें, वे पावें कल्याण॥

ॐ ह्रीं समवशरण स्थित श्री जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- समवशरण में शोभते, श्री जिनबिम्ब त्रिकाल।
"विशद" भाव से यहाँ हम, गाई हैं जयमाल॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत॥

मानस्तंभ की पूजन

स्थापना

मानस्तंभ का दर्शन करके, प्राणी का गल जाए मान।
देव, शास्त्र, गुरु के प्रति उनके, हृदय में जागे सद्श्रद्धान॥
चारों दिश जिन-बिम्ब शोभते, वीतराग मुद्रा पावन।
जिन बिम्बों का विशद भाव से, करते हैं हम आह्वानन्॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

कूप से नीर यह लाए, उसे प्रासुक कराते हैं।
जरादिक रोग नश जाए, भावना श्रेष्ठ भाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो जलं निर्व. स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

मलयगिर का लिया चंदन, नीर में जो घिसाते हैं।
भवाताप पूर्ण नश जाए, चरण में सिर झुकाते हैं।।2।।
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो चंदनं निर्व.स्वाहा।
धवल अक्षत यहाँ लाए, नीर से जो धुवाते हैं।
सुपद अक्षय मिले हमको, भाव से भक्ति गाते हैं।।3।।
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो अक्षतान् निर्व स्वाहा।
झड़े जो पुष्प वृक्षों से, थाल में वे भराते हैं।
कामरज नाश हो जाए, प्रभु भक्ती रचाते हैं।।4।।
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो पुष्पं निर्व.स्वाहा।
सुचरु ताजे बनाए हैं, थाल में जो सजाते हैं।
क्षुधारुज नाश करने को, प्रभु चरणों चढ़ाते हैं।।5।।
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो नैवेद्यं निर्व स्वाहा।
दीप घृत का बनाया है, यहाँ पर जो जलाते हैं।
महातम मोह का नाशी, ज्ञान निज में जगाते हैं।।6।।
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो दीपं निर्व. स्वाहा।
धूप सुरभित बनाई यह, अग्नि में जो जलाते हैं।
कर्म आठों नशें मेरे, शीश चरणों झुकाते हैं।।7।।
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो धूपं निर्व. स्वाहा।
सरस ताजे लिए फल यह, चरण में जो चढ़ाते हैं।
महाफल मोक्ष हम पाएँ, भावना श्रेष्ठ भाते हैं।।8।।
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो फलं निर्व. स्वाहा।

बनाया अर्घ्य यह पावन, विशद चरणों चढ़ाते हैं।
मिले शाश्वत सुपद हमको, परम जो सिद्ध पाते हैं।।9।।
ॐ ह्रीं मानस्तम्भ स्थित चतुर्दिक जिनेन्द्रेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- शांती पाने के लिए, देते शांतीधार।
विशद भावना है यही, पाएँ भव से पार।।
(शान्तये शांतिधारा।)

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
भाते हैं ये भावना, शिवपथ हो अनुकूल।।
पुष्पांजिलं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा- जिनगृह के आगे रहा, मानस्तंभ विशाल।
जिन की गाते भाव से, आज यहाँ जयमाल।।

(चौपाई)

जय-जय मानस्तंभ निराला, चउ दिश जो जिन बिम्बों वाला।
जो मानी का मान गलावे, सबको सम्यक् ज्ञान करावे।।2।।
प्रभु से बारह गुणा ऊँचाई, चहुँ दिश सुन्दर दिखती भाई।
योजन बीस प्रकाश कराए, बारह योजन से दिख जाए।।3।।
घंटा मानस्तंभ सु सोहे, चामर परम ध्वजा मन मोहे।
स्वर्णिम जिनमें जिन प्रतिमाएँ, देव नित्य अभिषेक कराएँ।।4।।
चारों ओर सरोवर सुन्दर, निर्मल जल से भरे जु मनहर।
फिर तहँ पुष्पवाटिका शुभकर, मानस्तंभ लगे बहु सुन्दर।।5।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

मानस्तंभ की महिमा न्यारी, सुर नर करें जु शोभा भारी।
मरकत मणिसम सुन्दरतायी, जिसका दर्शन शुभ फलदायी॥6॥
चारों दिश श्री जिन प्रतिमाएँ, हम दर्शन से विघ्न नशाएँ।
मानस्तंभ की करें जो पूजा, फिर नहि पावें भव वो दूजा॥7॥
करे सु वंदन सब नर नारी, तुमने सब संशय है टारी।
मानस्तंभ जगत सुखदाई, आरति कर हम पुण्य सुपाई॥8॥
मानस्तंभ के दर्शन पाएँ, अपने हम सौभाग्य जगाएँ।
हम भी 'विशद' ज्ञान प्रगटाएँ, कर्म नाशकर शिवपुर जाएँ॥9॥

दोहा- **मानस्तंभ की भावना, धरें जो मन में कोय।**
मन के सब दुख दूर हों, चहुँ दिश शांती होय॥

ॐ ह्रीं चतुर्दिक मानस्तंभ स्थित जिन प्रतिमाभ्यः जलमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **जिन बिम्बों का दर्श कर, शांती मिले अपार।**
शिव पद पाने के लिए, वन्दन बारम्बार॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री अष्टाह्निका पर्व पूजन

स्थापना

ज्ञान दर्शनावरण वेदनीय, आयू नाम गोत्र अन्तराय।
अष्ट कर्म से बद्ध जीव यह, काल अनादी जगत भ्रमाय॥

आठों कर्म विनाश आठ गुण, पा लेते हैं श्री जिन सिद्ध।
अकृत्रिम श्री जिनगृह शास्वत, तीन लोक में रहे प्रसिद्ध॥

दोहा- **पर्व अढ़ाई में विशद, सिद्धों का आह्वान।**
करते हैं हम भाव से, पाने शिव सोपान॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव- भव वषट् सन्निधिकरणं।

(वीर छन्द)

परिशुद्ध प्रभो! यह निर्मल जल, हम चरण चढ़ाने को लाए।
निर्मम ममता से पीड़ित हो, हे नाथ! शरण में हम आए॥
यह पर्व अठाई है शास्वत, शाश्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

हे नाथ! मेरा क्रोधानल से, चेतन अनादि से जलता है।
अज्ञान तिमिर के आँचल में, जो छिपकर खुश हो पलता है॥
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं॥2॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

हम विमुख हुए निज भावों से, तन मन धन अपना मान लिया।
ध्यान किए अक्षय निधि का, निज का न कभी श्रद्धान किया॥
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते है ।3॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान निर्व. स्वाहा।

चैतन्य सुरभि का उपवन भी, जलता है काम की ज्वाला से।
हो जाए काम बली वश में, चैतन्य गुणों की माला से॥
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं।4॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

है क्षुधा देह का धर्म विशद, जो तृष्णा भाव जगाता है।
जो रमण करे चेतन गुण में, वह तृप्त स्वयं हो जाता है॥

यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं।5॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हे वीतराग मय वैज्ञानिक!, शाश्वत प्रयोग शाला पाए।
तुम ज्ञान ध्यान में लीन हुए, केवल्य ज्ञान शुभ प्रगटाए॥
यह पर्व अठाई है शास्वत, शास्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं।6॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

प्रासाद महकता है अनुपम, हे नाथ! आपका धूपों से।
तुम निजस्वरूप में लीन हुए, हो गये विरक्त सब रूपों से॥
यह पर्व अठाई है शास्वत, शाश्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं।7॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

उपवन में आप शिवालय के, रहकर मुक्तीफल चखते हैं।
सुरतरु के फल भी हों समक्ष, फिर भी केइ आस ना रखते हैं।
यह पर्व अठाई है शास्वत, शाश्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

निज अन्तर वैभव की मस्ती, हे नाथ! स्वयं हम भी पाएँ।
सब अर्घ्य त्याग पाके अनर्घ्य, हम सिद्ध शिला पर जम जाएँ।
यह पर्व अठाई है शास्वत, शाश्वत जिन सिद्ध कहाते हैं।
हम बनने शिवपुर के वासी, श्री सिद्ध प्रभू को ध्याते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- **चिन्मय हे चिद्रूप जिन!, तीनोंलोकप्रसिद्ध।**
देते शांती धार पद, पाने अनुपमसिद्ध।।

।। शान्तये शांतिधारा।।

दोहा- **चिर विलास चैतन्य में, चिर निमग्न भगवन्त।**
पुष्पाजंलि करते प्रभो! पाने भव का अंत।।

।।दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत।।

अर्घ्यावली

अधोलोक स्थित जिनालय का अर्घ

सप्तकोटि अरु लाख बहत्तर, अधोलोक मे है जिनधाम।
आइ सौ तैंतीस कोटि छियत्तर,लाख रहे जिनबिम्बमहान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते भाव विभोर।
विशद भावना यही हमारी, हम भी बढ़ें मोक्ष की ओर।।1।।

ॐ ह्रीं अधोलोके सप्त कोटि द्वासप्तति लक्ष जिनालयस्थ अष्ट शत त्रयत्रिंशत कोटि षट्सप्ततिलक्ष जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मध्यलोक स्थित जिनालय का अर्घ

चार सौ अट्ठावन हैं जिनगृह, मध्यलोक में अपरम्पार।
जिन प्रतिमाएँ सात सौ छत्तिस, कम हैं पंचाशत हज्जार।।
कृत्रिम जिनगृह जिन प्रतिमाएँ, भी हम पूजें भाव विभोर।
विशद भावना यही हमारी, हम भी बढ़े मोक्ष की ओर।।2।।

ॐ ह्रीं मध्यलोके अष्ट पंचाशदधिक चउशत जिनालयस्थ चतु षष्ठी अधिक नवशत चतु सहस्र जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऊर्ध्व लोक स्थित जिनालय का अर्घ

लाख चुरासी सहस सत्यानवे, और तेईस जिनगृह शुभकार।
कोटि इकानवे लाख छियत्तर, सहस्र अठत्तर अरु सौ चार।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

अधिक चुरासी जिन प्रतिमाएँ, पूज रहे हो भाव विभोर।
विशद भावना यही हमारी, हम भी बढ़े मोक्ष की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्व लोके त्रयोविंशति अधिक सप्त नवति सहस्र चतुरसीति लक्ष जिनालयस्थ एक नवति कोटि षट् सप्ततिलक्ष अष्ट सप्तति सहस्र चउशत चतुरशीति जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ कोटि अरु लाख सु छप्पन, सहस्र सत्यानवे अरु सौ चार।
इक्यासी हैं जिनगृह पावन, तीन लोक में मंगलकार।।
नौ सौ पच्चिस कोटि सु त्रेपन, लाख और सत्ताइस हजार।
नौ सौ अड़तालिस प्रतिमाएँ, पूज रहे हम मंगलकार।।4।।

ॐ ह्रीं त्रिलोक मध्ये अष्ट कोटि षट् पंचाशत लक्ष सप्त नवति चउ शत एकाशीति जिनालयस्थ नव शत पंचविंशति कोटि त्रि पंचाशत लक्ष सप्त विंशति सहस्र नव शत अष्ट चत्त्वारिंशत जिनबिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक के शीर्ष पे अनुपम, सिद्ध शिला स्वर्णाभावान।
सिद्ध अनन्तानन्त परम सुख, में रत रहते लीन महान।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, पूजा करते भाव विभोर।
विशद भावना यही हमारी, हम भी बढ़े मोक्ष की ओर।।5।।

ॐ ह्रीं ऊर्ध्वलोक त्रिलोकोपरि ईषत प्राग्भार (उपरि) भूमि स्थित अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- नित्य निरंजन ज्ञानमय, त्राता आप त्रिकाल।
चिर निमग्न चैतन्य में, गाते हम जयमाल।।

।। छन्द पद्धरि ।।

तुमने करण त्रय हृदय धार, मिथ्यात्व मल्ल पर कर प्रहार।
संशय विमोह विभ्रम विनाश, सम्यक्त्व सुरवि कीन्हा प्रकाश।।1।।
तन चेतन का कर भेद ज्ञान, प्रगटाई आतम रुचि प्रधान।
जग विभव विभाव असार जान, स्वातम सुख को ही नित्य मान।।2।।
तुम मोह शत्रु पर कर प्रहार, संवर कीन्हा नाना प्रकार।
तप अनशन आदिक बाह्य धार, अपनी इच्छाओं को सम्हार।।3।।
छह अभ्यंतर तप कर महान, निज शुद्धातम का किया ध्यान।
एकाकी निर्भय निः सहाय, एकान्त ध्यान का कर उपाय।।4।।
कर्मों का संवर किये नाथ!, अविपाक निर्जरा किए साथ।
अनन्तानुबंधी चउ कषाए, विसंयोजन का कीन्हा उपाय।।5।।
फिर क्षायिक श्रेणी आप धार, घाती कर्मों पर कर प्रहार।
चारों कर्मों का कर विनाश, केवल्य ज्ञान कीन्हा प्रकाश।।6।।
नव केवल लब्धी आप धार, नर भव का पाए श्रेष्ठ सार।
कर सूक्ष्म प्रतिपाती सुध्यान, चारों अघातिया कर समान।।7।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

अन्तर्मुहूर्त में धार योग, बन जाते हैं केवल अयोग।
करके अघातिया कर्मनाश, शिवपुर में कीन्हे आप वास॥8॥
शाश्वत शुभ पर्व अठाई जान, सुदि आठें से पूनम प्रधान
जो कार्तिक फाल्गुन षाढ़ मास, में करे कोई व्रत या उपास॥9॥
सुर नंदीश्वर शुभ द्वीप जाँय, नर सिद्धों की पूजा रचाएँ।
जो विशद करें पूजा विधान, श्री जिन बिम्बों की शरण आन॥10॥

(घत्ता छन्द)

हे लोक प्रकाशी शिवपुर वासी, अविनाशी पद में वंदन।
हे जिन संन्यासी, ज्ञान प्रकाशी, कर्म विनाशी अभिनन्दन॥

ॐ ह्रीं अष्टगुण महाविभूतियुक्त परम सिद्ध, कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालय सिद्धबिम्ब समूह जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा- तीन लोक चूड़ामणि, आप त्रिलोकी नाथ।
चरण कमल में आपके, झुका रहे हम माथ॥

॥ पुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

आचार्य श्री विशद सागरजी महाराज की पूजन

स्थापना

गौरव गाथा जिनकी गाके, आह्लाद हृदय में आता है।
दर्शन करके श्री गुरुवर का, माथ स्वयं झुक जाता है॥
जिन शासन के मार्ग प्रभावक, विशद सिन्धु है इनका नाम।

हृदय कमल में आह्वानन कर, करते बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् इति आह्वाननं। अत्र तिष्ठः तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

यह कलश में जल भर लाए, जल धार कराने आए।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए॥1॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केशर चन्दन में गारा, भव ताप नाश हो सारा।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए॥2॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत से पूज रचाएँ, अक्षय पदवी को पाएँ।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए॥3॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए॥4॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! कामरोग विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लाए, अब क्षुधा नशाने आए।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।5।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है मोह कर्म का नाशी, ये दीपक ज्ञान प्रकाशी।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।6।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।7।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सरस चढ़ाने लाए, मुक्ती फल पाने आए।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।8।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ।
गुरु चरणों में हम आए, पद सादर शीश झुकाए।।9।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशद सागर मुनीन्द्राय! अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती धारा जो करें, पावें शांती अपार।
शिव पद के राही बनें, होंवे भव से पार।।

।।शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा- पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
कर्म अनादी से लगे, हो जावें निर्मूल।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

जयमाला

दोहा- जयमाला गुरु आपकी, शब्दों में ना आय।
मोती सिन्धु के कभी, कोई क्या गिन पाय।।

(वीर छन्द)

क्षमामूर्ति हे गुरुवर तुमने, शिव पथ किया गमन है।
कर्म श्रृंखला को संयम से, तुमने किया समन है।।
पाकर के आदर्श आपके, यह जग हुआ चमन है।
ऐसे गुरुवर विशद सिन्धु पद, बारम्बार नमन है।।1।।
विशद सिन्धु जी इस जगती को, विशद बनाने वाले हैं।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

वात्सल्य के रत्नाकर में, कमल खिलाने वाले हैं।।
वर्णन करना कठिन गुरु, शिवराह दिलाने वाले हैं।
मोह तिमिर से मोहित जग में, दीप जलाने वाले हैं।।2।।
विशद सिन्धु से झर-झर झरती, विशद गुणों की धारा है।
विशद सिन्धु ने संयम द्वारा, खोला शिव का द्वारा है।।
भक्तों ने यह जीवन अपना, किया समर्पित सारा है।
तुमरे गुण गाना हे गुरुवर!, यह अधिकार हमारा है।।3।।
पञ्च महाव्रत समिति गुप्तियाँ, पञ्चेन्द्रिय जयवान कहे।
षट् आवश्यक पालन करते, पञ्चाचारी आप रहे।।
दश धर्मों को धारण करते, द्वादश तप धारी ऋषिराज।
गुरु आपकी अर्चा करता, तीन योग से सकल समाज।।4।।

दोहा- पूजा की है आपकी, भक्ति भाव के साथ।
चरण शरण में आपकी, झुका रहा मैं माथ।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय! जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- विशद गुणों के कोष हैं, विशद सिन्धु है नाम।
विशद भाव से आज हम, करते चरण प्रणाम।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

निर्वाण काण्ड

दोहा- वीतराग जिनके चरण, वन्दन करके आज।
विशद काण्ड निर्वाण यह, गाए सकल समाज।।

(शम्भू छंद)

अष्टापद से आदिनाथजी, वासुपूज्य चम्पापुर धाम।
नेमिनाथ गिरनार गिरी से, महावीर पावापुर ग्राम।।
गिरि सम्मेद शिखर से मुक्ती, पाए जिन तीर्थंकर बीस।
भूत भविष्यत के तीर्थंकर, के पद झुका रहे हम शीश।।
मुनि वरदत्त इन्द्र ऋषिवर जी, सायरदत्त हुए गुणवान।
आठ कोटि मुनि नगर तारवर, से पाए हैं पद निर्वाण।।
कोटि बहत्तर और सात मुनि, शम्बु प्रद्युम्न अनिरुद्ध कुमार।
श्री गिरनार गिरि पर जाकर, पाए हैं मुक्ति पद सार।।
रामचन्द्र के सुत लव कुश द्वय, लाड नरेन्द्र आदि गुणवान।
पाँच कोटि मुनि मुक्ती पाए, पावागिरि मुक्ती स्थान।।
द्रविड़ राज औ तीन पाण्डव, आठ कोटि मुनि और महान।
श्री शत्रुञ्जय गिरि के ऊपर, से पद पाए हैं निर्वाण।।
श्री बलभद्र मुक्ति पाए हैं, आठ कोटि मुनियों के साथ।
श्री गजपंथ शिखर है पावन, तिन पद झुका रहे हम साथ।।
राम हनू सुग्रीव नील अरु गय गवाख्य महानील सुडील।
कोटि निन्यानवे तुंगीगिरि से, मुक्ती पाकर पाए शील।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

नंग कुमार अनंग मुनीश्वर, साड़े पाँच कोटि मुनिराज।
ध्यान लगाकर सोनागिरि के, शीश से पाए मुक्ती राज॥
रेवातट से मुक्ती पाए, रावण के सुत आदि कुमार।
साढ़े पाँच कोटि मुनि पाए, कर्म नाश कर भव से पार॥
चक्रवर्ति दो कामदेव दश, आठ कोटि मुनियों के साथ।
कूट सिद्धवर रेवातट को, झुका रहे हम अपना माथ॥
अचलापुर ईशान दिशा में, मेढ़गिरि जानो शुभकार।
साढ़े तीन कोटि मुनिवर जी, पाए हैं भवदधि से पार॥
वंशस्थल के पश्चिम दिश में, कुन्थलगिरि है तीर्थ स्थान।
कुलभूषण अरु देशभूषण जी, पाए वहाँ से पद निर्वाण॥
मुनी पाँच सौ जसरथ नृप सुत, कलिंग देश में हुए महान।
कोटि शिला से कोटि मुनीश्वर, पाए अनुपम पद निर्वाण॥
समवशरण में पार्श्व प्रभु के, वरदत्तादी पंच ऋशीष।
मोक्ष गये रेसिन्दी गिरि से, तिनको झुका रहे हम शीश॥
जो-जो मुनि मुक्ती पाए हैं, भरत क्षेत्र के जिस स्थान।
तीन योग से वन्दन मेरा, हो जयवन्त भूमि निर्वाण॥
बड़वानी वर नगर पास में, दक्षिण दिशा रही मनहार।
चूलगिरि से इन्द्रजीत मुनि, कुम्भकरण पाए भव पार॥
पावागिरि के पास चेलना, नदी शोभती अपरम्पार।
मुनिवर चार स्वर्ण भद्रादि, शिवपद का पाए हैं सार॥

फलहोड़ी के पश्चिम दिश में, द्रोणागिरि है शिखर महान।
गुरुदत्तादि अन्य मुनीश्वर, वहाँ से पाए पद निर्वाण॥
बाली और महाबाली मुनि, नाग कुमार भी उनके साथ।
अष्टापद से मुक्ती पाए, उनको झुका रहे हम माथ॥
पार्श्वनाथ जिनवर नागद्रह में, अभिनंदन मंगलपुर धाम।
पट्टन आशारम्य में श्री जिन, मुनिसुव्रत के चरण प्रणाम॥
पोदनपुर में बाहुबलिजी, शांति कुन्थु अर गजपुर ग्राम।
पार्श्व सुपारस जन्म लिए वह, नगर बनारस पूज्य महान॥
मथुरा नगर में वीर प्रभु जी, अहिक्षेत्र में प्रभु जी पारसनाथ।
जम्बू वन में जम्बू मुनि के, चरणों झुका रहे हम माथ॥
पञ्च कल्याणक श्रेष्ठ भूमियाँ, मध्यलोक में रही महान।
मन-वच-तन की शुद्धीपूर्वक, नमन सहित करते गुणगान॥
अर्गल देव श्रीवर नगरी, निकट कुण्डली रहे जिनेश।
शिरपुर में श्री पार्श्वनाथ जी, लोहागिरि शंख देव विशेष॥
सवा पाँच सौ धनुष तुंग तन, केसर कुसुम वृष्टि कर देव।
गोमटेश के पद में वन्दन, शिव सुख पाने करें सदैव॥
अतिशय क्षेत्र हैं अतिशयकारी, तथा रहे निर्वाण स्थान।
शीश झुकाकर वन्दन मेरा, सब तीर्थों को रहा महान॥
तीन काल निर्वाण काण्ड यह, भाव शुद्धि से पढ़ें महान।
नर सुरेन्द्र के भोग प्राप्त कर, 'विशद' प्राप्त करते निर्वाण॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

(अञ्चलिका)

भगवन् परिनिर्वाण भक्ति का, किया यहाँ पर कायोत्सर्ग।
आलोचन करने की इच्छा, करना चाह रहा उत्सर्ग॥
इस अवसर्पिणी में चतुर्थ शुभ, काल बताए अन्तिम शेष।
तीन वर्ष अरु आठ महा इक, पक्ष रहा जिसमें अवशेष॥
कार्तिक माह कृष्ण चौदश की, रात्रि का आया जब अन्त।
ऊषाकाल अमावस की शुभ, स्वाति नक्षत्र में जिन अर्हंत॥
वर्धमान जिन महति महावीर, सिद्ध सुपद पाए भगवान।
तीन लोक के भावन व्यन्तर, ज्योतिष कल्पवासी सुर आन॥
निज परिवार सहित चउ विध सुर, दिव्य नीर ले गंध महान।
अक्षय दिव्य पुष्प धरु दीपक, धूप और फल लिए प्रधान॥
अर्चा पूजा वन्दन करके, नितप्रति करते चरण नमन।
परि निर्वाण महा कल्याणक, का नित करते हैं अर्चन॥
मैं भी यही मोक्ष कल्याणक, का करता हूँ नित पूजन।
वन्दन नमस्कार कर करना, चाहूँ अपने कर्म शमन॥
दुःख कर्म क्षय होवें मेरे, बोधि लाभ हो सुगति गमन।
जिन गुण की सम्पत्ति पाऊँ, 'विशद' समाधि सहित मरण॥

इति

श्री णमोकार चालीसा

महामंत्र-णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उव्वज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

दोहा- तीन लोक से पूज्य हैं, अर्हतादि नव देव।
मन वच तन से पूजते, उनको विनत सदैव॥
णमोकार महामंत्र है, काल अनादि अनन्त।
श्रद्धा भक्ती जाप से, बनें जीव अर्हन्त॥

चौपाई

णमोकार शुभ मंत्र कहाया, काल अनादि अनन्त बताया।1॥
मंत्रराज जानो शुभकारी, अपराजित अनुपम मनहारी।।2॥
परमेष्ठी वाचक यह जानो, महिमाशाली जो पहिचानो।।3॥
जिनने कर्म घातिया नाशे, अनुपम केवलज्ञान प्रकाशे।।4॥
छियालिस मूलगुणों के धारी, मंगलमय पावन अविकारी।।5॥
सर्व चराचर के हैं ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।।6॥
दोष अठारह रहित बताए, चौंतिस अतिशय जो प्रगटाए।7॥
अनन्त चतुष्टय जिनने पाए, प्रातिहार्य आ देव रचाए।।8॥
सारा जग ये महिमा गाए, पद में सादर शीश झुकाए।9॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

समवशरण आ देव बनाते, शत् इन्द्रों से पूजे जाते।।10।।
कल्याणक शुभ पाने वाले, सारे जग में रहे निराले।11।।
अष्ट कर्म जिनके नश जाते, जीव सिद्धपद अनुपम पाते।।12।।
जो शरीर से रहित बताए, सुख अनन्त के भोगी गाए।13।।
फैली है जग में प्रभुताई, अनुपम सिद्धों की प्रभु भाई।।14।।
आठ मूलगुण जिनके गाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।15।।
सिद्ध सुपद हम पाने आए, अतः सिद्ध गुण हमने गाए।।16।।
आचार्यों के हम गुण गाते, पद में नत हो शीश झुकाते।17।।
पंचाचार के धारी गाए, इस जग को सन्मार्ग दिखाए।।18।।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, जिन शासन के हैं रखवाले।।19।।
आवश्यक पालन करवाते, प्रायश्चित दे दोष नशाते।।20।।
छत्तिस मूलगुणों के धारी, नग्न दिगम्बर हैं अविकारी।।21।।
द्रव्य भाव श्रुत के जो ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।।22।।
ज्ञानाभ्यास करें जो भाई, संतों को शिक्षा दें भाई।।23।।
द्वादशांग के ज्ञाता जानो, पच्चिस गुणधारी पहिचानो।।24।।
रत्नत्रयधारी कहलाए, मुक्ति पथ के नेता गाए।।25।।
दर्शन-ज्ञान-चारित के धारी, साधु होते हैं अनगारी।।26।।
विषयाशा के त्यागी जानो, संगारम्भ रहित पहिचानो।।27।।

ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जो उपसर्ग परीषह सहते।।28।।
हैं अट्ठाईस मूलगुणधारी, करें साधना मंगलकारी।।29।।
पंचमहाव्रत धारी जानो, पंचसमिति पाले मानो।।30।।
पंचेन्द्रिय जय करने वाले, आवश्यक के हैं रखवाले।।31।।
णमोकार में इनकी भाई, अतिशयकारी महिमा गाई।।32।।
महामंत्र को जिसने ध्याया, उसने ही अनुपम फल पाया।।33।।
अंजन बना निरंजन भाई, नाग युगल सुर पदवी पाई।।34।।
सेठ सुदर्शन ने भी ध्याया, सूली का सिंहासन पाया।।35।।
सीता सती अंजना नारी, ने पाया इच्छित फल भारी।।36।।
श्वानादि पशु स्वर्ग सिधाए, णमोकार को मन से ध्याए।।37।।
महिमा इसकी को कह पाए, लाख चौरासी मंत्र समाए।।38।।
भाव सहित इसको जो ध्याए, इस भव के सारे सुख पाए।।39।।
अपने सारे कर्म नशाए, अन्त में शिव पदवी को पाए।।40।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
विशद गुणों को प्राप्त कर, बने श्री का नाथ।।
धूप अग्नि में होमकर, करें मंत्र का जाप।
अन्त समय में जीव के, कटते सारे पाप।।

जाप-ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यो नमः।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

श्री आदिनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, मंगल उत्तम चार।
शरण चार की प्राप्ति कर, भवदधि पाऊँ पार॥
वंदन करके भाव से, करते हम गुणगान।
चालीसा जिन आदि का, गाते विशद महान॥

चौपाई

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं न पाया॥1॥
लोक रहा है विस्मयकारी, चौदह राजू है मनहारी॥2॥
ऊर्ध्व लोक ऊर्ध्व में गाया, अधोलोक नीचे बतलाया॥3॥
मध्य लोक है मध्य में भाई, सागर दीप युक्त सुखदायी॥4॥
नगर अयोध्या जन्म लिया है, नाभिराय को धन्य किया है॥5॥
सर्वार्थ-सिद्धि से चय कर आये, मरुदेवी के लाल कहाए॥6॥
चिन्ह बैल का पद में पाया, लोगों ने जयकार लगाया॥7॥
आदिनाथ प्रभु जी कहलाए, प्राणी सादर शीश झुकाए॥8॥
जीवों को षट् कर्म सिखाए, सारे जग के कष्ट मिटाए॥9॥
पद युवराज का पाये भाई, विधि स्वयंवर की बतलाई॥10॥
सुत ने चक्रवर्ति पद पाया, कामदेव सा पुत्र कहाया॥11॥
हुई पुत्रियाँ उनके भाई, कालदोष की यह प्रभुताई॥12॥

ब्राह्मी को श्रुत लिपि सिखाई, ब्राह्मी लिपि अतः कहलाई॥13॥
लघु सुता सुन्दरी कहलाई, अंक ज्ञान की कला सिखाई॥14॥
लाख तिरासी पूरब जानो, काल भोग में बीता मानो॥15॥
इन्द्र के मन में चिंता जागी, प्रभु बने बैठे हैं रागी॥16॥
उसने युक्ति एक लगाई, देवी नृत्य हेतु बुलवाई॥17॥
उससे अतिशय नृत्य कराया, तभी मरण देवी ने पाया॥18॥
दृश्य प्रभु के मन में आया, प्रभु को तब वैराग्य समाया॥19॥
केश लुंच कर दीक्षा धारी, संयम धार हुए अविकारी॥20॥
छह महीने का ध्यान लगाया, चित् का चिंतन प्रभु ने पाया॥21॥
चर्या को प्रभु निकले भाई, विधि किसी ने जान न पाई॥22॥
छह महीने तक प्रभु भटकाए, निराहार प्रभु काल बिताए॥23॥
नृप श्रेयांश को सपना आया, आहार विधि का ज्ञान जगाया॥24॥
अक्षय तृतीया के दिन भाई, चर्या की विधि प्रभु ने पाई॥25॥
भूप ने यह सौभाग्य जगाया, इक्षु रस आहार कराया॥26॥
पञ्चाश्चर्य हुए तब भाई, ये है प्रभुवर की प्रभुताई॥27॥
प्रभुजी केवलज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए॥28॥
प्रातिहार्य अतिशय प्रगटाए, दिव्य ध्वनि तब प्रभु सुनाए॥29॥
बारह योजन का शुभ गाए, गणधर चौरासी प्रभु पाए॥30॥
माघ वदी चौदश कहलाए, अष्टापद से मोक्ष सिधाए॥31॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

मोक्ष मार्ग प्रभु ने दर्शाया, जैनधर्म का ज्ञान कराया॥32॥
योग निरोध प्रभुजी कीन्हें, कर्म नाश सारे कर दीन्हें॥33॥
शिव पदवी को प्रभु ने पाया, सिद्ध शिला स्थान बनाया॥34॥
बने पूर्णतः प्रभु अविकारी, सुख अनन्त पाये त्रिपुरारी॥35॥
हम भी यही भावना भाते, पद में सादर शीश झुकाते॥36॥
जगह-जगह प्रतिमाएँ सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें॥37॥
क्षेत्र बने कई अतिशयकारी, सारे जग में मंगलकारी॥38॥
जिस पदवी को तुमने पाया, वह पाने का भाव बनाया॥39॥
तव पूजा का फल हम पाएँ, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाएँ॥40॥

दोहा- चालीसा चालीस दिन, दिन में चालीस बार।
'विशद' भाव से जो पढ़ें, पावे भव से पार॥
रोग शोक पीड़ा मिटे, होवे बहु गुणवान्।
कर्म नाश कर अन्त में, होवे सिद्ध महान्॥

श्री शांतिनाथ चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन धर्म जिन, आगम मंगलकार।
जिन चैत्यालय चैत्य को, वन्दन बारम्बार॥
तीर्थंकर श्री शांति जिन, का करते गुणगान।
चालीसा गाते विशद, करके चरण प्रणाम॥

(चौपाई)

जम्बूद्वीप में क्षेत्र बताया, भरत क्षेत्र अनुपम कहलाया॥1॥
भारत देश रहा शुभकारी, जिसकी महिमा जग में न्यारी॥2॥
नगर हस्तिनापुर के स्वामी, विश्वसेन राजा थे नामी॥3॥
रानी ऐरादेवी पाए, जिनके सुत शांति जिन गाए॥4॥
माँ के गर्भ में प्रभु जब आए, रत्नवृष्टि तब देव कराए॥5॥
भादव कृष्ण सप्तमी जानो, शुभ नक्षत्र भरणी पहिचानो॥6॥
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश शुभकारी, मेष राशि जानो मनहारी॥7॥
जन्म प्रभु जी ने जब पाया, देवराज ऐरावत लाया॥8॥
शचि ने प्रभु को गोद उठाया, फिर ऐरावत पर बैठाया॥9॥
पाण्डुक वन अभिषेक कराया, सहस्र नेत्र से दर्शन पाया॥10॥
पग में हिरण चिन्ह शुभ गाया, शांतिनाथ तब नाम कहाया॥11॥
पञ्चम चक्रवर्ती कहलाए, कामदेव बारहवें गाए॥12॥
तीर्थंकर सोलहवें जानो, यथा नाम गुणकारी मानो॥13॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

नव निधियों के स्वामी गाये, चौदह रत्न श्रेष्ठ बताए।।14।।
सहस्र छियानवे रानी गाए, छह खण्डों पर राज्य चलाए।।15।।
नीतिवन्त हो राज्य चलाया, दुखियों का सब दुःख मिटाया।।16।।
सूर्य वंश के स्वामी गाए, सारे जग में यश फैलाए।।17।।
जाति स्मरण प्रभु को आया, महाव्रतों को प्रभु ने पाया।।18।।
स्वर्गों से लौकान्तिक आये, अनुमोदन कर हर्ष मनाए।।19।।
केशलुंच कर दीक्षा धारी, हुए दिगम्बर मुनि अविकारी।।20।।
एक लाख राजा संग आए, साथ में प्रभु के दीक्षा पाए।।21।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि जानो, तप कल्याणक प्रभु का मानो।।22।।
आत्म ध्यान कीन्हे तब स्वामी, किये निर्जरा अन्तर्यामी।।23।।
पौष सुदी दशमी शुभ आई, केवलज्ञान की ज्योति जलाई।।24।।
समवशरण आ देव बनाए, प्रभु की जय जयकार लगाए।।25।।
दिव्य देशना आप सुनाए, धर्म ध्वजा जग में फहराए।।26।।
छत्तिस गणधर प्रभु जी पाए, प्रथम गणी चक्रायुध गाए।।27।।
यक्ष गरूण जानो तुम भाई, यक्षी श्रेष्ठ मानसी गाई।।28।।
योग निरोध किए जगनामी, गुण अनन्त पाये जिन स्वामी।।29।।
ज्येष्ठ कृष्ण चौदश तिथि जानो, गिरि सम्मेद शिखर से मानो।।30।।
नौ सौ मुनि श्रेष्ठ बतलाए, साथ में प्रभु के मुक्ती पाए।।31।।
महामोक्ष फल तुमने पाया, शिवपुर अपना धाम बनाया।।32।।
कूट कुन्द प्रभ जानो भाई, कायोत्सर्गासन शुभ गाई।।33।।

शांतिनाथ शांती कर गाए, अतिशय जो भारी दिखलाए।।34।।
जो भी अर्चा करते भाई, अर्चा होती है फलदायी।।35।।
कई लोगों ने शुभ फल पाए, रोक शोक दारिद्र नशाए।।36।।
शांतिनाथ शांति के दाता, तीन लोक में भाग्य विधाता।।37।।
भाव सहित प्रभु को जो ध्याये, इच्छित फल वह मानव पाए।।38।।
पूजा अर्चा कर जो ध्यावें, सुख शांति सौभाग्य जगावे।।39।।
'विशद' भाव से जिन गुण गाएँ, हम भी शिव पदवी को पाएँ।।40।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख शांति आनन्द पा, बने श्री का नाथ।।
दीन दरिद्री होय जो, या हो पुत्र विहीन।
सुत पावे धन सम्पदा, होवे ज्ञान प्रवीण।।

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा- चालीसा गाते यहाँ, होके नत अभिराम।
पार्श्वनाथ जिनराज के, पद में करूँ प्रणाम।।

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।।1
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।2।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।।3।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए।।4।।
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।।5।।
देवों ने तव रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।6।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।।7।।
पञ्चाग्नि तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला।।8।।
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।।9।।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।10।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।।11।।
सर्प देख तपस्वी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।12।।
नाग युगल मृत्यु को पाएँ, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।।13।।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम था देव ने पाया।।14।।
प्रभु बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।।15।।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहिक्षेत्र में ध्यान लगाए।।16।।
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।।17।।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।।18।।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।।19।।
धरणेन्द्र पद्मावती आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए।।20।।
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया।।21।।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का छत्र लगाया भाई।।22।।

चैत कृष्ण को चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई।।23।।
प्रभु ने केवलज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया।।24।।
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए।।25।।
दिव्य देशना प्रभु सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए।।26।।
गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयंभू गाए।।27।।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण भद्र शुभ कूट बताए।।28।।
योग निरोध प्रभु जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए।।29।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ति पाई।।30।।
श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते।।31।।
भक्ति से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते।।32।।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई।।33।।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख पाते।।34।।
पूजा करते हैं नर-नारी, गीत भजन गाते मनहारी।।35।।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ।।36।।
पार्श्वप्रभु के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी।।37।।
'विशद' तीर्थ कई हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी।।38।।

दोहा- पाठ करें चालीसा दिन, दिन में चालिस बार।।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार।।
सुख-शांती सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

महामृत्युञ्जय चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
मृत्युञ्जय हम पूजते, चरणों में धर शीश।।

चौपाई

कर्म घातिया चार नशाए, अतः आप अर्हत् कहलाए।।1।।
अनन्त चतुष्टय जो प्रगटाए, दर्शन ज्ञान-वीर्य सुख पाए।।2।।
दोष अठारह पूर्ण नशाए, छियालिस गुणधारी कहलाए।।3।।
चौतिस अतिशय जिनने पाए, प्रातिहार्य आठों प्रगटाए।।4।।
समवशरण शुभ देव रचाए, खुश हो जय-जयकार लगाए।।5।।
समवशरण की शोभा न्यारी, उससे भी रहते अविकारी।।6।।
देव शरण में प्रभु के आते, चरण-कमल तल कमल रचाते।।7।।
सौ यौजन सुभिक्षता होवे, सब प्रकार की आपद खोवे।।8।।
भक्त शरण में जो भी आते, चतुर्दिशा से दर्शन पाते।।9।।
गगन गमन प्रभु जी शुभ पाते, प्राणी मैत्री भाव जगाते।।10।।
प्रभो! ज्ञान के ईश कहाए, अनिमिष दृग प्रभु के बतलाए।।11।।
दिव्य देशना प्रभु सुनो, सुर-नर-पशु सुनकर हर्षाते।।12।।
मृत्युञ्जय जिन प्रभु कहाते, जीत मृत्यु को शिव पद पाते।।13।।
ज्ञान अनन्त दर्श सुख पाते, वीर्य अनन्त प्रभु प्रगटाते।।14।।
सिद्ध सनातन आप कहाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए।।15।।

अनुपम शिवसुख पाने वाले, ज्ञान शरीरी रहे निराले।।16।।
नित्य निरंजन जो अविनाशी, गुण अनन्त की हैं प्रभु राशि।।17।।
तुमने उत्तम संयम पाया, जिसका फल यह अनुपम गाया।।18।।
रत्नत्रय पा ध्यान लगाया, तप से निज को स्वयं तपाया।।19।।
कई ऋद्धियाँ तुमने पाईं, किन्तु वह तुमको न भाई।।20।।
उनसे भी अपना मुख मोड़ा, मुक्ति वधू से नाता जोड़ा।।21।।
सहस्र आठ लक्षण के धारी, आप बने प्रभु मंगलकारी।।22।।
सहस्र आठ शुभ नाम उपाए, सार्थक सारे नाम बताए।।23।।
नाम सभी शुभ मंत्र कहाए, जो भी इन मंत्रों को ध्याए।।24।।
सुख-शांती सौभाग्य जगाए, अपने सारे कर्म नशाए।।25।।
विषय भोग में नहीं रमाए, रत्नत्रय पा संयम पाए।।26।।
तीन योग से ध्यान लगाए, निज स्वरूप में वह रम जाए।।27।।
संवर करें निर्जरा पावे, अनुक्रम से वह कर्म नशावे।।28।।
बीजाक्षर भी पूजें ध्यावें, जिनपद में नित प्रीति बढ़ावें।।29।।
कभी मंत्र जपने लग जाए, कभी प्रभु को हृदय बसाए।।30।।
स्वर व्यंजन आदी भी ध्याए, अतिशय कर्म निर्जरा पाए।।31।।
पुण्य प्राप्त करता शुभकारी, शिवपथ का कारण मनहारी।।32।।
इस भव का सब वैभव पाए, जिनने भेष दिगम्बर धारा।।33।।
वह बनते त्रिभुवन के स्वामी, हम भी बने प्रभु अनुगामी।।34।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

यही भावना रही हमारी, कृपा करो हम पर त्रिपुरारी।।35।।
मृत्युञ्जय हम भी हो जाएँ, इस जग में अब नहीं भ्रमाएँ।।36।।
जागे अब सौभाग्य हमारा, मिले चरण का नाथ सहारा।।37।।
शिव पद जब तक ना पा जाएँ, तब तक तुमको हृदय सजाएँ।।38।।
नित-प्रति हम तुमरे गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।।39।।
अपना हम सौभाग्य जगाएँ, कर्म नाशकर शिवपुर जाए।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख-शांति आनन्द पा, बने श्री का नाथ।।
सुत सम्पत्ति सुगुण पा, होवे इन्द्र समान।
मृत्युञ्जय होके 'विशद', पावे पद निर्वाण।।

श्री नवग्रह शांति चालीसा

दोहा- नव देवों के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
अर्चा करते भाव से, पाने भवदधि पार।।
चालीसा नवग्रह यहाँ, पढ़ते योग सम्हार।
सुख-शांति सौभाग्य पा, करें आत्म उद्धार।।

(चौपाई)

नवग्रह नभ में रहने वाले, सारे जग से रहे निराले।।1।।
रवि शशि मंगल बुध गुरु गाये, शुक्र शनि राहु केतु बताए।।2।।

कर्म असाता उदय में आए, तब ये नवग्रह खूब सताए।।3।।
कभी व्याधि लेकर के आते, कभी उदर पीड़ा पहुँचाते।।4।।
आँख कान में दर्द बढ़ाते, मन में बहु बेचैनी लाते।।5।।
कभी होय व्यापार में हानी, कभी करें नौकर मनमानी।।6।।
कभी होय चोरी को आवें, छापा मार कभी आ जावें।।7।।
कभी कलह घर में बढ़ जावे, कभी देह में रोग सतावे।।8।।
बेटा-बेटी कही न माने, अपने अपना न पहिचाने।।9।।
प्राणी संकट में पड़ जावे, शांति की ना राह दिखावे।।10।।
ऐसे में भी प्रभु की भक्ति, हर कष्टों से देवे मुक्ति।।11।।
ग्रहारिष्ट रवि जिसे सताए, पद्म प्रभु को वह नर ध्याये।।12।।
जिन्हें चन्द्र ग्रह अधिक सताए, चन्द्र प्रभु को भाव से ध्याये।।13।।
मंगल ग्रह भी जिन्हें सताए, वासुपूज्य जिन शांति दिलाए।।14।।
ग्रहारिष्ट बुध पीड़ा हारी, अष्ट जिनेन्द्र रहे शुभकारी।।15।।
विमलानन्त धर्म अर पाए, शांति कुन्थ नमि वीर कहाए।।16।।
गुरु अरिष्ट ग्रह शांति प्रदायी, अष्ट जिनेन्द्र रहे सुखदायी।।17।।
ऋषभाजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति सुपार्श्व विमल पद वंदन।।18।।
तीर्थंकर शीतल जिन स्वामी, गुरु ग्रह शांति कारक नामी।।19।।
शुक्र अरिष्ट शांति कर गाए, पुष्पदन्त जिनराज कहाए।।20।।
शनि अरिष्ट ग्रह शांती दाता, श्री मुनिसुव्रत रहे विधाता।।21।।
राहू ग्रह नाशक कहलाए, नेमिनाथ तीर्थंकर गाए।।22।।
मल्लि पार्श्व का ध्यान जो करते, केतू ग्रह की बाधा हरते।।23।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

जो चौबीस तीर्थंकर ध्याए, जीवन में वह शांति उपाए।।24।।
गगन गमन वह करते भाई, मानव को होते दुखदायी।।25।।
जन्म लग्न राशि को पाए, मानव को ग्रह बड़ा बताए।।26।।
ज्ञानी जन उस ग्रह के स्वामी, तीर्थंकर को भजते नामी।।27।।
ग्रह हारी दिन जिन को ध्याएँ, पूजा कर सौभाग्य जगाएँ।।28।।
करें आरती मंगलकारी, विशद भाव से शुभ मनहारी।।29।।
चालीसा चालिस दिन गाए, मंत्र जाप भी करते जाएँ।।30।।
मंगलमयी विधान रचनाएँ, शांति भाव से ध्यान लगाएँ।।31।।
अन्तिम श्रुत केवली गाए, भद्रबाहु स्वामी कहलाए।।32।।
नवग्रह शांति स्तोत्र रचाए, चौबीसों जिनवर को ध्याएँ।।33।।
शान्त्यर्थ शुभ शांतिधारा, भवि जीवों को बने सहारा।।34।।
नौ तीर्थंकर नवग्रह हारी, कहलाए हैं मंगलकारी।।35।।
चन्द्रप्रभु वासुपूज्य बताए, मल्लि वीर सुविधि जिन गाए।।36।।
शीतल मुनिसुव्रत जिन स्वामी, नेमि पार्श्व जिन अन्तर्यामी।।37।।
नवग्रह शांति जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।।38।।
'विशद' भावना हम ये भाएँ, सुख-शांति सौभाग्य जगाएँ।।39।।
हमें सहारा दो हे स्वामी, बने मोक्ष के हम अनुगामी।।40।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भक्ति से लोग।
रोग-शोक क्लेशादि का, रहे कभी न योग।।
नवग्रह शांती के लिए, ध्याते जिन चौबीस।
सुख-शांती आनन्द हो, 'विशद' झुकाते शीश।।

पंचपरमेष्ठी की आरती

तर्ज - भक्ति बेकरार है.....

अर्हंत-सिद्ध-आचार्य है, उपाध्याय-मुनिराज हैं।
परमेष्ठी जिन पांचों की शुभ, आरती करते आज हैं।।टेक।।
प्रथम आरती अर्हंतों की, केवलज्ञान के धारी जी-2
अनन्त चतुष्टय पाने वाले, पावन है अविकारी जी-2
अर्हंत-सिद्ध.....।।1।।
अष्टकर्म के नाशी पावन, सिद्ध प्रभू कहलाए जी-2
सिद्ध शिला पर धाम बनाए, सुखानन्त जो पाए जी-2
अर्हंत-सिद्ध.....।।2।।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, होते पञ्चाचारी जी-2
छत्तिस मूल गुणों को पाते, होते हैं अविकारी जी-2
अर्हंत-सिद्ध.....।।3।।
ग्यारह अंग पूर्व चौदह सब, पच्चिस गुण प्रगटाते हैं-2
ज्ञान-ध्यान-तप मे रत मुनि को, पावन ज्ञान सिखाते हैं-2
अर्हंत-सिद्ध.....।।4।।
विषयाशा के त्यागी मुनिवर, संगारम्भ से हीन रहे-2
सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र धर, वीतराग जिन संत कहे-2
अर्हंत-सिद्ध.....।।5।।
अर्हत-सिद्धाचार्य-उपाध्याय, सर्व साधु को ध्यायें जी-2
'विशद आरती करके पद में, सादर शीश झुकाए जी-2
अर्हंत-सिद्ध.....।।6।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

श्री आदिनाथ की आरती

(तर्ज - आज करे हम.....)

आज करें हम विशद भाव से, आरती मंगलकारी।
मणिमय दीपक लेकर आये, आदिनाथ दरबार।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।टेक।।
जन्म प्राप्त कर नगर अयोध्या, को प्रभु धन्य बनाया।
नाभिराय राजा मरुदेवी, ने सौभाग्य जगाया।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।1।।
षट् कर्मों की शिक्षा देकर, सबके भाग्य जगाए।
नर-नारी सब नाचे गाये, जय जयकार लगाए।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।2।।
रत्नत्रय पाकर हे स्वामी, मोक्ष मार्ग अपनाया।
आतम ध्यान लगाकर तुमने, केवलज्ञान जगाया।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।3।।
यही भावना भाते हैं हम, तव पदवी को पावें।
मोक्ष प्राप्त न होवें जब तक, शरण आपकी आवें।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।4।।
जिन मंदिर में भक्ति भाव से, दर्श आपका पाते।
'विशद' आरती करने वाले, बिगड़े भाग्य बनाते।।
हो जिनवर-हम सब उतारे मंगल आरती।।5।।

श्री पद्मप्रभु की आरती

करहु आरती आज, पद्मप्रभु तुमरे द्वारे,
तुमरे द्वारे तुमरे द्वारे तुमरे द्वारे स्वामी
विशद ज्ञान के ताज, पदम् प्रभु तुमरे द्वारे
मात सुसीमा के तुम प्यारे, धरणराज के राजदुलारे
कौशांबी महाराज-जिनेश्वर तुमरे द्वारे(1)
इन्द्रराज ऐरावत लाया, जिस पर प्रभु जी को बैठाया
न्हवन किया शुभकार-जिनेश्वर तुमरे द्वारे(2)
कार्तिक शुक्ल त्रयोदशि स्वामी, जन्म लिए जिन अन्तर्यामी
किए सभी जयकार-जिनेश्वर तुमरे द्वारे(3)
जाति स्मरण आपको आया, मन में तब वैराग्य जगाया।
संयम धारा आप, जिनेश्वर तुमरे द्वारे(4)
गिरि सम्मेदशिखर से स्वामी, मोहन कूट गये जगनामी
पाए शिव का राज, जिनेश्वर तुमरे द्वारे(5)
"विशद" भावना हम यह भाएँ, पावन मोक्षमार्ग अपनाए।
मिले मोक्ष साम्राज्य, जिनेश्वर तुमरे द्वारे(6)
भाव सहित प्रभु को जो ध्याते, वे अपने सौभाग्य जगाते।
सफल होय सब काज, जिनेश्वर तुमरे द्वारे(7)

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

श्री चन्द्रप्रभु की आरती

ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी।
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ती पथ गामी। ॐ जय...।टेक।।
महासेन घर जन्मे, धर्म ध्वजाधारी-2 ।
स्वर्ग मोक्षपदवी के दाता, ऋषिवर अनगारी।।1।।ॐ जय...
आतम ज्ञान जगाएं, सद् दृष्टी धारी-2 ।
मोह महामद नाशी, स्व पर उपकारी।।2।।ॐ जय...
पंच महाव्रत प्रभु जी, तुमने जो धारे-2 ।
समिति गुप्ति के द्वारा, कर्म शत्रु जारे।।3।।ॐ जय...
इन्द्रिय मन को जीता, आतम ध्यान किया-2 ।
केवल ज्ञान जगाकर, पद निर्वाण लिया।।4।।ॐ जय...
तुमको ध्याने वाला, सुख शांती पावे-2 ।
'विशद' आरती करके, मन में हर्षावे।।5।।ॐ जय...
प्रभु की महिमा सुनकर, द्वारे हम आये-2 ।
भाव सहित प्रभु तुमरे, हमने गुण गाये।।6।।ॐ जय...
तुम करुणा के सागर, हम पर कृपा करो-2 ।
भक्त खड़ा चरणों में, सारे कष्ट हरो।।7।।ॐ जय...
ॐ जय चन्द्रप्रभु स्वामी, जय चन्द्रप्रभु स्वामी-2 ।
चन्द्रपुरी अवतारी, मुक्ति पथ गामी।।टेक।।ॐ जय...

श्री शांतिनाथ की आरती

तर्ज - वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्

जगमग-जगमग आरति कीजे, शांतिनाथ भगवान की।
कामदेव चक्री तीर्थंकर, पदधारी गुणवान की।।
वन्दे जिनवरम-2।टेक।।
नगर हस्तिनापुर में जन्में, मात पिता हर्षाए हैं-2
विश्वसेन माँ ऐरादेवी, के जो लाल कहाए हैं-2
द्वार द्वार पर बजी बधाई, जय हो कृपा निधान की।
जगमग-जगमग.....।।1।।
जान के जग की नश्वरता को, जिनवर दीक्षा पाई थी-2
त्याग तपस्या देख आपकी, यह जगती हर्षाई थी-2
देवों ने भी महिमा गाई, नाथ आपके ध्यान की।
जगमग-जगमग.....।।2।।
हर संकट में जग के प्राणी, प्रभू आपको ध्याते हैं-2
भाव सहित गुण गाते नत हो, पूजा पाठ रचाते हैं-2
महिमा गाई है संतों ने, वीतराग विज्ञान की।
जगमग-जगमग.....।।3।।
सारे जग में प्रभु आपने, अतिशय बड़ा दिखाया है-2
शांती देकर के भक्तों में, चमत्कार फैलाया है-2
हर दुखियों का संकट हरती, महिमा अतिशयवान की।
जगमग-जगमग.....।।4।।
जिन मंदिर में शांती प्रभु की, आरति करने आए हैं-2
चरण शरण के भक्त मनोहर, द्वीप जलाकर लाए है-2
'विशद' करें हम जय-जयकारे, अतिशय बिम्ब महान की।
जगमग-जगमग.....।।5।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

मुनिसुव्रत जिनराज की आरती

(तर्ज:- इह विधि मंगल आरती कीजे...)

मुनिसुव्रत की आरति कीजे,
अपना जन्म सफल कर लीजे।टेक।।
नृप सुमित्र के राजदुलारे, माँ श्यामा की आँख के तारे।
मुनिसुव्रत...।।1।।
राजगृही के नृप कहलाए, कछुआ लक्षण पग में पाए।।1।।
मुनिसुव्रत...।।2।।
तीस हजार वर्ष की भाई, श्री जिनवर ने आयु पाई।
मुनिसुव्रत...।।3।।
श्रावण वदी दोज को स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी।
मुनिसुव्रत...।।4।।
दशें वदी वैशाख को स्वामी, जन्म लिए त्रिभुवनपति नामी।
मुनिसुव्रत...।।5।।
वैशाख वदी दसमी दिन आया, जिन प्रभु ने संयम को पाया।
मुनिसुव्रत...।।6।।
वैशाख वदी नौमी दिन गाया, प्रभु ने केवलज्ञान उपाया।
मुनिसुव्रत...।।7।।
फाल्गुन वदी बारस को भाई, कर्म नाशकर मुक्ति पाई।
मुनिसुव्रत...।।8।।
गिरि सम्मेद शिखर शुभ गाया, 'विशद' मोक्षपद प्रभु ने पाया।
मुनिसुव्रत...।।9।।

श्री नेमिनाथ की आरती

तर्ज-भक्ति बेकरार है...

नेमिनाथ दरबार है, प्रभु की जय जयकार है।
आरति करने आये स्वामी, आज तुम्हारे द्वार हैं।।टेक।।
शौरीपुर में जन्म लिए प्रभु, घर-घर मंगल छाया जी।
इन्द्र सुरेन्द्र महेन्द्र सभी ने, प्रभु का न्हवन कराया जी।।
नेमिनाथ दरबार है.....
नेमिकुंवर जी ब्याह रचाने, जूनागढ़ को आये जी।
पशुओं का आक्रन्दन लखकर, उनको तुरत छुड़ाए जी।।
नेमिनाथ दरबार है.....
मन में तब वैराग्य समाया, देख दशा संसार की।
राह पकड़ ली तभी प्रभु ने, महाशैल गिरनार की।।
नेमिनाथ दरबार है.....
पंच मुष्टि से केशलुंच कर, भेष दिगम्बर धारे जी।
कठिन तपस्या के आगे सब, कर्म शत्रु भी हारे जी।।
नेमिनाथ दरबार है.....
केवलज्ञान जगाकर प्रभु ने, जग को राह दिखाई जी।
भवसागर को पार करूँ, यह 'विशद' भावना भाई जी।।
नेमिनाथ दरबार है.....

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

श्री पार्श्वनाथ की आरती

तर्ज–हम सब उतारे तेरी आरती.....

आज करे हम पार्श्वनाथ की, आरती मंगलकारी–2
जिन मंदिर के पार्श्व प्रभु है, जग जन के संकटहारी
हो जिनवर ।।टेक।।
अच्युत स्वर्ग से चयकर स्वामी, माँ के गर्भ में आए–2।
अश्वसेन वामा देवी माँ–2, को प्रभु धान्य बनाए।।
हो जिनवर.....।।1।।
गर्भोत्सव पर काशी नगरी, आके देव सजाए–2।
छह नौ माह रत्न वृष्टी कर–2, नाचे हर्ष मनाए।।
हो जिनवर.....।।2।।
जन्मोत्सव पर मेरु गिरि पर, आके न्हवन कराए–2।
सब इन्द्रों ने मिलकर भाई–2, जय जयकार लगाए।।
हो जिनवर.....।।3।।
यह संसार असार जानकर, उत्तम संयम पाए–2।
ज्ञानोत्सव पर समवशरण शुभ–2, आके धनद बनाए।।
हो जिनवर.....।।4।।
शाश्वत तीर्थ की स्वर्ण–भद्र शुभ, कूट से मुक्ती पाए–2।
'विशद' आपकी आरती करने–2, भक्त शरण में आए।।
हो जिनवर.....।।5।।

श्री महावीर स्वामी की आरती

(तर्ज: कंचन की थाली लाया...)

रत्नों के दीप जलाए, चरणों में तेरे आए।
भावों से करने थारी आरती,
हो वीरा हम सब, उतारे तेरी आरती।।टेक।।
कुण्डलपुर में जन्म लिए प्रभु, मात पिता हर्षाए–2।
धन कुबेर ने खुश होकर के–2, दिव्य रत्न वर्षाए।।
इन्द्र भी महिमा गावे, भक्ति से शीश झुकावे।
भवि जन करते हैं तेरी आरती, हो वीरा....।।1।।
चैत शुक्ल की त्रयोदशी को, जन्म जयन्ती आवे।
नगर–नगर के नर–नारी सब–2, मन में हर्ष बढ़ावे।।
प्रभु को रथ पे बैठावें, नाचे गावें हर्षावे।
सब मिल उतारे थारी आरती...हो वीरा।।2।।
मार्ग शीर्ष कृष्णा तिथि दशमी, तुमने दीक्षा धारी।
युवा अवस्था में संयम धर, हुए आप अनगारी।।
आतम का ध्यान लगाया, कर्मों को आप नशाया।
श्रावक करते है थारी आरती...हो वीरा।।3।।
दशें शुक्ल वैशाख माह में, केवल ज्ञान जगाये–2
कार्तिक कृष्ण अमावश को प्रभु–2, 'विशद' मोक्ष पद पाए।।
पावापुर है मनहारी, सिद्ध भूमि है– प्यारी।
जिनबिम्बों की हम करते आरती...हो वीरा।।4।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

श्री नवदेवता की आरती

तर्ज-इह विधि मंगल आरति कीजे--

नव देवो की आरति कीजे, नर भव स्वयं सफल कर लीजे॥टेक॥

पहली आरती अर्हत् थारी, कर्म घातिया नाशनकारी।।
नव देवों..

दूसरी आरती सिद्ध अनंता, कर्मनाश होवें भगवंता।।
नव देवों..

तीसरी आरती आचार्यों की, रत्नत्रय के सद् कार्यों की।।
नव देवों..

चौथी आरती उपाध्याय की, वीतरागरत स्वाध्याय की।।
नव देवों..

पाँचवी आरती मुनि संघ की, बाह्य अभ्यंतर रहित संग की।।
नव देवों..

छठवी आरती जैन धर्म की, 'विशद' अहिंसा मई परम की।।
नव देवों..

सातवीं आरती जैनागम की, नाशक महामोह के तम की।।
नव देवों..

आठवी आरती चैत्य तिहारी, भवि जीवों को मंगलकारी।।
नव देवों..

नौवीं आरती चैत्यालय की, दर्शन करते मिथ्याक्षय की।।
नव देवों..

आरती करके वन्दन कीजे, शीश झुकाकर आशिष लीजे।।
नव देवों..

मानस्तम्भ की आरती...

(तर्ज-इह विधि मंगल आरति...)

मानस्तंभ की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे॥टेक॥

जिनवर चारों दिश में सोहें, भवि जीवों के मन को मोहे-
मानस्तम्भ...

पूर्व दिशा में जिनवर गाए, वीतरागता जो दर्शाए-
मानस्तम्भ...

दक्षिण दिश की प्रतिमा प्यारी, देखत लागे अतिमनहारी-
मानस्तम्भ...

पश्चिम दिश के श्री जिन स्वामी, गाए पावन अन्तर्यामी-
मानस्तम्भ...

उत्तर के जिन बिम्ब निराले, भव्यों का मन हरने वाले-
मानस्तम्भ...

मानस्तंभ का दर्शन पाए, क्षण में मान गलित हो जाए-
मानस्तम्भ...

'विशद' भावना हम ये भाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ-
मानस्तम्भ...

दीप जलाकर के यह लाए, आरति के सौभाग्य जगाए-
मानस्तम्भ...

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

आचार्य गुरुवर श्री विशदसागर जी की आरती

ॐ जय विशद सिन्धु गुरुवर, स्वामी विशद सिन्धु गुरुवर।
तुम हो गुरु हमारे-2, हम तुमने अनुचर॥ ॐ जय ।टेक॥
ग्राम कुपी में जन्म लिया माँ, इन्दर उर आये-स्वामी इन्दर...।
धन्य पिताश्री नाथूराम जी-2, श्रेष्ठ पुत्र पाये॥ ॐ जय...
तीर्थ वन्दना करने हेतु, सम्मेद शिखर आएँ-स्वामी सम्मेद...।
विमल सिन्धु के दर्शन करके-2, व्रत प्रतिमा पाएँ॥ ॐ जय...
विजय प्राप्त करने कर्मों पर, परिजन तज आए-स्वामी परिजन...।
सिद्ध क्षेत्र श्रेयांश गिरि पर-2, ऐलक पद पाए॥ ॐ जय...
गुरुवर श्री विराग सिन्धु से, मुनिव्रत ग्रहण किए-स्वामी मुनि...।
द्रोणगिरि में दीक्षा लेकर-2, निज में लीन हुए॥ ॐ जय...
भरत सिन्धु गुरुवर ने, पद आचार्य दिया-स्वामी पद...।
मालपुरा नगरी ने-2, पावन श्रेय लिया॥ ॐ जय...
पूजा विधान अनेको लिखकर, प्रभु के गुण गाए-स्वामी प्रभु...।
विशदआरती करके हमने-2, गुरु के गुण गाए॥ ॐ जय...
ॐ जय विशद सिन्धु गुरुवर, स्वामी विशद सिन्धु गुरुवर।
तुम हो गुरु हमारे-2, हम तुमरे अनुचर॥ ॐ जय...

क्षेत्रपाल जी की आरती

आज करें हम क्षेत्रपाल की, आरति मंगलकारी-2।
घृत के दीप जलाकर लाए-2, बाबा तेरे द्वार॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...।टेक॥
छियानवे क्षेत्रपाल की फैली, इस जग में प्रभुताई-2।
विजय वीर अपराजित भैरव-2, मणिभद्रादिक भाई॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...॥1॥
लाल लंगोट गले में कंठी, लाल दुपट्टा धारी-2।
सिर पर मुकुट शोभता पावन-2, कर त्रिशूल मनहारी।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...॥2॥
कानों कुण्डल पैर पावटा, माथे तिलक लगाए-2।
बाजू बंद पान है मुख में-2, कूकर वाहन पाए॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...॥3॥
अंगद आदि उपद्रव कीन्हें, तब लंकेश्वर ध्याए-2।
सर्व उपद्रव दूर किया तब-2, अतिशय शांती पाए॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...॥4॥
सम्यक्त्वी तुम भक्त जनों के, सारे संकट हरते-2।
पुत्रादिक धन सम्पत्ती की-2, वांछा पूरी करते॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...॥5॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

पद्मावती माता की आरती

(तर्ज- भक्ति बेकरार है...)

माता का दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
आज यहाँ पद्मावति माँ की, हो रही जय-जयकार है।टेक॥
माँ पद्मावति पार्श्वनाथ को, मस्तक ऊपर धारे जी-2।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र खड़े हैं, माँ पद्मा के द्वारे जी-2॥ माता...॥1॥
जो भी माँ की शरण में आए, वह सौभाग्य जगाए जी-2।
पुत्र-पौत्र धन सम्पत्ति माँ के, दर पे आके पाए जी-2माता...॥2॥
शाकिन-डाकिन भूत भवानी, की बाधा हट जाए जी-2।
वात-पित्त कफ रोगादिक से, प्राणी मुक्ती पाए जी-2माता...॥3॥
त्रय नेत्री हे पद्मा देवी, तिलक भाल पे सोहे जी-2।
मुख की कान्ती अनुपम माँ की, भविजन का मन मोहे जी-2माता...॥4॥
दैत्य कमठ का मान गलाया, सुयश विश्व में छाया जी-2।
आदि दिगम्बर धर्म बताकर, जिनमत को फैलाया जी-2माता...॥5॥
कुक्कुट सर्प वाहिनी माँ के, सहस्र नाम बतलाए जी-2।
मथुरा में जिन दत्तराय जी, रक्षा तुमसे पाए जी-2माता...॥6॥
दीप धूप फल पुष्प हार ले, आरति करने आए जी-2।
दर्शन करके विशद आपके, मनवांछित फल पाए जी-2माता...॥7॥

श्रावक प्रतिक्रमण

समता सर्वभूतेषु, संयमः शुभभावना।
आर्तरौद्र परित्यागः, तद्धिं प्रतिक्रमणं मतम्।

जीवों द्वारा जो प्रमाद से, दोष विशद हो जाते हैं।
प्रतिक्रमण करने से वे सब, पूर्ण स्वतः खो जाते हैं॥
भव-भव में जो किए उपार्जित, कर्मों का क्षण में नाश हो।
श्रावक के सम्बोधन हेतू, प्रतिक्रमण का करें प्रकाश॥

सब जीवों पर साम्यभाव धारण करके शुभ भावनापूर्वक संयम पालते हुए, आर्त-रौद्र का त्याग करना प्रतिक्रमण कहलाता है।

हे जिनेन्द्र! हे देवाधिदेव! हे वीतरागी सर्वज्ञ हितोपदेशी अरिहन्त प्रभु! मैं पापों के प्रक्षालन के लिए, पापों से मुक्त होने के लिए, आत्म उत्थान के लिए, आत्म जागरण के लिए प्रतिक्रमण करता हूँ। (इस प्रकार प्रतिज्ञा करके एक आसन से बैठकर प्रतिक्रमण प्रारम्भ करें।)

पापी, दुरात्मा, जड़बुद्धि, मायावी, लोभी और राग-द्वेष से मलिन चित्तवाले मैंने जो दुष्कर्म किया है, उसे हे तीन लोक के अधिपति! हे जिनेन्द्र देव! निरन्तर समीचीन मार्ग

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

पर चलने की इच्छा करने वाला मैं आज आपके पादमूल में निन्दापूर्वक उसका त्याग करता हूँ।

हाय! मैंने शरीर से दुष्ट कार्य किया है, हाय! मैंने मन से दुष्ट विचार (चिन्तन) किया है, हाय! मैंने मुख से दुष्ट वचन बोला है। उसके लिए मैं पश्चाताप करता हुआ भीतर ही भीतर जल रहा हूँ।

निन्दा और गर्हा से युक्त होकर द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावपूर्वक किये गये अपराधों की शुद्धि के लिए मैं मन, वचन और काय से प्रतिक्रमण करता हूँ।

समस्त संसारी जीवों की सर्व योनियाँ (84 लाख जातियाँ) चौरासी लाख हैं एवं सर्व संसारी जीवों के सर्व कुल एक सौ साढ़े निन्यानवे (199) लाख करोड़ होते हैं, इनमें उपस्थित जीवों की विराधना की हो एवं इनके प्रति होने वाले राग-द्वेष से जो पाप लगे हों। **तस्स मिच्छा मे दुक्कडं** (तत्सम्बन्धी मेरा दुष्कृत मिथ्या हो)।

जो एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पञ्चेन्द्रिय तथा त्रसकायिक जीव हैं, इनका जो उत्तापन, परितापन, विराधन और उपघात किया हो, कराया हो और

करने वाले की अनुमोदना की है-**तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

सूक्ष्म, बादर, पर्याप्त, निर्वृत्यपर्याप्त और लब्ध्यपर्याप्त जीवों में से किसी भी जीव की विराधना की हो - **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

एकांत, विपरीत, संशय, वैनयिक और अज्ञान - इन पांच प्रकार के मिथ्यामार्ग और उनके सेवकों की मन-वचन से प्रशंसा की हो-**तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

जिनदर्शन, जलगालन, रात्रिभोजन त्याग, पाँच उदुम्बर त्याग, मद्य त्याग, मांस त्याग, मधु त्याग और जीवदया पालन- इन आठ श्रावक के मूलगुणों में अतिचार के द्वारा जो पाप लगे हों - **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे भगवन! मूलगुणों के अन्तर्गत जिनदर्शन व्रत पालन में प्रमाद किया हो, अविनय से दर्शन किया हो तथा दर्शन या पूजन करते समय मन, वचन, काय की शुद्धि नहीं रखी हो। जिनदर्शन व्रत पालन करते हुए जिनमार्ग में शंका की हो, शुभाचरण पालन कर संसार-सुख की वाञ्छा की हो, धर्मात्माओं के मलिन शरीर को देखकर ग्लानि की हो

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

मिथ्यामार्ग और उसके सेवन करने वालों की मन से प्रशंसा की हो तथा मिथ्यामार्ग की वचन से स्तुति की हो, इत्यादि अतिचार अनाचार दोनों लगे हों- **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे नाथ! मूलगुणों के अन्तर्गत जलगालन व्रत पालन में प्रमाद किया हो, जल छानने के 48 मिनट बाद उसे फिर नहीं छानकर उसका उपयोग किया हो, प्रमाण से छोटे, इकहरे, मलिन, जीर्ण एवं सछिद्र वस्त्र से जल छाना हो। गर्म पानी की मर्यादा समाप्त हो जाने पर उसका उपयोग किया हो, छानने से शेष बचे जल को और जीवानी को यथास्थान (कड़े वाली बाल्टी से कुओं में) न पहुँचाया हो उसे नाली आदि में डाल दिया हो तथा जीवानी की सुरक्षा में या पानी छानने की विधि में प्रमाद किया हो इत्यादि अनाचार मुझे लगे हों -**तस्स मिच्छा से दुक्कड़ं।**

हे देवाधिदेव! मूलगुणों के अन्तर्गत रात्रि भोजन त्याग व्रत में रात्रि के बने भोजन का, सूर्योदय से 48 मिनट के भीतर या सूर्यास्त के एक मुहूर्त पूर्व तथा औषधि के निमित्त रात्रि को रस, फल आदि का सेवन किया हो, कराया हो या करते हुए की अनुमोदना की हो, तज्जन्य

अन्य भी अतिचार-अनाचार दोष लगे हों - **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे करुणा के सागर! मूलगुणों के अन्तर्गत पंच-उदुम्बर फल त्याग व्रत में सूखे अथवा औषधि निमित्त उदुम्बर फलों का, सर्व साधारण वनस्पति का, अदरक-मूली आदि अनन्तकायिक वनस्पति का, त्रस जीवों के आश्रयभूत वनस्पति का, बिना फाड़ किये सेमफली आदि एवं अनजाने फलों का सेवन किया हो, कराया हो या करने वालों की अनुमोदना की हो, इत्यादि अतिचार-अनाचार दोष लगे हों - **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे दया के सागर! मूलगुणों के अन्तर्गत मद्य त्याग व्रत में मर्यादा के बाहर का अचार, मुरब्बा आदि सर्व प्रकार के सन्धानों का, दो दिन व दो रात्रि व्यतीत हुए दही, छाछ एवं काँजी आदि आसवों एवं अर्कों का तथा भांग, नागफेन, धतूरा, पोस्त का छिलका, चरस और गांजा आदि नशीले पदार्थों का स्वयं सेवन किया हो, कराया हो या सेवन करने वालों की अनुमोदना की हो तथा अन्य और भी जो अतिचार-अनाचार जन्य दोष लगे हों-**तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

हे करुणा के सागर! मूलगुणों के अन्तर्गत मांस त्याग व्रत में चमड़े के बेल्ट, पर्स, जूता-चप्पल, घड़ी का पट्टा आदि का स्पर्श हो गया हो या चमड़े से आच्छादित अथवा स्पर्शित हींग, घी, तेल एवं जल आदि का, अशोधित भोजन का, जिसमें त्रस जीवों का संदेह हो ऐसे भोजन का, बिना छना हुआ अथवा विधिपूर्वक दुहरे छन्ने (वस्त्र) से नहीं छाना गया घी, दूध, तेल एवं जल आदि का, सड़े और घुने हुए अनाज आदि का, शोधनविधि से अनभिज्ञ साधर्मी या शोधन-विधि से अपरिचित विधर्मी के हाथ से तैयार हुए भोजन का, बासा भोजन का, रात्रि में बने भोजन का, चलित रस पदार्थों का, बिना दो फाड़ किये काजू, पुरानी मूंगफली, सेमफली एवं भिंडी आदि का और अमर्यादित दूध, दही तथा छाछ आदि पदार्थों का स्वयं सेवन किया हो, कराया हो या करते हुए की अनुमोदना की हो, तज्जन्य अन्य जो भी अतिचार-अनाचार दोष लगे हों- **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे परमपिता परमात्मा! मूलगुणों के अन्तर्गत मधुत्याग व्रत में औषधि के निमित्त मधु का, फूलों के रसों का एवं

गुलकन्द आदि का स्वयं सेवन किया हो, कराया हो, करते हुए की अनुमोदना की हो, तज्जन्य अन्य भी अतिचार-अनाचार दोष लगे हों- **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे नित्य निरंजन देव! मूलगुणों के अन्तर्गत जीवदया व्रत पालन में प्रमाद किया हो, अज्ञान रखा हो, उपेक्षा की हो, बिना प्रयोजन जीवों को सताया हो तथा अंगोपांग छेदन किये हों, कराये हों या अनुमोदना की हो, तज्जन्य जो भी दोष लगे हों - **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

जुआ, मांस, मदिरा, शिकार, वेश्यागमन, चोरी और परस्त्री सेवन-इन सप्तव्यसन सेवन में जो पाप लगा हो- **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

देव दर्शन-पूजन, साधु उपासना-वैयावृत्ति, स्वाध्याय, संयम पालन, इच्छायें सीमित करना और अर्जित संपत्ति का सदुपयोग (दान देना) इन षडावश्यक पालन में अतिचारपूर्वक जो दोष लगे हों - **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

इष्टवियोग, अनिष्ट संयोग, पीड़ा चिंतन और निदान- ये चार आर्तध्यान। हिंसानंद, मृषानंद, चौर्यानंद और

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

परिग्रहानंद - ये चार रौद्रध्यान द्वारा जो पाप लगे हों- **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

राजकथा, चोरकथा, स्त्रीकथा और भोजनकथा करने से जो पाप लगे हों- **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

जीवों को सताने वाला दुष्ट मन, दुष्ट वचन और दुष्ट काय - ये तीन दण्ड, माया, मिथ्या और निदान तीन शल्य और शब्द गारव, ऋद्धि गारव और सात गारव द्वारा जो पाप लगे हों - **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

मिथ्यादर्शन, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग - इन पाँच आस्रवों द्वारा जो पाप बन्ध हुआ हो - **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

आहार, भय, मैथुन और परिग्रह - इन चार संज्ञाओं के द्वारा जो पाप बन्ध हुआ हो - **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

इहलोकभय, परलोकभय, मरणभय, वेदनाभय, अगुप्तिभय, अरक्षाभय (अत्राणभय) और अकस्मात् सप्त भयों के द्वारा जो पापबन्ध हुआ हो- **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

स्थूल हिंसा विरति व्रत का पालन करते हुए जीवों को

मारा हो, बांधा हो, अंगोपांग छेदे हों, अधिक बोझ लादा हो एवं अन्नपान का निरोध किया हो, इत्यादि अनेक दोष कृत-कारित-अनुमोदना से किये हों - **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

स्थूल असत्य विरति व्रत का पालन करते हुए मिथ्योपदेश देने से, एकान्त में कही हुई बात को प्रगट कर देने से, झूठा लेख लिखने से तथा किसी भी चेष्टा से अभिप्राय समझ कर भेद प्रकट कर देने से एवं पर का धन अपहरण करने से जो दो मन-वचन-काय एवं कृत-कारित-अनुमोदना से लगे हों- **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

स्थूल चौर्य विरति व्रत के पालन करने में चोर द्वारा चुराया हुआ द्रव्य ग्रहण किया हो, राज्य के विरुद्ध कार्य किया हो, धरोहर हरण करने के भाव किये हों, तौलने के बाँट कमती या बढ़ती रखे हों और अधिक कीमती वस्तु में अल्प कीमती वस्तु मिलाकर बेची हो एवं मन, वचन, काय एवं कृत-कारित-अनुमोदना से, चोरी का प्रयोग बतलाने से जो दोष लगे हों- **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

स्थूल अब्रह्म विरति व्रत पालन करने में व्यभिचारिणी

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

स्त्री के साथ आने-जाने का व्यवहार रखा हो, कुमारी, विधवा एवं सधवा आदि अपरिगृहीत स्त्रियों के साथ आने-जाने या लेन-देन का व्यवहार रखा हो, काम सेवन के अंगों को छोड़कर दूसरे अंगों से कुचेष्टाएँ की हों, काम के तीव्र वेग से वीभत्स विचार बने हों और मन, वचन, काय और कृत-कारित-अनुमोदना से अन्य के पुत्र-पुत्रियों का विवाह किया हो, इस प्रकार जो भी दोष लगे हों- **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

स्थूल परिग्रह-परिमाण व्रत में मन, वचन, काय एवं कृत-कारित-अनुमोदना से जमीन और मकान आदिक के प्रमाण का उल्लंघन किया हो, गाय, बैल आदि धन, अनाज आदि धान्य, दासी-दास, चांदी-सोना, वस्त्र एवं बर्तन आदि के प्रमाण का उल्लंघन किया हो, तज्जन्य जो भी दोष लगे हों- **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

दिग्व्रत, देशव्रत, अनर्थदण्ड विरति व्रत-ये तीन गुणव्रत और भोग परिणाम व्रत, परिभोग परिमाणव्रत, अतिथि संविभाग व्रत, समाधि मरणव्रत, ये चार शिक्षाव्रत रूप बारह व्रतों में जो दोष लगे हों-**तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

पाँच इन्द्रियों और मन को वश में न करने से जो पाप लगे हों - **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

मोह के वशीभूत होकर अनेक प्रकार के उत्तमोत्तम् वस्त्र एवं स्त्रियों को आकर्षित करने वाला शरीर का श्रृंगार किया हो, राग के उद्रेक से युक्त हँसी में अशिष्ट वचनों का प्रयोग किया हो और परस्पर प्रीति से रहने वालों के बीच में द्वेष किया हो, तज्जन्य जो दोष लगे हों- **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

तप और स्वाध्याय से हीन असम्बद्ध प्रलाप करने में, अन्यथा पढ़ने-पढ़ाने से एवं अन्यथा ग्रहण (सुनने) करने से जो दोष लगे हों- **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

मुनि, आर्यिका, श्रावक और श्राविका की किसी भी प्रकार से निन्दा की हो, कराई हो, सुनी हो, सुनाई हो इससे जो पाप लगे हों - **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

साधुओं वा साधर्मियों से कटु वचन बोला हो एवं आहार दान देने में प्रमाद करने से जो दोष लगे हों - **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

देव-शास्त्र-गुरु की अविनय एवं आसादना से जो पाप लगे हों - **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

पाश्चात्य वेशभूषा का उपयोग कर, टी.वी. आदि देखकर एवं उपन्यास आदि पढ़कर शील में जो दोष लगे हों - **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

उच्च कुलों को गर्हित कुल बनाने में कृत-कारित-अनुमोदना से सहयोग देने में जो पाप लगे हों- **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

चलने-फिरने, शरीर को हिलने-हिलाने, उठने-बैठाने, छींकने-खांसने, सोने, जागने, जम्हाई लेने और मार्ग चलने-चलाने में देखे, बिना देखे तथा जाने-अनजाने में जो दोष लगे हों- **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

किसी भी जीव को मैंने दबा दिया हो, कुचल दिया हो, घुमा दिया हो, भयभीत कर दिया हो, त्रास दिया हो, वेदना पहुँचाई हो, छेदन-भेदन कर दिया हो अथवा अन्य किसी प्रकार से भी कष्ट पहुँचाया हो- **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हे प्रभो! मेरे लिए जाने-अनजाने में और जो कोई दोष लगे हों - **तस्स मिच्छा मे दुक्कड़ं।**

हा दुट्ठकयं हा दुट्ठचिंतियं, भासियं च हा दुट्ठं।

अन्तो अन्तो डज्झमि पच्छत्तावेण वेयंतो।।

हाय-हाय! मैंने दुष्टकर्म किए, मैंने दुष्ट कर्मों का बार-बार चिन्तवन किया, मैंने दुष्ट मर्म-भेदक वचन कहे-इस प्रकार मन, वचन और काय की दुष्टता से मैंने अत्यन्त कुत्सित कर्म किये। उन कर्मों का अब मुझे पश्चाताप है।

हे प्रभु! मेरा किसी भी जीव के प्रति राग नहीं है, द्वेष नहीं है, बैर नहीं है तथा क्रोध, मान, माया, लोभ नहीं है, अपितु सर्व जीवों के प्रति उत्तम क्षमा भाव है।

हे प्रभु! जब तक मोक्षपद की प्राप्ति न हो तब तक भव-भव में मुझे शास्त्रों के पठन-पाठन का अभ्यास, जिनेन्द्र पूजा, निरन्तर श्रेष्ठ पुरुषों की संगति, सच्चरित्र सम्पन्न पुरुषों के गुणों की चर्चा, दूसरों के दोष कहने में मौन, सभी प्राणियों के प्रति मैत्री और हितकारी वचन एवं आत्मकल्याण की भावना (प्रतीति) ये सब वस्तुएँ प्राप्त होती रहें।

हे जिनेन्द्र देव! मुझे जब तक मोक्ष की प्राप्ति न हो, तब तक आपके चरण मेरे हृदय में और मेरा हृदय आपके चरणों में लीन रहे।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

हे भगवन्! मेरे दु:खों का क्षय हो, कर्मों का नाश हो, रत्नत्रय की प्राप्ति हो, शुभगति हो, सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो, समाधिमरण हो और श्री जिनेन्द्र के गुणों की प्राप्ति हो-ऐसी मेरी भावना है, ऐसी मेरी भावना है, ऐसी मेरी भावना है।

(कायोत्सर्ग करें)

दोहा- प्रतिक्रमण हमने किया, हुई हो कोई भूल।
क्षमा दोष होवें 'विशद', पाएँ शिव का कूल॥

(इसके बाद क्षमा वन्दना बोलें)

क्षमा वंदना

क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा शांति का दाता है।
क्षमा के भाव से प्राणी, 'विशद' मुक्ति को पाता है॥

क्षमा करता सकल जन को, क्षमा करना सभी मुझको।
अभी छदमस्थ हूँ मैं भी, नहीं है ज्ञान कुछ मुझको॥
रहे मैत्री सभी जन से, किसी से बैर न मेरा।
हृदय में भावना मेरी, किसी से हो नहीं फेरा॥

क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा ही जग का त्राता है।
क्षमा के भाव से प्राणी, 'विशद' मुक्ति को पाता है॥

पाप का कर सकें छेदन, रहे यह भाव में वेदन।
क्षमा उनसे भी चाहूँगा, मेरे हाथों हुए भेदन॥
त्याग दूँ दोष इस जग के, यही है भावना मेरी।
पटे खाई हृदय की जो, बनी हो पूर्व से तेरी॥
क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा समता को लाता है।
क्षमा के भाव से प्राणी, 'विशद' मुक्ति को पाता है॥

दया मय भाव हो जावें, हृदय करुणा से भर जावे।
रहे भावों में शीतलता, कभी भी क्रोध न आवे॥
क्षमा की तरणी बह जावे, सदा मैं भाव करता हूँ।
क्षमा भूषण है तन मन का, उसे मैं आप धरता हूँ॥
क्षमा करना क्षमा करना क्षमा उर में समाता है।
क्षमा के भाव से प्राणी, 'विशद' मुक्ति को पाता है॥

कभी जाने या अनजाने, हुए हों दोष जो मेरे।
क्षमा हमको सभी करना, बड़े उपकार हों तेरे॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

वीर का धर्म ये कहता, हृदय में शांति तुम धरना।
क्षमा धारण 'विशद' दिल में कि अर्पण प्राण तुम करना॥
क्षमा करना क्षमा करना, क्षमा को धर्म गाता है।
क्षमा के भाव से प्राणी, 'विशद' मुक्ति को पाता है॥

सोलह कारण भावना

दोहा- सोलह कारण भावना, विशद भाव से भाय।
तीर्थंकर पदवी लहे, मोक्ष महाफल पाय॥

दर्शन विशुद्धि भावना

मोह तिमिर से आच्छादित है, तीन लोक सारा।
काल अनादी से भटके हैं, मिथ्या भ्रम द्वारा॥
कभी नरक नर सुर गति पायी, पशुगति में भटके।
राग-द्वेष मद मोह प्राप्त कर, विषयों में अटके॥
सप्त तत्त्व छह द्रव्य गुणों में, श्रद्धा उर धरना।
मिथ्या भाव छोड़कर सम्यक्, रुची प्राप्त करना॥
शंकादि दोषों को तजकर, भेद ज्ञान पाना।
दरश विशुद्धी गुणीजनों ने, या को ही माना॥1॥

विनय सम्पन्न भावना

अहंकार दुर्गति का कारण, सद्गति का नाशी।
निज के गुण को हरने वाला, दुर्गुण की राशि॥
मद की दम को दमन करें जो, बनकर श्रद्धानी।
नम्र भाव धारण करते हैं, जग में सद्ज्ञानी॥
उच्च गोत्र का कारण बन्धू, मृदुल भाव गाया।
पुण्य पुरुष होता है जिसने, विनय भाव पाया॥
'विशद' विनय सम्पन्न भावना, भाव सहित गाये।
तीर्थंकर सा पद पाकर के, सिद्ध शिला जाये॥2॥

अनतिचार शीलव्रत भावना

नर भाव पाया रत्न अमौलिक, विषयों में खोता।
भोगों में अनुराग लगा जो, अतीचार होता॥
अतीचार से रहित व्रतों, को पाले जो कोई।
प्रकट होय आतम निधि उसकी, सदियों से खोई॥
कृत-कारित अरु अनुमोदन से, मन-वच-तन द्वारा।
नव कोटि से शील व्रतों का, पालन हो प्यारा॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

सोलहकारण शुभम् भावना, भाव सहित भावे।
अनतिचार व्रत शील से अपना, जीवन महकावे।।3।।

अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग भावना

ज्ञानावरणी कर्म ने भाई, जग में भरमाया।
सम्यक् ज्ञान हृदय में मेरे जाग नहीं पाया।।
सम्यक् श्रद्धा के द्वारा अब, विशद ज्ञान पाना।
ज्ञाता बनकर ज्ञान के द्वारा, चित् स्वरूप ध्याना।।
अजर अमर पद पाने हेतू, ज्ञानामृत पाना।
ॐकार मय जिनवाणी के, छन्दों को गाना।।
ज्ञान योग होता अभीक्ष्ण ये भावों से ध्याना।
'विशद' ज्ञान के द्वारा भाई, शिवपुर को जाना।।4।।

संवेग भावना

है संसार अपार असीमित, पार नहीं पाया।
काल अनादी से प्राणी यह, जग में भरमाया।।
भय से हो भयभीत जानकर, इस जग की माया।
मंगलमय संवेग भाव बस, ये ही कहलाया।।

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण को, सम्यक् धर्म कहा।
मोक्ष महल का सम्यक् साधन, अनुपम यही रहा।।
धर्म और उसके फल में जो, हर्ष भाव आवे।
सु संवेग भाव शास्त्रों में, ये ही कहलावे।।5।।

शक्तितस्त्याग भावना

काल अनादी से यह प्राणी, तन का दास रहा।
साथ निभायेगा यह मेरा, ये विश्वास रहा।।
प्यास बढ़ाता है पीने से, जैसे जल खारा।
मृगतृष्णा बढ़ती रहती है, मिले न जल धारा।।
पल-पल करके नर जीवन का, समय निकल जाता।
इन्द्रिय रोध किये बिन भाई, हो ना सुख साता।।
इच्छाओं का दमन करे फिर, महामंत्र जपना।
यथा शक्ति तप करना भाई, शक्तिसः तपना।।6।।

शक्तितस्तप भावना

राग आग में जलकर अब तक, यूँ ही काल गया।
परिणत हुए भोग विषयों को, माना नया-नया।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

निज निधि को खोकर के अब तक, पर पदार्थ पाये,
प्रकट दिखाई देते हैं पर, हमने अपनाये॥
पर परिणत से बचकर हमको, निज निधि को पाना।
छोड़ विकल्पों को अब सारे, निज को ही ध्याना॥
यथाशक्ति जो त्याग करे वह, मोक्ष मार्ग जानो।
जैनागम में त्याग शक्तिसः, इसी तरह मानो॥7॥

साधु समाधि भावना

काल अनादी से मिथ्यावश, जन्म मरण पाया।
निज शक्ती को भूल जगत् में, प्राणी भरमाया॥
आधि व्याधि अरु पद उपाधि में, नर जीवन खोया।
मोह की मदिरा पीकर भारी, कर्म बीज बोया॥
जन्म मरण होता है तन का, चेतन है ज्ञाता।
कर्म करेगा जैसा प्राणी, वैसा फल पाता॥
चेतन का ना अंत है कोई, ना ही आदी है।
श्रेष्ठ मरण औ सत् अनुभूती, साधु समाधि है॥8॥

वैय्यावृत्ती भावना

स्वारथ का संसार है भाई, सारा का सारा।
लालच की बहती है जग में, बड़ी तीव्र धारा॥
पर उपकार को भूल रहे हैं, इस जग के प्राणी।
पर में निज उपकार छुपा है, कहती जिनवाणी॥
साधक करे साधना अपनी, संयम के द्वारा।
रत्नत्रय अपने जीवन से, जिनको है प्यारा॥
विघ्न साधना में कोई भी, उनकी आ जावे।
वैय्यावृत्ती विघ्न दूर करना ही कहलावे॥9॥

अर्हद् भक्ति भावना

चार घातिया कर्मनाशकर, 'विशद' ज्ञान पाये।
समोशरण की सभा में बैठे, अर्हत् कहलाये॥
दिव्य देशना जिनकी पावन, जग में उपकारी।
सुहित हेतु पाते इस जग के, सारे नर-नारी॥
अर्हत् होते हैं इस जग में, सद्गुण के दाता।
अतः सार्व कहलाए भगवन्, भविजन के त्राता॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

हो अनुराग गुणों में उनके, भाव सहित भाई।
अर्हत् भक्ती गुणीजनों ने, इसी तरह गाई॥10॥

आचार्य भक्ति भावना

दर्शन ज्ञान चरित तप साधक, वीर्यचरण धारी।
रत्नत्रय का पालन करते, गुरु पंचाचारी॥
भक्तों के हैं भाग्य विधाता, मुक्ती पद दाता।
शिक्षा-दीक्षा देने वाले, जन-जन के त्राता॥
सत् संयम की इच्छा करके, गुरु के गुण गाते।
भाव सहित वंदन करने को, चरणों में जाते॥
गुरु चरणों की भक्ती जग में, होती सुख दानी।
गुणियों ने आचार्य भक्ति शुभ, इसी तरह मानी॥11॥

बहुश्रुत (उपाध्याय) भक्ति भावना

ग्यारह अंग पूर्व चौदह के, होते जो ज्ञाता।
सम्यक् दर्शन ज्ञान के गुरुवर, होते हैं दाता॥
संतों में जो श्रेष्ठ कहे हैं, समता के धारी।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, ऋषिवर अनगारी॥

करते हैं उपदेश धर्म का, जो मंगलकारी।
संत दिगम्बर और निरम्बर, नीरस आहारी॥
उपाध्याय को जग भोगों से, पूर्ण विरक्ती है।
भाव सहित गुण गाना उनके, बहुश्रुत भक्ती है॥12॥

प्रवचन भक्ति भावना

द्रव्य भाव श्रुत के भावों में, तत्पर जो रहते।
घोर तपस्या करने वाले, परिषह भी सहते॥
चेतन का अनुभव जो करते, निर्मल चित्धारी।
चित् को निर्मल करने वाली, वाणी मनहारी॥
सप्त तत्त्व झंकृत होते हैं, जिनवाणी द्वारा।
दिव्य देशना निःसृत होती, जैसे जलधारा॥
जिस वाणी से जागृत होवे, चेतन शक्ती है।
'विशद' ज्ञान में वर्णित पावन, प्रवचन भक्ती है॥13॥

आवश्यकापरिहाणी भावना

नहीं कभी सत् कर्म किया है, जीवन व्यर्थ गया।
भूले हैं कर्त्तव्य स्वयं के, आती बड़ी दया॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

श्रावक के गुण क्या होते हैं, जाने नहीं कभी।
पाप व्यसन जो होते जग में, करते रहे सभी॥
होते क्या कर्त्तव्य हमारे, उनको पाना है।
व्रत संयम से जीवन अपना, हमें सजाना है॥
कर्त्तव्यों के पालन हेतू, भावों से भरना।
आवश्यका ऽपरिहार भावना, सम्पूरण करना॥14॥

मार्ग प्रभावना भावना

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरण यह, सम्यक् धर्म कहा।
काल अनादी से यह बन्धू, मोक्ष का मार्ग रहा॥
मोक्ष मार्ग पर आगे चलकर, और चलाना है।
मंजिल को जब तक न पाया, बढ़ते जाना है॥
महिमा अगम है जिन शासन की, कैसे उसे कहें।
संयम तप श्रद्धा भक्ती में, हरपल मगन रहें॥
मोक्ष मार्ग औ जैन धर्म की, महिमा जो गाई।
पथ प्रभावना सत् संतों ने, जग में फैलाई॥15॥

प्रवचन वत्सलत्व भावना

गाय का ज्यों बछड़े के प्रति, स्नेह अटल होता।
काय वचन अरु मन से शुभ, अनुराग विमल होता॥

स्वार्थ रहित साधर्मी जन से, जो अनुराग रहा।
श्री जिनेन्द्र ने जैनागम में, ये वात्सल्य कहा॥
द्वेष भाव के द्वारा हमने, कितने कष्ट सहे।
मद माया की लपटों में हम, जलते सदा रहे॥
सदियाँ गुजर गयीं हैं लेकिन, धर्म नहीं पाया।
चेतन की यह भूल रही अरु रही मोह माया॥16॥

दोहा- शब्द अर्थ की भूल को, पढ़ना सुधी सुधार।
पंच परम गुरु के चरण वंदन बारम्बार॥

चौंसठ ऋद्धि भावना

दोहा- तपकर चौंसठ ऋद्धियाँ, पाते हैं ऋषिराज।
करके जिनकी वन्दना, होय सफल सब काज॥

चौपाई

बुद्धि ऋद्धि के भेद बताए, अष्टादश संख्या में गाए॥1॥
केवलज्ञान ऋद्धि के धारी, अनन्त चतुष्टय धर शिवकारी॥2॥
ऋद्धि मनः पर्यय जो पाते, पर के मन की बात बताते॥3॥
अवधिज्ञान ऋद्धी धरज्ञानी, होते जग-जन के कल्याणी॥4॥

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

रत्न कोष्ठ में भिन्न दिखावें, कोष्ठ बुद्धि मुनिवर त्यों पावें।।5।।
एक शब्द को मुनिवर पावें, सर्व ग्रन्थ का सार बतावें।।6।।
संभिन्न संश्रोत ऋद्धी धारी, होते सब ध्वनि के उच्चारी।।7।।
पदानुसारिणी ऋद्धी पावें, पद सुन ग्रन्थ का सार बतावें।।8।।
दूर स्पर्श ऋद्धि मुनि पाएँ, दूर स्पर्श की शक्ति जगाएँ।।9।।
दूर श्रवण ऋद्धी धर जानो, दूर वस्तु के श्रोता मानो।।10।।
दूरास्वाद ऋद्धि प्रगटावें, स्वाद दूर वस्तू का पावें।।11।।
दूर घ्राण ऋद्धी जो पावें, दूर घ्राण शक्ति जगावें।।12।।
दूरावलोकन ऋद्धि जगावें, दूर वस्तु अवलोकन पावें ।।13।।
प्रज्ञा श्रमण ऋद्धि के धारी, सूक्ष्मत्व के रहे प्रचारी।।14।।
ऋषि प्रत्येक बुद्धि के धारी, संयम ज्ञान निरूपणकारी ।।15।।
दश पूर्वित्व ऋद्धि धर ज्ञानी, साधू कहे अटल श्रद्धानी।।16।।
ऋषी चतुर्दश पूर्वी जानो, अंग पूर्व श्रुतधारी मानो।।17।।
ऋषी प्रवादित्व ऋद्धी पाएँ, वाद कुशल की शक्ति जगाएँ।।18।।
अष्टांग महानिमित्त के ज्ञाता, अष्ट निमित्त के अर्थ प्रदाता।।19।।
जंघा चारण ऋद्धि जगावें, जांघ उठाए बिना चल जावें।।20।।
अग्नि शिखा ऋद्धी प्रगटावें, अग्नि शिखा पर चलते जावें।।21।।

श्रेणी चारण ऋद्धी पावें, श्रेणि गमन की सिद्धि जगावें।।22।।
फल चारण ऋद्धी मुनि पाएँ, फल पे गमन की शक्ती पाएँ।।23।।
जल चारण शुभ ऋद्धि जगावें, तन्तू पर मुनि चलते जावें।।24।।
पुष्प चारण ऋद्धि मुनि पाते, फूल पे हल्के हो चल जाते।।25।।
बीजांकुर धारी ऋषि ज्ञानी, उन पर चले नहीं हो हानी।।26।।
नभ चारण ऋद्धी के धारी, ऋषिवर होते गगन विहारी।।27।।
अणिमा ऋद्धी जो मुनि पावें, अणु सम अपनी देह बनावे।।28।।
महिमा ऋद्धी जो ऋषि पाते, मेरु समान उच्च हो जाते।।29।।
ऋषिवर लघिमा ऋद्धि जगावें, वायु सम हल्के हो जावें।।30।।
मुनिवर गरिमा ऋद्धी धारी, देह बनाते हैं जो भारी।।31।।
मनबल ऋद्धी धर अनगारी, द्वादशांग श्रुत चिन्तनकारी।।32।।
ऋषी वचन बल ऋद्धी पावें, सब श्रुत पाठ की शक्ति जगावें।।33।।
ऋषी काय बल पाएँ ऋद्धी, तन में होवे बल की वृद्धी।।34।।
कामरूप ऋद्धी के धारी, रूप बनावें कई प्रकारी।।35।।
ऋषिवर ऋद्धि वशित्व जगावें, प्राणी सब वश में हो जावें।।36।।
ऋषि ईशत्व ऋद्धि जो पावें, वे त्रैलोक्य अधिपति हो जावें।।37।।
ऋषि प्राकम्य ऋद्धि प्रगटावें, जल पे गमन की शक्ति जगावें।।38।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

अन्तर्धान ऋद्धि ऋषि पाते, क्षण में ही अदृश हो जाते।।39।।
आप्ति ऋद्धि धर भूपर होवे, सूर्य चंद को भी जो छूवें।।40।।
अप्रतिघात ऋद्धि जो पावें, घुसकर गिरि के बाहर जावें।।41।।
दीप्त ऋद्धि जो मुनिवर पावें, देह कांति ऋषिवर विकशावें।।42।।
तप्त ऋद्धि ऋषिवर प्रगटाते, उनके धातू मल छय जाते।।43।।
महा उग्र तप ऋद्धी पावें, घोर सुतप की शक्ति जगावें।।44।।
ऋद्धि घोर तप पाने वाले, करें घोर तप ऋषी निराले।।45।।
घोर पराक्रम ऋद्धि जगावें, भू को ऊपर ऋषी उठावें।।46।।
महोपवास की शक्ति प्रदायी, परम घोर तप ऋद्धि बताई।।47।।
घोर ब्रह्मचर्य तप धर होवें, स्वप्न में भी ब्रह्मचर्य ना खोवें।।48।।
आमर्षोषधि ऋद्धी धारी, जन-जन के हों रोग निवारी।।49।।
सर्वौषधि ऋद्धी मुनि पावें, वायु स्पर्श से रोग बिलावें।।50।।
आशीर्विष ऋद्धी प्रगटावें, वचन बोलते जहर चढ़ावें।।51।।
आशीर्विष औषधि के धारी, जिनके वचन हैं रोग निवारी।।52।।
दृष्टी विष ऋद्धी जो पाते, दृष्टि डालते जहर चढ़ाते।।53।।
दृष्टी निर्विष ऋद्धी पावें, दृष्टि डालते रोग नशावें।।54।।
क्ष्वेलौषधि धर का कफ आदी, का स्पर्श नशाए व्याधी।।55।।

विडौषधि ऋषि का मल जानो, रोग नशाए ऐसा मानो।।56।।
जल्लौषधि ऋद्धी के धारी, का जल्ल गाया रोग निवारी।।57।।
मल्लौषधि ऋद्धी ऋषि पावें, उनका मल सब रोग नशावे।।58।।
क्षीर स्त्रावि ऋद्धी प्रगटावें, नीरस भोजन क्षीर सा पावें।।59।।
घृत स्त्रावी रस ऋद्धी भाई, व्रत सम भोजन हो सुखदायी।।60।।
कर में मधु स्त्रावी के जानो, भोजन मधु सम होवे मानो।।61।।
अमृत स्त्रावि ऋद्धी जगावें, अमृत सा भोजन ऋषि पावें।।62।।
अक्षीण संवास ऋद्धी पावें, चक्रवर्ति की सेन्य समावें।।63।।
अक्षीण महानस ऋद्धि उपावें, सेना चक्री की जिम जावे।।64।।

चौंसठ ऋद्धि का फल

उत्तम संयम तप जो पावें, श्रेष्ठ ऋद्धियाँ ऋषी जगावें।
चौंसठ श्रेष्ठ ऋद्धियाँ ध्याएँ, मन में अतिशय शांती पाएँ।।
कही ऋद्धियाँ महिमा शाली, भक्ति भक्त की जाय ना खाली।
राक्षस भूत प्रेत भी आवे, बाधा उसकी भी नश जावे।।
अंधा यदि ऋद्धी को ध्यावे, उसको भी दिखने लग जावे।
बहरे हो सुनने लग जाए, पागल का पागलपन जाए।।

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18

दुखिया अपना दु:ख मिटाए, रोग ना रोगी का रह पाए।
निर्धन जीवन में धन पाएं, अज्ञानी सद्ज्ञान जगाएं॥
'विशद' ऋद्धियाँ हम भी ध्याएँ, सुख शांती सौभाग्य जगाएँ।
मनोकामना पूरी होवे, मन की सब का कालुषता खोवे॥
दोहा- ऋद्धीधर ऋषिराज को, ध्याते हैं जो लोग।
ऋद्धि सिद्धि समृद्धि पा, पाते शिव सुखभोग॥
जाप्य:- *ॐ ह्रीं चतु:षष्ठि ऋद्धिधारक सर्व ऋषिवरेभ्यो नम:।*

E:\Final Book 2018\new folder 3\vishad bhakti aradhna\ narnol final\1st\ 1-6-18